kanwhizztimes

@kanwhizztimes lucknow

@kanwhizztimes

www.kanwhizztimes.com

# कैनविज टाइम्स

सिर्फ सच

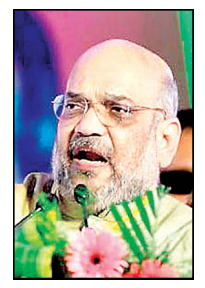

❒ वर्ष-13 ❒ अंक-322 ❒ रविवार, 22 दिसम्बर 2024 ❒ नगर संस्करण ❒ लखनऊ से प्रकाशित एवं दिल्ली, पंजाब और उत्तराखंड में प्रसारित ❒ मूल्य- ₹ 3.00 ❒ पृष्ठ-12




पूर्वोत्तर क्षेत्र लंबे समय तक केन्द्र की सरकारों के लिए सिर्फ भाषणों का मुद्दा रहा था, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने विज़न और संवेदनशीलता के साथ इस क्षेत्र को विकास के केन्द्र में लाकर खड़ा कर दिया जो समूचे पूर्वोत्तर के लिए युगांतकारी है। **अमित शाह**


संयुक्त राष्ट्र ने मनाया पहला विश्व ध्यान दिवस 11

धामी से मिले जनप्रतिनिधि, समस्याओं के त्वरित समाधान के दिए निर्देश 12


## संक्षेप

### राष्ट्रपति ने लोकसभा का सत्रावसान किया

**नयी दिल्ली।** राष्ट्रपति द्रौपदी ने संसद का शीतकालीन सत्र संपन्न होने के बाद लोकसभा का सत्रावसान कर दिया है। लोकसभा सचिवालय ने शनिवार को बताया कि राष्ट्रपति ने शनिवार को लोकसभा का सत्रावसान कर दिया है। लोकसभा का सत्र 25 नवंबर को शुरू हुआ था और शुक्रवार यानी 20 दिसंबर को इसकी कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गयी थी।

### केजरीवाल ने शुरू की अंबेडकर स्कॉलरशिप योजना

**नई दिल्ली।** आम आदमी पार्टी के कन्वेनर अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को डॉ. अंबेडकर स्कॉलरशिप योजना का ऐलान किया। केजरीवाल ने कहा कि दलित परिवार के बच्चे की विदेशी यूनिवर्सिटी में पढ़ाई और आने-जाने का खर्चा दिल्ली सरकार उठाएगी। अरविंद केजरीवाल ने कहा, ''दलित समाज का कोई बच्चा पैसे की कमी की वजह से उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित ना रह जाए। डॉ. अंबेडकर स्कॉलरशिप का ऐलान करता हूं। दलित का कोई बच्चा दुनिया की किसी टॉप यूनिवर्सिटी में पढ़ना चहता है तो वह सिर्फ उस यूनिवर्सिटी में एडमिशन ले ले, पढ़ाई का खर्चा और आने-जाने का सारा खर्चा दिल्ली सरकार वहन करेगी। उन्होंने कहा, ''अंबेडकर ने विदेशों में पढ़ाई कर डबल पीएचडी की है। आजाद भारत में किसी बच्चे को फॉरेन यूनिवर्सिटी में पढ़ने में दिक्कत नहीं होनी चाहिए। सरकारी अफसरों के ऊपर भी यह योजना लागू होगी। भाजपा और अमित शाह ने जो अंबेडकर का मजाक उड़ाया उसका जवाब हम इस योजना से दे रहे हैं। दिल्ली विधानसभा का मौजूदा कार्यकाल 23 फरवरी 2025 को खत्म हो रहा है। अगले दो महीने में चुनाव हो सकते हैं। पिछला विधानसभा चुनाव फरवरी 2020 में हुआ था, जिसमें आम आदमी पार्टी ने पूर्ण बहुमत हासिल किया था और 70 में से 62 सीटें जीती थीं।

### बसपा 24 को सभी जिलों में देगी धरनाः मायावती

**लखनऊ।** बसपा सुप्रीमो मायावती ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहब डा. भीमराव अंबेडकर का किए गए अपमान के खिलाफ 24 दिसंबर को देशव्यापी आंदोलन करने का फैसला किया है। बसपा इस दिन प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों पर शांतिपूर्ण धरना-प्रदर्शन करेगी। बसपा सुप्रीमो ने शनिवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखते हुए कहा है कि देश के दलित, वंचित व अन्य उपेक्षितों के आत्म-सम्मान व मानवीय हकूक के लिए संविधान के रूप में असली ग्रंथ के रचयिता डा. भीमराव अंबेडकर भगवान की तरह परमपूजनीय हैं। अमित शाह द्वारा उनका किया गया अनादर लोगों के दिलों को आहत पहुंचाता है। ऐसे महापुरुष को लेकर संसद में इनके द्वारा कहे गए शब्दों से पूरे देश में सर्वसमाज के लोग काफी उद्वेलित, आक्रोशित व आंदोलित हैं।

# भ्रष्टाचारियों को सलाखों के पीछे फेंका जा रहा

## केजीएमयू के स्थापना दिवस पर बोले सीएम योगी

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की डबल इंजन सरकार ने भ्रष्टाचार पर कड़ा प्रहार किया है। नियमों को कड़ा किया जा रहा है। भ्रष्टाचारियों को सलाखों के पीछे फेंका जा रहा है। ताकि लोग गड़बड़ियां करने की हिम्मत न जुटा सकें। यह बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कही।

सीएम योगी शनिवार को केजीएमयू के 120वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे। अटल बिहारी वाजपेई सांइटिफिक कन्वेंशन सेंटर में समारोह हुआ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सरकार के पास पैसे की कोई कमी नहीं है। मेडिकल संस्थान नए विभाग खोलें। नई तकनीक विकसित करें। लेकिन जो भी योजना शुरू करें उसे समय पर जरूर पूरा करें। उन्होंने कहा कि पहले लोग सरकार से पैसे तो ले लेते थे लेकिन काम नहीं करते थे। बजट को पीएलए अकाउंट में डाल देते थे। जब भाजपा सरकार बनी तो खजाना खाली था। हमने पीएलए अकाउंट में जमा पैसा विभ गों से मंगाया। उससे कर्मचारियों का वेतन दिया। किसानों का कर्ज माफ किया। इसके बाद हमने सभी विभागों को



जनता से जुड़े मुद्दे को समय पर पूरा करने के निर्देश दिए। इससे जनता का भरोसा बढ़ा। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश की तरक्की के लिए सभी विभाग मिलकर काम करें। खासकर चिकित्सा के क्षेत्र में। आईआईटी, यूपीटीयू, पीजीआई, केजीएमयू जैसे संस्थानों को मिलकर काम करने की जरूरत है। इससे बेहतर परिणाम सामने आएंगे। हमे अब तेजी से आगे बढ़ने की आदत डालनी होगी। गंभीर बीमारी तेजी से बढ़ रही हैं। इसके लिए काफी हद तक हमारी जीवनशैली भी जिम्मेदार है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हर साल हजारों मरीजों की मौत अंग प्रत्यारोपण न होने से हो रही है। अंगदान को बढ़ावा दें। जागरुक करें। डॉक्टर ब्रेन डेड मरीज के परिवारीजनों को अंगदान के लिए प्रेरित करें। ताकि जरूरतमंद मरीजों को नया जीवन मिल सके। बढ़ते सड़क हादसों पर मुख्यमंत्री ने चिंता ● शेष पेज 11 पर

### सफलता की नई कहानी लिखने का हर महिला में है सामर्थ्य : सीएम

**गोरखपुर।** मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हर महिला में सफलता की नई कहानी लिखने का सामर्थ्य है। महिलाओं के लिए काम की भी कोई कमी नहीं है। जरूरत एक फील्ड का चयन कर उसके अनुरूप प्रशिक्षण लेकर खुद को तैयार करने और परिश्रम व पूरी तन्मयता से आगे बढ़ने की है। सीएम योगी शनिवार को योगिराज बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह में राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एसआरएलएम) द्वारा संचालित श्री बाबा गोरखनाथ कृपा दुग्ध उत्पादक संस्था और इस संस्था द्वारा गोरखपुर मंडल के अंतर्गत सात दुग्ध अवशीतन केंद्रों के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने उत्कृष्ट कार्य करने वाली विद्युत सखियों, बीसी सखियों, लखपति दीदियों, नमो ड्रोन दीदियों और बैंक सखियों को प्रमाण ● शेष पेज 11 पर

## चुनाव नियमों में सरकार ने किया बदलाव

# इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड नहीं मांग सकेंगे आम लोग

एजेंसी

नई दिल्ली। सरकार ने सीसीटीवी कैमरा और वेबकास्टिंग फुटेज के साथ-साथ उम्मीदवारों की वीडियो रिकॉर्डिंग जैसे कुछ इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेजों के सार्वजनिक निरीक्षण को रोकने के लिए चुनाव नियम में बदलाव किया है, ताकि उनका दुरुपयोग रोका जा सके। चुनाव आयोग (ईसी) की सिफारिश के आधार पर केंद्रीय कानून मंत्रालय ने शुक्रवार को चुनाव संचालन नियम, 1961 के नियम 93(2)(ए) में संशोधन किया, ताकि सार्वजनिक निरीक्षण के लिए कागजातों या दस्तावेजों के प्रकार को प्रतिबंधित किया जा सके। अब से चुनाव से संबंधित सभी दस्तावेज जनता के लिए उपलब्ध नहीं होंगे।

नियम 93 के अनुसार, चुनाव से संबंधित सभी दस्तावेज सार्वजनिक निरीक्षण के लिए खुले रहेंगे। संशोधन में दस्तावेजों के बाद इन नियमों में निर्दिष्ट अनुसार जोड़ा गया है। कानून मंत्रालय और





चुनाव आयोग के अधिकारियों ने अलग-अलग बताया कि संशोधन के पीछे एक अदालती मामला ट्रिगर था। इस बारे में चुनाव आयोग के सूत्रों ने बताया कि उम्मीदवार के पास पहले से ही सभी दस्तावेजों और कागजात तक पहुंच है। इस संबंध में नियमों में कोई संशोधन नहीं किया गया है। इस अस्पष्टता को दूर करने और मतदान की गोपनीयता के उल्लंघन और मतदान केंद्र के अंदर सीसीटीवी फुटेज के एक व्यक्ति द्वारा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करने के संभावित दुरुपयोग के गंभीर मुद्दे पर विचार करने के लिए मतदान केंद्र के अंदर सीसीटीवी फुटेज के ● शेष पेज 11 पर

# संभल में दूसरे दिन भी एएसआई का सर्वे जारी

एजेंसी

❒ कल्कि विष्णु मंदिर पहुंची टीम, एक दिन पहले संभल में 19 कूप और 5 तीर्थ स्थलों का किया था सर्वे

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश के संभल में लगातार दूसरे दिन शनिवार को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) टीम का सर्वे जारी रहा। एएसआई टीम आज सुबह सबसे पहले कल्कि विष्णु मंदिर पहुंची। इसके बाद टीम ने मंदिर के पास स्थित कृष्ण कूप का निरीक्षण किया। ऊंची-ऊंची दीवारों से घिरा हुआ कृष्ण कूप विवादित जामा मस्जिद से कुछ दूरी पर स्थित है। कूप के अंदर झाड़ियां और गंदगी फैली होने के कारण नगर पालिका की टीम के द्वारा साफ-सफाई की जा रही है।

संभल के जिलाधिकारी डॉ. राजेंद्र पैंसिया ने एएसआई को पत्र लिखकर जिले में स्थित प्राचीन तीर्थ स्थलों और कूपों का निरीक्षण करने की मांग की थी। इसके बाद शुक्रवार को पहले दिन एएसआई टीम ने संभल में 19 कूप और 5 तीर्थ स्थलों का सर्वे किया था। यह सर्वे कार्य सुबह 06 से शाम 4 बजे तक चला था। इस दौरान टीम ने खग्गू सराय स्थित प्राचीन शिव मंदिर और वहां परिसर में बने कुंए की कार्बन डेटिंग के लिए नमूने भी लिए थे। एएसआई टीम ने शुक्रवार को संभल में ग्राम आलम सराय स्थित चतुर्मुख ब्रह्म कूप, दुर्गा कॉलोनी में अमृत कूप मंदिर, मोहल्ला हल्लू सराय स्थित अशोक कूप, मोहल्ला कोट पूर्वी में सर्थलेश्वर मंदिर स्थित सप्तसागर कूप, हयातनगर में बलि कूप कूचे वाली गली स्थित धर्म कूप, ● शेष पेज 11 पर

# 'किसी प्रधानमंत्री को यहां आने में 4 दशक लग गए...'

## कुवैत में प्रवासी भारतीयों से बोले पीएम मोदी

एजेंसी

कुवैत सिटी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कुवैत की यात्रा पर हैं, इस दौरान उन्होंने प्रवासी भारतीयों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आप सभी को देखकर ऐसा लग रहा है कि जैसे मेरे सामने मिनी हिंदुस्तान उमड़ आया है। जहां हर क्षेत्र के मेरे सामने नजर आ रहे हैं, लेकिन सभी के दिल में एक ही गूंज है- भारत माता की जय।।।

कुवैत सिटी में प्रवासी भारतीयों को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि अभी आप क्रिसमस और न्यूईयर की तैयारी कर रहे हैं। मैं आप सभी को क्रिसमस, न्यूईयर और देश के कोने-कोने में मनाए जाने वाले सभी त्योहारों की बधाई देता हूं। आज निजी रूप से मेरे लिए ये पल बहुत खास है, क्योंकि 43 साल यानी 4 दशक से भी ज्यादा समय बाद भारत का कोई प्रधानमंत्री कुवैत आया है। आपको भारत से यहां आना है तो 4 घंटे लगते हैं, लेकिन



किसी पीएम को यहां आने में 4 दशक लग गए। पीएम मोदी ने कहा कि आपमें से कितने ही साथी पीढ़ियों से कुवैत में ही रह रहे हैं, कइयों का यहीं पर जन्म हुआ है, हर साल सैकड़ों भारतीय आपके समूह में जुड़ते जाते हैं, आपने कुवैत के समाज में भारतीयता का तड़का लगाया है, आपने कुवैत के कैनवस पर भारतीयता का रंग भरा है। इसलिए मैं आज यहां सिर्फ आपसे मिलने ही नहीं आया हूं बल्कि आप सभी की उपलब्धियों को सेलिब्रेट करने के लिए आया हूं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि थोड़ी देर पहले ही मेरी यहां काम करने वाले प्रोफ़ेशनल्स से मुलाकात हुई है। आपमें से जो टीचर्स हैं, वो लोग कुवैत की अगली पीढ़ी को मजबूत बनाने में मजबूत कर रहे हैं। जो आर्किटेक्ट हैं वो कुवैत के इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण कर रहे हैं। जब भी मैं कुवैत की लीडरशिप से बात करता हूं तो वो आप सभी की बहुत तारीफ करते हैं। कुवैत के नागरिक भी आप सभी भारतीयों की मेहनत, ईमानदारी और स्किल की वजह से आपका बहुत मान-सम्मान करते हैं।

पीएम मोदी ने कहा कि मुंबई के बाजारों में भी कुवैत की पहचान है, गुजरात से कुवैत के व्यापारियों का संबंध है, पहले भारतीय करेंसी कुवैत में चलती थी। कुवैत की यादों से हमारा वर्तमान जुड़ा है। भारत और कुवैत के नागरिकों ने संकटकाल में भी एक दूसरे की हमेशा मदद की है, कोरोना महामारी के दौरान दोनों देशों ने हर स्तर पर एक दूसरे की मदद की है, जब भारत को सबसे ज्यादा जरूरत पड़ी तो कुवैत ने हिंदुस्तान को लिक्विड ऑक्सीजन की सप्लाई दी। हिज हाईनेस क्राउन प्रिंस ने सभी को आगे आकर काम करने के लिए प्रेरित किया। भातर ने भी कुवैत को वैक्सीन और मेडिकल टीम भेजकर इस संकट से सामना करने का साहस दिया। इसी साल जून में यहां ● शेष पेज 11 पर

# यूपी बोर्डः ड्यूटी के लिये शिक्षकों को विषय कोड बताना होगा

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

❒ प्रधानाचार्यों को शिक्षकों का ब्योरा 23 तक सत्यापन करना होगा

❒ उप्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद के सचिव ने जारी किये निर्देश

लखनऊ। उप्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद ने यूपी बोर्ड परीक्षा और प्रैक्टिकल में ड्यूटी करने वाले शिक्षकों को ब्योरा मांगा है। शिक्षकों की पूरी जानकारी के साथ विषय वार ब्योरा 23 दिसम्बर तक परिषद की वेबसाइट पर स्कूलों के पोर्टल पर ब्योरा अपडेट करना है। परिषद के सचिव ने डीआईओएस को निर्देश जारी किये हैं। डीआईओएस ने सभी माध्यमिक स्कूलों के प्रधानाचार्यों से कहा कि वो अपने-अपने स्कूलों के पोर्टल पर अपलोड शिक्षकों के ब्योरे को दोबारा अपडेट कराएं। ताकि स्कूल छोड़ चुके और दिवंगत शिक्षकों के नाम शामिल न करें। यूपी बोर्ड परीक्षायें 24 फरवरी से 12 मार्च के बीच होनी हैं।

यूपी बोर्ड परीक्षा में परीक्षा केन्द्रों पर केन्द्र व्यवस्थाक, वाह्य केन्द्र व्यास्थापक और कक्ष निरीक्षक और प्रयोगात्मक परीक्षा व मूल्यांकन में परीक्षकों की ड्यूटी लगायी जानी है। इसी को लेकर परिषद के सचिव ने स्कूलों के पोर्टल पर दर्ज शिक्षकों का ब्योरा नए सिरे से सत्यापित करने निर्देश दिये हैं। इसमें नए एवं पुराने शिक्षकों का नाम, जन्मतिथि, नियुक्ति वर्ष और पढ़ाने वाले विषय भरना होगा। शिक्षकों के पढ़ाए जाने वाले विषय का कोड भी दर्ज करना होगा। स्कूलों से डिबार किये गए शिक्षकों को डिबार श्रेणी ● शेष पेज 11 पर





## युवाओं और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स की भागीदारी के लिए डीजीपी ने दिए निर्देश

# महाकुम्भ समेत पूरे प्रदेश में तैनात होंगे 'डिजिटल वॉरियर्स'

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

❒ फ़ेक न्यूज और साइबर अपराध के खिलाफ यूपी पुलिस का अभियान

❒ वर्तमान में 10 लाख नागरिक डिजिटल वॉलंटियर्स और करीब 2 लाख पुलिसकर्मी कम्युनिटी ग्रुप से हैं जुड़े

❒ प्रदेश के गांव, मोहल्ले और स्थानीय कस्बे के लोगों को भी डिजिटल वॉलंटियर्स से जोड़ा गया

प्रयागराज/लखनऊ। महाकुम्भ 2025 में फ़ेक न्यूज के खिलाफ अभियान चलाने, साइबर अपराध के प्रति जागरूकता एवं पुलिस के सराहनीय कार्यों को सोशल मीडिया के विभिन प्लेटफार्म पर प्रसारित करने के लिए 'डिजिटल वॉरियर्स' को तैनात किया गया है। इसके लिए युवा पीढ़ी के सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर्स एवं कॉलेज के छात्रों को जोड़ा गया है। इस अभिनव पहल की सफलता को देखते हुए अब पुलिस महानिदेशक ने इसे पूरे प्रदेश में लागू करने के लिए समस्त विभागाध्यक्षों और कार्यालयाध्यक्षों को निर्देश दिए हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशा पर उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा वर्ष 2018 में एक सार्थक पहल करते हुए व्हाट्सएप पर सक्रिय समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों को डिजिटल वालंटियर्स के रूप मे जोड़ा गया था। वर्ष 2023 में यूपी पुलिस के समस्त पुलिसकर्मियों को जोड़कर ''व्हाट्सएप कम्यूनिटी ग्रुप'' भी बनाए गए है, जिनकी सहायता से भ्रामक खबरों का खण्डन एवं पुलिस के सराहनीय कार्यों का प्रचार-प्रसार कराया जा रहा है। वर्तमान में लगभग 10 लाख व्यक्ति डिजिटल वालंटियर्स के रूप में एवं लगभग 02 लाख पुलिसकर्मी कम्यूनिटी ग्रुप के माध्यम से जुड़े हुए है। इन डिजिटल वालंटियर्स के रूप में गांव, मोहल्ले और स्थानीय कस्बे के लोगों को जोड़ा गया था, जिसके सार्थक परिणाम प्राप्त हुए है। पुलिस महानिदेशक उत्तर प्रदेश प्रशांत कुमार द्वारा इसी दिशा में नवीन पहल करते हुए फ़ेक न्यूज के खण्डन,



साइबर अपराध के प्रति जागरूकता एवं पुलिस के सराहनीय कार्यों को सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म पर व्यापक रूप से प्रसारित किए जाने के लिए युवा पीढ़ी के सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स एवं कॉलेज/विश्वविद्यालय के छात्रों को यूपी पुलिस का ''डिजिटल वॉरियर'' बनाए जाने के सम्बन्ध मे प्रदेश के समस्त विभागाध्यक्ष और कार्यालयाध्यक्ष को महत्वपूर्ण निर्देश दिए गए है। कॉलेज/विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रशिक्षित करने से इनमे आलोचनात्मक सोच को विकसित किया जा सकता है, जिससे वह किसी भी जानकारी का विश्लेषण और सत्यापन करके यूपी पुलिस के ''डिजिटल वॉरियर'' बनकर, साइबर क्राइम एवं फ़ेक न्यूज़ को रिपोर्ट कर सकेंगे। साथ ही यह छात्र अपने सामाजिक दायरे में फ़ेक न्यूज एवं साइबर अपराध के प्रति अपने परिवारीजनों एवं मित्रों को भी जागरूक कर सकेंगे। इन डिजिटल वॉरियर एवं स्कूल के छात्रों को फ़ेक न्यूज़ एवं साइबर क्राइम की पहचान करने और इसके दुष्प्रभावों के प्रति प्रशिक्षित करने के लिए विश्वविद्यालयों/डिग्री कॉलेजों, स्कूलों में अथवा पुलिस लाइन्स में कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी। इन कार्यशालाओं में साइबर क्राइम विशेषज्ञों/ फैक्ट चेकर्स, साइबर ट्रेनर और जनपदीय साइबर थाना/ साइबर सेल को शामिल किया जाएगा, जो तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव साझा करेंगे। जनपदीय पुलिस अधिकारियों द्वारा सभी स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालय प्रबन्धन से आग्रह करके 'साइबर क्लब' स्थापित करवाये जाएंगे एवं एक शिक्षक को इसका नोडल अधिकारी नामित करवाया जाएगा । इस कार्य में शिक्षा विभाग एवं जनपद में प्रशासन से भी सहयोग प्राप्त ● शेष पेज 11 पर

# कुंभ मेला की नावों पर हो रही चित्रकारी श्रद्धालुओं को सुखद अनुभव का होगा एहसास

कैनविज टाइम्स संवाददाता

- नमामि गंगे मिशन के तहत की जा रही है लगभग 2000 नावों की पेंटिंग
- प्रयागराज मेला प्राधिकरण चला रहा है सौंदर्यीकरण का अभियान
- संगम के नाविक और मल्लाह सीएम योगी के प्रयासों से हैं उत्साहित

करछना प्रयागराज। महा कुम्भ नगर प्रयागराज की पहचान पूरे विश्व में त्रिवेणी संगम से होती है और संगम की पहचान यहां तैरती नावों से। नाव और नाविक ही हैं जो श्रद्धालुओं को तट से संगम की त्रिवेणी धारा तक ले जाते हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ के महाकुम्भ को स्वच्छ और सुरक्षित महाकुम्भ बनाने के अभियान में संगम तट की नावों और नाविकों का भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। एक ओर तो सीएम योगी ने अपने हाथों से नाविकों को लाइफ जैकेट और सुरक्षा बीमा सार्टिफिकेट जारी किये, साथ ही उनकी नावों की मरम्मत और सुंदरीकरण का कार्य भी किया जा रहा है। नमामि गंगे मिशन के तहत गंगा, यमुना के घाटों और उनमें चलने वाली नावों को साफ, स्वच्छ रखने के साथ उन पर पेंटिग और चित्रकारी भी की जा रही है।

महाकुम्भ 2025 को लेकर पूरे प्रयागराज और महाकुम्भ मेला क्षेत्र में निर्माण और सौंदर्यीकरण के कार्य किये जा रहे हैं। इसी क्रम में संगम के पक्के घाटों और नावों को भी चित्रित और पेंट कर सुंदरीकृत किया जा रहा है। साथ ही उन पर स्वच्छता के संदेश भी लिखे जा रहे हैं जो श्रद्धालुओं को स्वच्छ महाकुम्भ अभियान में जुड़ने के लिए प्रेरित करेंगे। प्रयागराज मेला प्राधिकरण में एसडीएम अभिनव पाठक ने बताया कि पेंट माई सिटी अभियान के तहत पूरे प्रयागराज शहर और नमामि गंगे मिशन के अंतर्गत संगम क्षेत्र के घाट और नावों के सौंदर्यीकरण का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि नमामि गंगे मिशन के तहत मेला प्राधिकरण 5 लाख स्क्वायर फिट क्षेत्र में पेंटिग और चित्रकारी का कार्य करवा रहा है। उसी क्रम में लगभग 2000 नावों को भी चित्रित करने का कार्य किया जा रहा है, ताकि महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं को सुखद अनुभव हो और वो पेंट किये गये स्वच्छता संदेशों से प्रेरित होकर नदियों को स्वच्छ रखने में योगदान दें।

प्रयागराज संगम में पीढ़ियों से नाव चलाने वाले नाविक सियाराम निषाद का कहना है कि इसके पहले की सरकारें कुम्भ, महाकुम्भ जैसे बड़े अवसर पर केवल लाईसेंस जारी करती थीं और नाव यात्रा के रेट तय करती थीं, हम नाविकों को और किसी तरह की सुविधा नहीं मिलती थी। सीएम योगी की सरकार ने इस महाकुम्भ में तो हमें लाइफ जैकेट, सुरक्षा बीमा के साथ नाव यात्रा का रेट 50 फीसदी बढ़ा दिया है और अब हमारी नावों की मरम्मत और पेंटिग भी करवा रही है। इससे बढ़कर हमलोगों के लिए क्या हो सकता है ।

# विपरण विभाग पर मेहरबान अधिकारी, नहीं हो रही कार्रवाई

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कोरांव प्रयागराज। कोरांव तहसील क्षेत्र मे स्थापित धान क्रय केंद्र पर मनमानी का आलम है किसानो सें सीधे धान तौल नहीँ कराया जा रहा कुछ गिने चुने जो स्थानीय स्तर पर मजबूत पकड़ पहुँच वाले है उन्ही का धान तौल किया जा रहा है शेष किसान अपनी धान सीधे क्रय केंद्र पर नहीँ तौल करा पा रहे है ब्यापारी के जरिये मिलर पर संपर्क बनाकर मिलरो पर सीधे धान को पहुंचा दिया जा रहा है मिलर ब्यापारी के माध्यम सें किसान को केंद्र पर बुलाकर अंगूठा लगवा दे रहा पैसा जैसे ही खाता मे पहुँचता है ब्यापारी भी उनके चौखट पर पहुंचकर अपना तय किया हुआ प्रति कुंतल कमीशन ले ले रहा है किसान जब धान केंद्र पर ले जाता है तो कहते है नमी है धान सही नहीँ है जब प्रति कुंतल 05 कीलो कटवाने की बात पर किसान राजी हो जाता है तो न तो झन्ना सें झारा जाता है फिर वही प्रति कुंतल 05 किलो सीधे मुनाफा क्रय केंद्र के प्रभारी का हो जाता है अधिकांश क्रय केंद्र पर पुरे दिन भर मे एक झरना सें ज्यादा सें ज्यादा सौ सें डेढ़ सौ कुंतल ही झरता है लेकीन कागज़ पर हजारों कुंतल का अंगूठा लग जाता है इससे अंदाजा लगाया जा सकता है की क्रय केंद्र पर धान तौल पर कितना बड़ा खेल चल रहा है स्थानीय स्तर पर जो भी समाजसेवी विरोध कर रहे है उनके ऊपर भी दबाव बनाया जा रहा है जिससे विरोध करना बंद कर दे मनमानी करने मे पूरी छूट मिली रहे जहाँ एक तरफ किसान दिन रात एक करके खून पसीना बहाकर धान तैयार किया जब बेचने की बारी आई तो सीधे तौल कराने के लिए चक्कर काटता फिर रहा है लेकीन कोई सुनने वाला नहीँ है शिकायत करने पर भी निष्पक्ष जांच कार्रवाही संबधित जिम्मेदार द्वारा नहीँ किया जाता चुकी इस भ्रष्टाचार मे कुछ न कुछ सभी का हिस्सा बना है जिसके कारण जिले स्तर पर कोई सुनवाई नहीँ हो रही न ही कोई अधिकारी गहराई सें सच्चाई को जानने व कार्रवाही करने का प्रयास कर रहे है कई केंद्र ऐसे भी है जिसका नामो निसान नहीँ है लेकीन कागज़ पर चल रहे है ।

मंडलाआयुक्त प्रयागराज मंडल महोदय द्वारा टीम का भी गठन किया गया है जल्द ही औचक निरीक्षण टीम करेगी साथ ही आर एम ओ सर द्वारा भी जांच कुछ केंद्रों का किया गया है कुछ केंद्रों पर जो कमिया पाई गईं है संबधित को कार्रवाही हेतु प्रेषित किया जायेगा किसान अपना धान सीधे क्रय केंद्र पर तौल कराकर अपना उचित मूल्य प्राप्त कर सकता है यदि केंद्र प्रभारी द्वारा हिलावाली किया जाता है तो शिकायत करे निष्पक्ष जांच कार्रवाही किया जायेगा

अविनाश चंद्र सागरवाल
जिला खाद्य विपरण अधिकारी प्रयागराज

# 24 को होगा अटल युवा महाकुंभ

कैनविज टाइम्स संवाददाता

- 25 हजार लोगों की होगी उपस्थिति, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ करेंगे कार्यक्रम का उद्घाटन

लखनऊ। भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जन्मशती के उपलक्ष्य में 24 दिसम्बर को हज़रतगंज स्थित केडी सिंह बाबू स्टेडियम में अटल युवा महाकुंभ होगा। कदम मिलाकर चलना होगा थीम पर आधारित कार्यक्रम का उद्घाटन रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ करेंगे। शहर के स्कूलों द्वारा बैण्ड प्रदर्शन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, अटल केनद्रित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार तथा अटल जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर केन्द्रित वृत्त चित्र का भी प्रसारण होगा। कार्यक्रम में लगभग 25000 लोगों की उपस्थिति रहेगी। जानकारी देते हुए अटल जन्मशती समारोह समिति के संयोजक एवं लखनऊ उत्तर के विधायक डा. नीरज बोरा बताया कि लखनऊ जिले के राजकीय और गैर सरकारी उच्च प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों में अटल बिहारी वाजपेयी पर केंद्रित निबंध प्रतियोगिता तथा भाषण प्रतियोगिता कराई गई है। देश के विकास एवं सुशासन में अटल जी का योगदान, संघर्ष एवं प्रेरणा से युक्त अटल जी का साहित्य तथा अटल जी का राष्ट्रवाद विषय पर हुई त्रिस्तरीय प्रतियोगिता क्रमशः विद्यालय, विकास खण्ड और जनपद स्तर पर सम्पन्न हुई हैं। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत करने के साथ ही अटल जी पर केनद्रित वृत्त चित्र का प्रसारण भी होगा। डा. बोरा ने बताया कि अटल जी महामानव थे। अटल जन्मशती के इस आयोजन में उस आयु वर्ग को लक्षित किया गया है जो अगले 25 वर्षों में विकसित भारत के सपनों को साकार करने व उसे विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले हैं। आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं पूर्व जलशक्ति मंत्री डा. महेंद्र सिंह के मुताबिक अटल जी लखनऊ के थे और पूरे विश्व में उनकी व्यापक प्रतिष्ठा थी। जन्मशती पर लखनऊ में होने वाले अनेक कार्यक्रमों की श्रृंखला में यह आयोजन सबसे महत्वपूर्ण होगा जिसकी थीम उनकी प्रसिद्ध कविता कदम मिलाकर चलना होगा पर केंद्रित की गई है।

एसडीएम की अध्यक्षता मे आयोजित हुआ संपूर्ण समाधान दिवस

# राजश्व, आपूर्ति, विद्युत की आईं सबसे ज्यादा शिकायतें

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कोरांव (प्रयागराज)। शनिवार को कोरांव तहसील मे एसडीएम कोरांव आकांक्षा सिंह की अध्यक्षता मे संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन सम्पन्न हुआ जिसमे कुल 240 शिकायती पत्र प्राप्त हुआ जिसमे 08 का निस्तारण किया गया बाकी शेष शिकायतो को संबधित विभाग को जांच कार्रवाही हेतु अग्रसारित कर दिया गया संपूर्ण समाधान दिवस मे राजश्व की सबसे ज्यादा शिकायत 64 प्राप्त हुआ इसी प्रकार 17 पुलिस विभाग आपूर्ति 34 विद्युत विभाग 24 शेष अन्य विभाग सें कम शिकायते रही संपूर्ण समाधान दिवस मे जिस उम्मीद के साथ फरियादि अपनी फरियाद लेकर न्याय की उम्मीद लगाकर आता है उसके मुताबित उसे न्याय नहीं मिलता अधिकांश फरियादियों का प्रार्थना पत्र ऑनलाइन दर्ज करके रिसिविंग नहीँ दिया जाता जिससे शिकायतो की संख्या कम रहे संपूर्ण समाधान दिवस मे एसडीएम कोरांव के अलावा नायब डैया राममूरत, अतिरिक्त इंस्पेक्टर कोरांव शैलेश कुमार सिंह समेत अन्य विभाग के अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे आई हुई शिकायतो को गुणवक्ता पूर्वक समयबद्ध के साथ निस्तारण करने का आदेश सभी विभाग को दिया गया है।

# कोरांव पुलिस ने दर्ज नहीं की रिपोर्ट

- समाधान दिवस में पहुंची पीड़ित महिला, एसडीएम सें लगाई न्याय की गुहार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कोरांव। संपूर्ण समाधान दिवस मे संसारपुर (पाल चौराहा) गांव सें आई सोनवती का आरोप है की मेरे पति अशोक कुमार प्रजापति व घर के अन्य परिजन जबसे मेरी शादी हुई है आयेदिन दहेज को लेकर मारते पीटते व प्रताड़ना करते है एक छोटा दो वर्ष का लड़का भी है इस संदर्भ मे थाना कोरांव मे प्रार्थना पत्र दी लेकीन कोई सुनवाई नहीँ हुई तो संपूर्ण समाधान दिवस की अध्यक्षता कर रही एसडीएम आकांक्षा सिंह को प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई एसडीएम ने तत्काल प्रभारी निरीक्षक कोरांव को फोन करते हुये महिला को थाने भेजी लेकीन अभी तक कोई कार्रवाही नहीँ किया गया जिससे पीड़ित महिला एक छोटा बच्चा लेकर भटक रही है महिला ने बताया की मै थाने गईं लेकिन थाना द्वारा रपट दर्ज नहीँ किया गया है।

महिला व पिता द्वारा पूर्व में आपस मे लड़का पक्ष सें सुलह समझौता किया जा चुका है जानबूझकर बढ़ा चढ़ाकर प्रार्थना पत्र देकर परिजनों पर दबाव बनाने के लिए मुकदमा लिखाना चाहती है जो सच्चाई है मैंने एसडीएम को भी बता दिया है।

नितेंद्र कुमार शुक्ला
प्रभारी निरीक्षक कोरांव प्रयागराज

## जिला वॉलीबॉल संघ के कार्यालय पर उमाकांत तिवारी की धर्मपत्नी को दी गई श्रद्धांजलि

**मेजा प्रयागराज,कैनविज टाइम्स संवाददाता।** जमुनापार क्षेत्र तहसील मेजा के जिला वॉलीबाल संघ,प्रयागराज के वरिष्ठ उपाध्यक्ष के.पी.सिंह की अध्यक्षता में एक शोक सभा स्थानीय मेजारोड स्थित एसोसिएशन (डीवीए) के प्रधान कार्यालय में आहूत की गई। जिसमें जिला वॉलीबाल संघ,प्रयागराज के आजीवन सदस्य एवं वॉलीबाल के भूतपूर्व वरिष्ठ खिलाड़ी,(रिटायर्ड शिक्षक शुक्लपुर इंटर कॉलेज) उमाकांत तिवारी की धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला तिवारी का गति दिवस शुक्रवार,दिनांक 20 दिसंबर 2024 को अपने निज आवास गांव चौकठा,तिवरान में आकस्मिक निधन हो जाने से पूरा परिवार शोक संतप्त है। शोक की इस घड़ी में जिला वॉलीबाल संघ,प्रयागराज के पदाधिकारीयों एवं खिलाड़ियों ने एकत्र होकर मृत आत्मा की शांति के लिए सामूहिक रूप से दो मिनट का मौन रखकर मृतक परिवार को दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की। उक्त शोक सभा में पूर्व प्रधानाचार्य विजय शंकर तिवारी, आर.पी.शुक्ला, के.वी.एल.श्रीवास्तव, वाई.एन.सिंह, प्रभाकर चौबे, कुशल कंत मिश्रा, रामस्नेही शुक्ला, ठाकुर प्रसाद यादव, देवेंद्र नाथ शुक्ला, राजेश प्रसाद राय, मुकेश शुक्ला, सुभाष चंद्र यादव, संतोष भास्कर, बल्लर पटेल, अंशु सिंह, आशीष द्विवेदी, गणेश प्रसाद शुक्ला, अशफाक अहमद, विवेक शुक्ला, हिमांशु विश्वकर्मा, सत्यम तिवारी, चंचल प्रजापति आदि लोग उपस्थित रहे।

## ट्रेन की चपेट में आकर अधेड़ की मौत

**बंथरा, कैनविज टाइम्स संवाददाता।** लखनऊ कानपुर रेल खंड के हरौनी रेलवे स्टेशन पर शनिवार शाम करीब 4 बजे हरौनी निवासी राकेश कश्यप पुत्र झबबू कश्यप उम्र करीब 50 वर्ष एक ट्रेन की चपेट में आ गए जिससे उनकी वहीं पर मौत हो गई। जानकारी पाकर पहुंची रेलवे पुलिस ने शव को पंचनामा करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। परिजनों को जानकारी दे दी गई है।

## पुलिस के अमानवीय व्यवहार से आहत अधिवक्ताओं ने एसीपी से की शिकायत

**मलिहाबाद,लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता।** मलिहाबाद बार एसोसिएशन के अधिवक्ताओं ने मलिहाबाद इंस्पेक्टर सतीश चंद्र साहू पर अमानवीय व्यवहार करने का आरोप लगाते हुए सहायक पुलिस आयुक्त से शिकायत की है। अधिवक्ता संतोष यादव, शाहबाज खान व हरिश्चंद का आरोप है कि शुक्रवार रात क़रीब 8 बजे अपने मुवक्किल के किसी मामले में बात रखने गए थे जहां इंस्पेक्टर मलिहाबाद अधिवक्ताओं को झिड़कने लगे और अमानवीय व्यवहार करते हुए कानून सिखाने के धमकी देने लगे। अधिवक्ताओं के साथ हुए अमानवीय व्यवहार से आहत होकर शनिवार को मलिहाबाद बार एसोसिएशन के महामंत्री राम भरोसे रावत ,पूर्व महामंत्री सजीवनलाल यादव,पूर्व अध्यक्ष परमेश्वरदीन गौतम,शारिक शमीम खाँ,गयाप्रसाद,मो0 मुदस्सिर,शशिकांत मिश्रा,अनिल यादव,रामसिंह यादव,फरीद ख़ान,आरिज़ ख़ान,जावेद अहमद,आनंद दीक्षित,कामरान ख़ान,अंकुर गौतम,प्रकाश चंद्र,हरीश चंद्र,सर्वेश सैनी सहित बार एसोसिएशन के समस्त अधिवक्ताओं ने सहायक पुलिस आयुक्त अमोल मुर्कुट को मलिहाबाद इंस्पेक्टर के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए शिकायत की है।

## तीन तस्कर गिरफ्तार

**लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता।** अवैध ऑक्सीटोसिन के निर्माण एवं विपणन में संलिप्त अन्तर्राज्यीय गिरोह के तीन तस्कर गिरफ्तार कर लिया गया है।अपर पुलिस महानिदेशक रेलवे उ0प्र0 लखनऊ प्रकाश डी के आदेश के अनुपालन में, पुलिस उपमहानिरीक्षक रेलवे उ0प्र0 राहुल राज एवं पुलिस अधीक्षक रेलवे लखनऊ प्रशान्त वर्मा के निर्देशन में ट्रेनों व रेलवे स्टेशनों पर चोरी/लूट/जहर खुरानी/ मादक पदार्थो की तस्करी की घटनाओं की रोकथाम हेतु व इनामिया/वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे विशेष अभियान के अन्तर्गत पुलिस उपाधीक्षक रेलवे, प्रथम अमित कुमार सिंह के कुशल निर्देशन में प्रभारी निरीक्षक धर्मवीर सिंह थाना जीआरपी चारबाग लखनऊ के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा दिनांक- 16.11.24 को थाना जीआरपी चारबाग पर पंजीकृत अभियोग मु0अ0सं0 414/24 धारा 61,318 4,319 2 336(2,338 बीएनएस व 163 रे0एक्ट तथा 27 बी(1) औषधि और प्रसाधन समाग्री अधिनियम में नामित/वांछित प्रकाश में आए अभियुक्तों को थाना जीआरपी चारबाग टीम द्वारा तीन नफर अभियुक्तो को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया गिरफ्तार किये गये अभियुक्तों के नाम मो0 इलियाश पुत्र स्व0 मो0 मुमताज,श्यामू गुप्ता उर्फ नागेन्द्र नाथ गुप्ता पुत्र राम किशोर गुप्ता और तीसरे अभियुक्त का नाम सुलखान सिंह उर्फ सोनू सिंह पुत्र श्रीपाल बताया जा रहा है।बताया जा रहा है कि अभियुक्तगण बहुत ही शातिर किस्म का अन्तर्राज्यीय ऑक्सीटोसिन के निर्माण कर्ता और विपणन तस्कर है जो ट्रेनों के माध्यम से ऑक्सीटोसिन की तस्करी करते है थे।

# ईद आजीविका मिशन समूह गांव चनैनी की महिला कोटेदार पद पर निर्वाचित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

करछना प्रयागराज। विकासखंड करछना के अंतर्गत ग्राम पंचायत चनैनी में सरकारी खाद्यान्न की दुकान का आवंटन शनिवार को समूह की महिलाओं के समक्ष चयनित हो गया जिसमें ग्राम पंचायत के दो समूह के बीच चुनाव कराया गया चुनाव के समक्ष पड़े मतों के बदले ईद ईद आजीविका मिशन समूह की महिला को सरकारी खाद्यान्न की दुकान चलाने हेतु निर्वाचित घोषित किया गया ग्राम पंचायत चनैनी में कोटे के चुनाव का अयोजन पार्वती आजीविका मिशन और ईद आजीविका मिशन ने चुनाव कराया गया जिसमें ईद आजीविका मिशन ने जीत दर्ज किया। ईद अजीविका मिशन को 139 पार्वती आजीविका मिशन को 56 मत मिले इस मौके पर ग्राम पंचायत चनैनी अध्यक्ष एवं प्रधान धीतेश तिवारी की उपस्थिति में कराया गया ब्लाक कर्मियों में आई एस बी उदय भान, एडीओ पंचायत राम शिरोमणि त्रिपाठी,सचिव दीपेश सिंह, सचिव अक्षय सिंह सहित बड़ी संख्या में गांव के गणमान्य लोगों के अलावा समूह की महिलाओं की उपस्थिति मौजूद रहीं।

# जुल्मी जुल्म करेगा सत्ता के गलियारे से गूंज उठेगा इंक्लाब के नारों से : डॉ दिनेश सोनी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश कंग्रेस कमेटी के सदस्य डा दिनेश कुमार सोनी ने क हा कि प्रदेश व केन्द्र की भ्रष्ट भाजपा सरकार अंग्रेजी शासन से भी बदतर हो गयी है 18 दिसम्बर को इन्होंने अपनी कमजोरी जनता व कंग्रेस के सामने उजागर कर दिया यदि सत्ता में बैठीं सरकारें जनहित व देश हित से हट कर कार्य करती है तो बिपक्क्ष व जनता कार्य है उन्हें जगाना व चेताना पर निरंकुश भाजपा सरकार कंग्रेस कार्यकर्ताओं पर पुलिस के बल पर लाठियां बरसायी जो की शांति ढंग से विधानसभा का घेराव करने जा रहे थे इस घिनौने कृत्य की जितनी निंदा की जाय कम है पुलिस के आला अधिकारियों को भी संज्ञान में लेना चाहिए कि सरकारें आती है सरकारें जाती है सत्ता किसी की बपौती नहीं है सूझबूझ से काम लेना चाहिए जिला कंग्रेस उपाध्यक्ष डा दिनेश सोनी ने कहा कि प्रदेश अध्यक्ष पूर्व मंत्री अजय राय व राष्ट्रीय महा सचिव उत्तर प्रदेश के प्रभारी अविनाश पाण्डेय जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश के कंग्रेस के कार्य कर्ता महंगाई बेरोजगारी नौजवानों विद्यार्थियों ब्यापारियों की समस्याओं को लेकर सरकार के खिलाफ सरकार को चेताने सरकार को जगाने जा रहे पर भ्रष्ट सरकार के इसारे पर जगह जगह बैरिकेटिंग लगा कर कंग्रेस नेताओं को बीच में रोका गया विपक्ष की आवाज को दबाना जनता की आवाज को दबाना संविधान की हत्या करना है हमारे शेर दिल कंग्रेस कार्यकर्ता बब्बर शेर की तरह तुम देश द्रोहियो से लड़ते रहेंगे व अपनी आवाज को बुलंद करते रहेंगे हम सब का एक एक कार्यकर्ता साथी तुमसे या तुम्हारी जन विरोधी नितियों से डरने वाले नहीं है तुम गिदडों की बोल से भय खा नहीं सकते हम सिंहनी के लाल है घबड़ा नहीं सकते आने वाले समय में जनता खुद ही इस अत्याचार का जबाब देगी हम कंग्रेस जन अन्याय के खिलाफ जनता के हित में संघर्ष करते रहेंगे चुप बैठने वाले नहीं है हर जोर जुल्म के टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है। संसद में सत्ता के लोगों ने जिस तरह का कृत्य किया वह जग जाहिर हो गया संविधान निर्माता पर टिप्पणी गौतम अडानी के तरफ से ध्यान हटाने के लिए अनेक नाटक फर्जी इल्जाम अपनी गलती छिपाने के लिए दुसरे।लेकिन लोगो पर फर्जी एफआईआर देश प्धान मंत्री जी को देश के गृह मंत्री जी को बर्खास्त कर देना चाहिए प्धान मंत्री जी चुप्पी साध लेंगे पर ऐसा करेंगे नहीं कंग्रेस पार्टी अन्याय व अन्याइयों के खिलाफ लड़ते रहेंगे

# अटल जी का कृतित्व और व्यक्तित्व समाज के लिए प्रेरणादायक: मनीष

कैनविज टाइम्स संवाददाता

करछना प्रयागराज। अपने राजनैतिक और सामाजिक लोक जीवन में पूर्व प्रधानमंत्री,भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई जी का कृतित्व और व्यक्तित्व सर्व समाज के लिए प्रेरणादायक है। कुशल शासक,प्रखर वक्ता और जनकवि के रूप में उनके लोक जीवन की विविधा राष्ट्र के नवनिर्माण हेतु सदैव ऊर्जा और आत्म बल प्रदान करती रहेगी। यह बातें अटल जी की जन्मशती के अंतर्गत रामपुर स्थित बृज मंगल सिंह इंटर कॉलेज में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान प्रधानाचार्य मनीष तिवारी ने कही। उन्होंने कहा कि विभागीय दिशा निर्देश के अनुसार भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री के जीवन से संबंधित निबंध एवं भाषण प्रतियोगिताओं का भी आयोजन शीघ्र ही किया जाएगा।इस मौके पर बच्चों ने अटल जी द्वारा रचित इक्यावन कविताओं में से कई प्रेरणादाई कविताओं का पाठ करते हुए देश की एकता,अखण्डताऔर राष्ट्र के नवनिर्माण का संकल्प लिया। शिक्षकों ने भी पूर्व प्रधानमंत्री के समर्पित जीवन और उनके आदर्शों से सीख लेने हेतु छात्र-छात्राओं को प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक डॉ.के.के.त्रिपाठी ने किया।इस मौके पर स्कूल के शिक्षक,कर्मचारी और बड़ी संख्या में बच्चे मौजूद रहे।

# आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को पोषण शिक्षा पर दिया गया प्रशिक्षण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

करछना। जनपद प्रयागराज जमुनापार क्षेत्र विकास खंड करछना के 271 आंगनबाड़ी केंद्रों की कार्यकर्ताओं को पोषण शिक्षा पर तीन दिवसीय तीन चरणों में पोषण शिक्षा पर प्रशिक्षण दिया गया और उन्हें प्रशिक्षण के दौरान प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया विकास खंड करछना के सभागार में तीन चरणों में प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षण दिया गया जिनमें पोषण एवं शिक्षण संबधी जानकारी दी गई प्रशिक्षण ट्रेनर द्वारा कार्यों को विस्तार से बताया गया प्रशिक्षण के दौरान पोषण की पढ़ाई भी विस्तार से प्रशिक्षण में बताया गया जिसमें नव चेतना 0.3 वर्ष के लिए एवं 0.6 वर्ष आधारशिला 3/ 6 वर्ष के बच्चों के लिए पोषण शिक्षा पर विस्तृत जानकारी दी गई कार्यक्रम का उद्घाटन बाल विकास परियोजना अधिकारी राकेश कुमार सिंह व मुख्य सेविका श्रीमती शशि प्रभा सिंह, श्रीमती मीना शाक्या द्वारा प्रशिक्षण दिया गया जिसमें आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण उपरांत सभी को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया

# अंबेडकर पर अमित शाह के बयान के खिलाफ सपा का जिलों पर जोरदार प्रदर्शन, डीएम के मार्फत राष्ट्रपति को सौंपा ज्ञापन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर आज समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जिला मुख्यालयों पर गृह मंत्री अमित शाह के बाबा भीमराव अंबेडकर पर दिए गये बयान के विरोध में डीएम के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपा। राजधानी लखनऊ में जिलाध्यक्ष जय सिंह जयंत के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं ने लखनऊ कलेक्टर पर धरना प्रदर्शन किया और विरोध जताया। डीएम के माध्यम से राष्ट्रपति को भेजे गए ज्ञापन में सपा नेताओं ने मांग कि गृह मंत्री अमित शाह को तत्काल बर्खास्त किया जाए व उनके द्वारा देशवासियों से माफी मांगी जाये। गौरतलब हो कि संसद के शीत कालीन सत्र के दौरान कहा था कि अभी एक फैशन हो गया है कि आंबेडकर, आंबेडकर, आंबेडकर, आंबेडकर, आंबेडकर, आंबेडकर. इतना नाम अगर भगवान का लेते तो सात जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता।'' समाजवादी पार्टी सहित सम्पूर्ण विपक्ष ने इसे बाबा साहब भीमराव अंबेडकर का अपमान बताया और अमित शाह के इस्तीफ़े की मांग की।

विरोध प्रदर्शन में शामिल सपा नेता दारा सिंह यादव ने कहा कि बीजेपी जब से सत्ता में आई उसने देश की विभूतियों का अपमानित करने का ही काम किया है। दारा ने कहा कि बाबा साहब भीमराव अंबेडकर पर दिया गया गृह मंत्री अमित शाह का बयान उनकी व भाजपा की सामंतवादी सोच को परिलक्षित करता है। ये लोग कभी दलित, पिछड़ों के नायकों का सम्मान बर्दाश्त नहीं कर सकते है। हमारी मांग है कि अमित शाह को गृह मंत्री पद से हटाया जाए। सपा के आज के प्रदर्शन में सांसद आर के चौधरी, पूर्व विधायक अंबरीश पुष्कर, सपा प्रवक्ता मनोज यादव, पूर्व विधायक राजपाल कश्यप , अमन यादव, त्रिभुवन यादव, सलमान सिद्दीकी , गोविंद यादव, दीपराज यादव, संदीप यादव सहित भारी संख्या में कार्यकर्ता शामिल हुए।

## पीएनसी से लोहा चुरा ले गए चोर

बंथरा कैनविज टाइम्स संवाददाता। बंथरा थाना क्षेत्र में बीती रात लखनऊ कानपुर हाईवे पर एलिवेटेड एक्सप्रेस-वे सड़क का निर्माण कर रही पीएमसी कंपनी का लोहा वाहन सवार चोरों द्वारा किया जा रहा था। लेकिन रात में पेट्रोलिंग के दौरान सिक्योरिटी ऑफिसर ने अपने कर्मचारियों के साथ कार को रोकने का प्रयास किया, परंतु वह मौके से भाग निकली। थाने में सिक्योरिटी ऑफिसर ने मुकदमा दर्ज कराए जाने के लिए प्रार्थना पत्र दिया है।निर्मल चंद मिश्रा ने बताया कि पीएनसी कंपनी में सिक्योरिटी सर्विस ऑफिसर के पद पर कार्यरत हूं, 21 दिसंबर की रात लगभग 1:10 बजे बंथरा के जुनाबगंज स्थित प्रसाद अस्पताल के पास पिलर संख्या 180 के पास नीले रंग की कार नंबर यूपी 32 एम पी 8181 जिसके पीछे लाल रंग से भारत सरकार लिखा हुआ है और आगे पीछे के दोनों शीशे टूटे हुए हैं। सिक्योरिटी ऑफिसर का कहना है कि जब हम रात में पेट्रोलिंग के लिए निकले तब पिलर नंबर 180 के पास कुछ लड़के कंपनी का लोहा गाड़ी में लोड कर रहे थे, गाड़ी को रोकने का प्रयास किया, लेकिन गाड़ी टक्कर मारते हुए निकल गई और यह गाड़ी एक हफ्ते से लगातार लोहा चोरी कर रही थी। थाना प्रभारी राम सिंह ने बताया कि तहरीर मिली है अभी मुकदमा नहीं लिखा गया है लेकिन पीएनसी कंपनी का लोहा चोरी करने वाले चोरों और वाहन का पता लगाया जा रहा है।

# गृहमंत्री द्वारा डॉ भीमराव अंबेडकर पर की गई टिप्पणी के खिलाफ समाजवादियों ने दिया ज्ञापन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कैनविज टाइम्स लखनऊ । समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष जयसिंह 'जयन्त' के नेतृत्व में शनिवार को सांसद आर0के0 चैधरी, प्रदेश उपाध्यक्ष सी0एल0 वर्मा एवं जिला महासचिव शब्बीर अहमद खान के साथ हजारों की संख्या में कार्यकर्ताओं ने पार्टी कार्यालय 6, लाजपत राय भवन कैसरबाग, लखनऊ से जिला मुख्यालय तक पैदल मार्च करते हुए जिला मुख्यालय में राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन जिलाधिकारी लखनऊ के माध्यम से सौंपा। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष जयसिंह 'जयन्त' ने उपस्थित मीडिया कर्मियों/पत्रकारों को बताया कि संसद में गृह मंत्री अमित शाह द्वारा भारतीय संविधान निर्माता करोड़ों दलितों, पिछड़ों, वंचितों के भगवान भारत रत्न बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर पर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई है। जिससे देश व प्रदेश में दलित, पिछडों एवं वंचित समाज की भावताओं को गहरा आघात पहुँचा है। गृहमंत्री की इस टिप्पणी से दलित पिछड़ों के प्रति भाजपा की संविधान विरोधी मानसिकता प्रकट होती है।

समाजवादी पार्टी का मुख्य उद्देष्य लोकतंत्र और संविधान को मजबूत बनाना है जिससे दलित, पिछड़े समाज के जीवन में खुशहाली आए। भारतीय संविधान के जनक बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के विरुद्ध की गई टिप्पणी अति खेदजनक है। जिला समाजवादी पार्टी लखनऊ इकाई भारत के राष्ट्रपति महोदय से अनुरोध करती है कि भारत के गृहमंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर पर की गई अपमानजनक टिप्पणी के लिए अतिशीघ्र जनता से माफी मांगे और बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर पर की गई अपमानजनक टिप्पणी पर गृहमंत्री को मंत्रिमंडल से अतिशीघ्र हटाया जाये। ज्ञापन देने के दौरान पूर्व प्रदेष उपाध्यक्ष फिदा हुसैन अंसारी, पूर्व विधायक गोमती यादव, राजेन्द्र यादव, अम्ब्रीष सिंह पुष्कर, प्रदेष सचिव दिनेष कुमार सिंह, देवकली प्रसाद रावत, विजय सिंह यादव, रामसागर यादव, रंजीत यादव, वीर बहादुर यादव, फैसल मकबूल खान, महताब सिंह यादव, त्रिवेणी प्रसाद पाल, रूप नरायण यादव, अनिल कुमार यादव, राशिद अली, रामगोपाल यादव, रामकिशोर रावत, पूर्व जिलाध्यक्ष अशोक यादव, नागेन्द्र सिंह यादव, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष विजय बहादुर यादव, विधानसभा प्रत्याशी सोनू कनौजिया, राजबाला रावत, जिला उपाध्यक्ष/जिला निर्वाचन प्रभारी टी0बी0 सिंह, वरिष्ठ नेता भरत यादव, हरिपाल यादव के साथ भारी तादाद में समाजवादी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

# बिजली का बकाया वसूलने पहुंचे बिजली कर्मियों पर हमला

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में एक बार फिर बिजली कर्मियों पर हमले की घटना सामने आयी है। चौक डिवीजन के बिजलीकर्मी शनिवार को उच्च अधिकारियों के निर्देश पर बकाया बिजली बिल की वसूली करने थाना सआदतगंज के मैदान एल एच खां में सैय्यद जुल्फिकार हुसैन के घर पहुंचे थे जहाँ ये घटना पेश आयी। बिजलीकर्मी सोमनाथ ने पुलिस को दी हुई तहरीर में बताया की वह अपने अन्य बिजली कर्मियों साथियो सहित दोपहर लगभग 1:30 बजे मैदान एल एच खां में सैय्यद जुल्फिकार हुसैन से वसूली की कार्यवाही के लिए गये थे तभी वहां मैदान इलाच एल एच खाँ निवासी भय्यू, मीसम, बाबू, आ पहुंचे और सरकारी काम में बाधा डालते हुए भद्दी भद्दी गलियां बकने लगे और मेरे साथ मारपीट करने लगे इस दौरान मेरा मोबाइल भी तोड दिया और जान से मारने की धमकी देते हुये फ़रार हो गये। घटना की सूचना मिलते ही चौक डिवीजन के अधिशासी अभियंता रमन वासुमित्रा व चौक उपखंड अधिकारी अश्विनी कुशवाहा पीड़ित को लेकर सआदतगंज थाने पहुंचे। यहाँ बिजलीकर्मी सोमनाथ ने आरोपियों के खिलाफ़ पुलिस को तहरीर दी जिस पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर आगे की कार्यवाही शुरू कर दी है।

# सैम रेनेसां ने लखनऊ में किया भव्य कार्यक्रम का आयोजन रेनेसां नेक्स्ट जेन लीडर्स अवार्ड से सम्मानित हुईं कई विभूतिया

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। सैम रेनेसां की ओर से लखनऊ में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका मुख्य केंद्र सैम रेनेसां फैशन कैलेंडर था। कार्यक्रम के दौरान ही इसे लांच किया गया। इसके अलावा कई लोगों को रेनेसां नेक्स्ट जेन लीडर्स अवार्ड 2024 भी दिए गए। बॉलीवुड अभिनेत्री दिवा मिस अमृता राव सेलिब्रिटी के तौर पर कार्यक्रम में मौजूद रहीं। सैम रेनेसां की संस्थापक सौम्या साहू ने कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम को दीपक पाल, एसआरएस एसोसिएट्स के संस्थापक ने पावर्ड किया था। तो वहीं लखनऊ सर्राफा एसोसिएशन के महासचिव राहुल गुप्ता तथा सोने और चांदी के आयातक भाजपा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में भव्य कपूर मेकअप आर्टिस्ट और सोनिया मेहरोत्रा मिसेज इंडिया ब्यूटी क्वीन व वीआईपी अतिथि के तौर पर संजय सिंह मौजूद रहे। कार्यक्रम का निर्देशन श्वेतांक प्रकाश चतुर्वेदी ने किया। सैम रेनेसां फैशन कैलेंडर लॉन्च 2025 में नेशनल इंटरनेशनल मॉडल्स ने भी हिस्सा लिया। इनमें फ़लक नाज़, उषा यादव, डॉ एमएसखान, अनुष्का रुबेन, मुक्ति भार्गव, निधि शर्मा की मौजूदगी रही। इस कार्यक्रम में कई खास लोगों की मौजूदगी रही। सैम रेनेसां की संस्थापक सौम्या साहू ने बताया कि इस कार्यक्रम के माध्यम से वह लोगों के टैलेंट को आगे लेकर आना चाहती है।

## लेखपाल संगठन के अध्यक्ष ने जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को दिया ज्ञापन



लखनऊकैनविज टाइम्स संवाददाता । राजधानी के सरोजिनी नगर तहसील लेखपाल संघ के अध्यक्ष सुधीर कुमार शर्मा व उनकी टीम द्वारा जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार के माध्यम से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को ज्ञापन दिया गया। बरेली में लेखपाल की हुई निर्मम हत्या लेखपालों की सुरक्षा को लेकर कई अहम मुद्दों पर मुख्यमंत्री को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार को ज्ञापन दिया गया। इस मौके पर लेखपाल संगठन के अध्यक्ष सुधीर शर्मा समेत संगठन के अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

## गोसाईगंज में फूंका गया गृहमंत्री का पुतला

लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। गोसाईगंज में बस स्टैंड पर देश के गृहमंत्री अमित शाह का पुतला जलाया गया।यह कार्य ग्रह मंत्री संविधान निर्माता डॉ भीमराव अम्बेडकर पर अभद्र टिप्पणी करने के विरोध में किया गया। कार्यक्रम राष्ट्रीय कल्याण मंच के संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष अनोद कुमार रावत के के नेतृत्व में संपन्न हुआ।इस आयोजन में जगरूप सिंह यादव प्रधान, अतर सिंह यादव प्रधान, उमेश यादव प्रधान, शंकर दीन प्रधान दिनेश यादव प्रधान, सन्त प्रकाश रावत, हरीश पासवान तथा प्रमोद भार्गव सहित अन्य तमाम लोग मौजूद रहे।

## कठवारा गांव में स्वच्छता अभियान चलाया गया

बीकेटी, लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। एचडीएफसी बैंक के परिवर्तन कार्यक्रम के अंतर्गत साहस संस्था एवं एचडीएफसी बैंक द्वारा विकासखंड बख्शी का तालाब अंर्तगत ग्राम पंचायत कठवारा में कर्मचारी सहभागिता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का उद्घाटन दीन दयाल उपाध्याय ग्राम्य विकास संस्थान के सहायक निदेशक डॉ एसके सिंह चौहान द्वारा पौधारोपण के माध्यम से किया गया। इस कार्यक्रम के तहत एचडीएफसी बैंक की बीकेटी,आईआईएम व पुरनिया चौराहा शाखाओं के कर्मचारियों ने मिलकर कठवारा गांव में स्वच्छता अभियान चलाया।एचडीएफसी बैंक की प्रबंधक मोनिका ने बताया साहस संस्था द्वारा जिले के 25 गांवों में ठोस कचरा प्रबंधन पर कार्य किया जा रहा है,जिसके अंतर्गत जिले के 4 पंचायतों में कचरा संग्रहण वाहन का सहयोग भी किया गया।इस मौक़े पर पंचायत सचिव दिनेश पाण्डेय,ग्राम प्रधान अशोक,प्रधान प्रतिनिधि उदय भान सिंह भी मौजूद रहे।

## डायल 112 पर रुपए मांगने व अभद्रता का आरोप

बंथरा कैनविज टाइम्स संवाददाता । थाना क्षेत्र के लोनहा गांव निवासी अमन प्रजापति पुत्र बलराम ने सहायक पुलिस आयुक्त कृष्णा नगर को शिकायती पत्र देकर बताया है कि उनके घर बनाए जाने के दौरान पड़ोसी सरवन व भाईलाल द्वारा विवाद करने के उद्देश्य से बुलाई गई 112 पुलिस के द्वारा उनसे 5000 की मांग की गई तब घर बनाने की बात की गई। अमन प्रजापति ने आरोप लगाया है कि वह अपना घर बनवा रहे थे इसी बीच विपक्षियों द्वारा विवाद पैदा करने के उद्देश्य से 112 नंबर पुलिस बुलाई गई। पुलिस वालों ने पहले तो उससे कहा कि 5000 दे दो और घर बनाओ और वह अपना मोबाइल नंबर देकर वापस हो गए किंतु थोड़ी देर के बाद वापस आए और काम बंद करने को कहने के साथ मजदूरों से गाली गलौज करने लगे। पीड़ित द्वारा एसीपी कृष्णा नगर से मामले की शिकायत की गई है।

**हिंदू जागरण मंच के जिला संयोजक से भी अभद्रता का आरोप**

उक्त मामले में ही जब मौके पर स्थानीय निवासी व हिंदू जागरण मंच के जिला संयोजक सूर्यभान विश्वकर्मा ने पहुंचकर मामले को सुलझाने का प्रयास किया तो उनके साथ भी 112 पुलिस द्वारा अभद्रता की गई। सूर्यभान के अनुसार जब उन्होंने अपना परिचय दिया तो वह लोग उनके साथ अभद्र भाषा का प्रयोग करने लगे और अपनी गाड़ी में बैठा लिया और कहने लगे कि अभी तुमको रास्ते में ठीक करेंगे लेकिन कुछ दूर ले जाने के बाद रास्ते में ही छोड़ दिया गया। मामले में जिला संयोजक द्वारा भी एसीपी को शिकायती पत्र दिया गया है। इस संबंध में जानने के लिए जब एसीपी का फोन मिलाया गया तो वह नहीं उठा। थाना प्रभारी बंथरा ने बताया है कि घर बनाने को लेकर दो पक्षों में विवाद हुआ था जिस पर डायल 112 पहुंची थी। किसी भी प्रकार की शिकायत की जानकारी होने पर जांच पड़ताल की जाएगी।

# जिलाधिकारी ने सौंपा राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेष यादव के निर्देशानुसार समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष जय सिंह 'जयन्त' के नेतृत्व में सांसद आरके चैधरी,प्रदेश उपाध्यक्ष सीएल वर्मा,पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजपाल कश्यप के साथ हजारों की संख्या में कार्यकर्ता पार्टी के जिला कार्यालय कैसरबाग से जिला मुख्यालय तक पैदल मार्च करते हुए जिला मुख्यालय में महामहिम राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन जिलाधिकारी लखनऊ के माध्यम से सौंपा।इस अव सर पर जिलाध्यक्ष जय सिंह 'जयन्त' ने उपस्थित मीडिया कर्मियों/पत्रकारों को बताया कि संसद में गृह मंत्री अमित शाह द्वारा भारतीय संविधान निर्माता करोड़ों दलितों,पिछड़ों,वंचितों के भगवान भारत रत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर जी पर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई है।जिससे देश व प्रदेश में दलित,पिछडों एवं वंचित समाज की भावताओं को गहरा आघात पहुँचा है।गृहमंत्री जी की इस टिप्पणी से दलित पिछड़ों के प्रति भाजपा की संविधान विरोधी मानसिकता प्रकट होती है।समाजवादी पार्टी का मुख्य उद्देष्य लोकतंत्र और संविधान को मजबूत बनाना है जिससे दलित,पिछड़े समाज के जीवन में खुशहाली आये।भारतीय संविधान के जनक बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर जी के विरुद्ध की गई टिप्पणी अति खेदजनक है।जिला समाजवादी पार्टी लखनऊ इकाई भारत के राष्ट्रपति से अनुरोध करती है कि भारत के गृहमंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहब डा भीमराव अम्बेडकर जी पर की गई अपमानजनक टिप्पणी के लिए अतिशीघ्र जनता से माफी मांगे और बाबा साहब डा भीमराव अम्बेडकर पर की गई अपमानजनक टिप्पणी पर गृहमंत्री को मंत्रिमंडल से अतिशीघ्र हटाया जाये।ज्ञापन देने के दौरान पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष फिदा हुसैन अंसारी,पूर्व विधायक गोमती यादव,राजेन्द्र यादव,अम्ब्रीष सिंह पुष्कर,विजय सिंह यादव, विजयश्री गौतम, रूपनारायण,सोनू कनौजिया,राजबाला रावत,जिला निर्वाचन प्रभारी टीबी सिंह,,राष्ट्रीय प्रवक्ता मनोज यादव,यूथ ब्रिगेड राष्ट्रीय सचिव नागेन्द्र सिंह,अधिवक्ता सभा प्रदेश अध्यक्ष सिकन्दर यादव,सांस्कृतिक प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष धर्मेन्द्र सालंकी,जिला उपाध्यक्ष राजकुमार यादव सहित हजारों की संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

## सिटी इंटरनेशनल स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया कार्यक्रम मिंगल ऑल दा वे




कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ, । इन्दिरा नगर स्थित सिटी इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को बड़े हर्षोल्लास के साथ मिंगल ऑल दा वे कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम के तहत लखनऊ के विभिन्न स्कूलों ने इंटरस्कूल प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। इस दौरान स्कूल की फाउंडर डायरेक्टर डा. भारती गांधी, डायरेक्टर डा. सुनीता गांधी और मैनेजिंग डायरेक्टर रॉबर्ट गांधी मौजूद रही। इस मौके पर भारती गांधी ने बताया कि कार्यक्रम के तहत की गईं प्रतियोगिताओं का मुख्य उद्देश्य हर एक बच्चे को सशक्त और उनके आत्मविश्वास को मजबूत करना था। वहीं डायरेक्टर डा. सुनीता गांधी ने बातचीत के दौरान बताया कि सीआईएस उनका ड्रीम प्रोजेक्ट है, यह शिक्षा जगत के क्रांति का प्रतीक है, हम नई तकनीक एल्फा के तहत बच्चों को न ही सिर्फ पढ़ाते हैं बल्कि उनका समग्र विकास हमारी प्राथिमकिताओं में से एक है। मिंगल ऑल दा वे में टाउनहॉल का भी आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों के द्वारा बनाए गए तमाम उपयोगी प्रोजेक्ट्स को डिस्प्ले के लिए रखा गया, इस दौरान बड़ी संख्या में अभिभावकों ने टाउनहॉल में शिरकत की और बच्चों के द्वारा किए गए प्रयासों को सराहा।

## क्रिसमस कार्निवल का आयोजन

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। दिल्ली पब्लिक स्कूल जूनियर ब्रांच गोमती नगर एक्सटेंशन में क्रिसमस कार्निवल का आयोजन किया गया। इसमें छात्र छात्राओ और उनके माता-पिता ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण हांटेड हाउस मैं चाबी किस ताले की ढूंढो तो जानूँ देखो, टॉस द बॉल, ट्रेजर रिंग, तंबोला, वाइब वोल्ट, स्पिन एंड विन एंड स्कोप स्कोप स्कूपिंग लिटिल एडवेंचर पावर टावर विद्यार्थियों और शिक्षिकाओं द्वारा विभिन्न गेम्स स्टॉल का आयोजन किया गया। इस मौके पर लकी ड्रा कूपन भी बांटे गए।

## एसआरएम बिजनेस स्कूल में सफ़लता के मूलमंत्र कार्यक्रम हुआ आयोजित

बीकेटी, लखनऊ । बख्शी का तालाब स्थित एसआरएम बिजनेस स्कूल में एमबीए संकाय द्वाराञ्जसफलता के मूलमंत्रङ्क कार्यक्रम का आयोजन किया गया।इस कार्यक्रम में लूलू मॉल, लखनऊ के ऑपरेशन मैनेजर वासिम खान ने अपने जीवन की प्रेरणादायक सफलता की कहानी साझा की।एमबीए द्वितीय वर्ष के छात्र आशुतोष पांडेय और युगांक प्रताप सिंह ने श्री खान को पौधा भेंट कर उनका औपचारिक स्वागत किया।श्री खान ने अपनी यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि उनकी सफलता कैफ़े कॉफी डे में एक एग्जीक्यूटिव के रूप में शुरू हुई थी।इसके बाद उन्होंने शाहरुख खान की कंपनी किड्ज़ेनिया में कार्य किया और आज वे लूलू मॉल के ऑपरेशन हेड के पद पर कार्यरत हैं।श्री खान ने छात्रों को रिटेल और सेल्स के क्षेत्र की बारीकियों से अवगत कराया और बताया कि ग्राहकों को संतुष्ट करने की कला किसी भी व्यवसाय की नींव होती है। उन्होंने छात्रों को मॉल और अन्य इंडस्ट्रीज में नौकरी प्राप्त करने के टिप्स भी दिए।अपने व्याख्यान के दौरान श्री खान ने एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया ।

# समाधान की मांग के साथ किसानों का आक्रोश, प्रशासन पर दबाव

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ दुबग्गा । भारतीय किसान मजदूर यूनियन दशहरी संगठन द्वारा आज लखनऊ के दुबग्गा क्षेत्र स्थित बसंत कुंज योजना में आयोजित किसान पंचायत में हजारों किसानों ने अपनी समस्याओं को लेकर प्रशासन से तत्काल समाधान की अपील की। पंचायत का उद्देश्य उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों के किसानों की समस्याओं को उजागर करना और उनका समाधान प्राप्त करना था। खासकर उन योजनाओं से प्रभावित किसानों के मुद्दों को प्राथमिकता दी गई। जो आवास विकास परिषद और विकास प्राधिकरण से जुड़ी हैं। इस पंचायत में मुख्य रूप से बसंत कुंज योजना, मोहान रोड योजना, एयरपोर्ट अथॉरिटी से प्रभावित किसान और मोहन लालगंज की वैलनेस सिटी से जुड़े किसानों ने अपनी परेशानियां साझा की। पंचायत का आयोजन शांति और लोकतांत्रिक तरीके से किया गया, जहां किसानों ने खुलकर अपनी समस्याओं को रखा और समाधान की दिशा में तत्काल कदम उठाने की अपील की। पंचायत स्थल पर पहुंचे किसानों की भारी भीड़ ने प्रशासन से शीघ्र न्याय की मांग की।

किसान महापंचायत की अध्यक्षता भारतीय किसान मजदूर यूनियन दशहरी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनीष यादव ने की। पंचायत में हरियाणा, पंजाब और अन्य राज्यों से आए किसान संगठनों ने भी समर्थन दिया। मनीष यादव के साथ पंचायत में प्रमुख नेताओं जैसे हाशिम सिद्दीकी, तारीख सिद्दीकी, इरफान अहमद, जुबेर अहमद, आकाश रावत, रजनीश कुमार, सोनू यादव, नेहाल अहमद, राहुल यादव, उर्मिला रावत आदि ने किसानों के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया।

**बसंत कुंज योजना से प्रभावित किसानों की गंभीर समस्याएं**

किसानों ने मुख्य रूप से बसंत कुंज हरदोई रोड योजना से संबंधित कई गंभीर मुद्दों को उठाया। 1981 में भूमि का अधिग्रहण होने के बावजूद अब तक उसे विकसित नहीं किया गया। किसानों का कहना है कि भूमि अधिग्रहण के समय जो अनुबंध हुआ था, उसके बावजूद उन्हें उचित प्रतिकर और मुआवजा नहीं मिला।

1. भूमि अधिग्रहण और प्रतिकर: किसानों का आरोप है कि 1981 में भूमि का अधिग्रहण किया गया था, लेकिन आज तक उनकी भूमि को विकसित नहीं किया गया और उन्हें उचित प्रतिकर नहीं दिया गया। 1986 में भूमि के प्रतिकर पर जो निर्णय लिया गया था, वह आज तक लागू नहीं हो सका।

2. सुलह समझौते का मुद्दा: कई किसानों को सुलह समझौते के आधार पर मुआवजा दिया गया, लेकिन कई किसानों को अभी तक उनका उचित प्रतिकर नहीं मिला। मनीष यादव ने कहा कि 2013 में लागू भूमि अधिग्रहण कानून के तहत किसानों को उनका वाजिब मुआवजा मिलना चाहिए।

3. नये भूमि अधिग्रहण कानून का पालन: नया कानून किसानों को बाजार मूल्य का दोगुना प्रतिकर देने की बात करता है, लेकिन एलडीए द्वारा किसानों को बहुत कम मूल्य पर भुगतान किया जा रहा है। यह न्यायसंगत नहीं है।

4. एलडीए का भूमि पर कब्जा: किसानों ने आरोप लगाया कि एलडीए उनकी भूमि पर कब्जा कर रहा है और बिना विकास के भूमि को बाहरी बिल्डरों को बेचने की कोशिश कर रहा है। किसान इस बात से नाराज हैं कि उनकी भूमि को बहुत कम मूल्य पर अधिग्रहित किया जा रहा है, जबकि उसकी बाजार कीमत काफी अधिक हो चुकी है।

5. स्थानीय लोगों की समस्या: पंचायत में किसानों ने बताया कि उनका गांव और आसपास का क्षेत्र उजड़ने की कगार पर है। स्थानीय लोग भयभीत हैं और एलडीए की भूमि कब्जे की प्रक्रिया से परेशान हैं। किसानों का कहना है कि यदि इस समस्या का जल्द समाधान नहीं किया गया तो हजारों परिवारों का भविष्य अधर में लटक जाएगा।

किसानों का आह्वान: प्रशासन से शीघ्र न्याय की मांग

किसान पंचायत में शामिल किसानों ने प्रदेश सरकार से अपील की कि उनके मामलों में शीघ्र निर्णय लिया जाए और उन्हें न्याय मिले। मनीष यादव ने कहा कि यह समय है जब सरकार को किसानों की समस्याओं को गंभीरता से लेकर उनका समाधान करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि भूमि अधिग्रहण और मुआवजा प्रक्रिया में पारदर्शिता लानी चाहिए, ताकि किसानों को उनका हक मिल सके।

किसान संगठनों की प्रतिबद्धता

किसान नेताओं ने इस आंदोलन को जारी रखने की बात कही, ताकि किसानों को उनका हक और न्याय मिल सके। पंचायत में यह स्पष्ट संदेश दिया गया कि किसानों की आवाज दबने नहीं दी जाएगी, और वे प्रशासन पर दबाव बनाए रखेंगे, ताकि उनके मुद्दों का समाधान हो सके। किसान पंचायत में शामिल नेताओं और कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिया कि वे किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए लगातार संघर्ष करेंगे।

# छूटे पात्र लाभार्थियों के बनेंगे गोल्डन कार्ड, 04 जनवरी तक चलेगा विशेष अभियान : अधीक्षक डॉ. अमित बाजपेई

कैनविज टाइम्स संवाददाता

**डोर टू डोर अभियान के तहत छूटे पात्र लाभार्थियों के बनेंगे आयुष्मान कार्ड – अधीक्षक डॉ. अमित बाजपेई**

लखीमपुर-खीरी।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की महत्वकांक्षी आयुष्मान योजना को जन-जन तक पहुंचाने का काम उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया जा रहा है इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश में ज्यादा से ज्यादा लोगों को आयुष्मान योजना का लाभ दिलाने के लिए उत्तर प्रदेश के स्वास्थ विभाग द्वारा हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं जिससे कि आयुष्मान योजना का लाभ उन सभी लोगों को मिल पाए जो आर्थिक तौर पर कमजोर हैं और जिन्हें बेहतर इलाज नहीं मिल पा रहा है। छूटे लाभार्थियों की तलाश कर 21 दिसंबर से 04 जनवरी तक बनाया जाएगा आयुष्मान कार्ड आयुष्मान भारत योजनांतर्गत पात्र लाभार्थियों के गोल्डन कार्ड बनाया जाना शासन की शीर्ष प्राथमिकताओं में से एक है इसी क्रम में मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. संतोष गुप्ता के दिशा-निर्देश पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फरधान में अधीक्षक डॉ अमित बाजपेई की अध्यक्षता में सम्बंधित स्वास्थ्य कर्मियों की बैठक आयोजित की गई जिसमें डॉ अमित बाजपेई ने कहा गोल्डन कार्ड आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत छूटे हुए पात्र लाभार्थियों के लिए गोल्डन कार्ड बनाए जाने है राज्य स्तर से दिनांक 19 सितंबर 2024 को प्राप्त डाटा के मुताबिक जनपद खीरी में 06 व उससे अधिक यूनिट के पात्र गृहस्थी राशनकार्ड धारकों मे से 309577 व अन्त्योदय कार्ड धारकों मे से 159421 पात्र लाभार्थियों के आयुष्मान कार्ड बनाया जाना बाकी है जो सीएचसी क्षेत्र के सभी गांवों में 21 दिसंबर 2024 से दिनांक 04 जनवरी 2025 तक एक विशेष अभियान चलाया जाएगा जिसमें सभी छूटे हुए पात्र लाभार्थियों के शत-प्रतिशत आयुष्मान कार्ड बनाए जाएंगे अभियान के दौरान आशा/आशा संगिनी एवं एएनएम के द्वारा कोटेदार से समन्वय स्थापित करते हुए ग्राम पंचायतों में गल्ला वितरण स्थल पर आयुष्मान मोबाइल एप के माध्यम से आयुष्मान कार्ड बनाए जाएंगे सीएचसी अधीक्षक डॉ अमित बाजपेई ने कहा कि सभी छूटे परिवारों की विस्तृत सूची ईमेल व वाट्स एप के माध्यम से सभी को पुनः प्रेषित की गई है। डॉ. अमित बाजपेई ने की अपील- आयुष्मान कार्ड बनाने से छूटे सभी पात्र लाभार्थी बनवाएं कार्ड मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ संतोष गुप्ता के दिशा निर्देशन में फरधान सीएचसी अधीक्षक डॉ. अमित बाजपेई ने आयुष्मान कार्ड बनाने से छूटे सभी पात्र लाभार्थियों से अपने कार्ड बनवाने का आग्रह किया है।

# सांडा पावर हाउस के बेलगाम संविदाकर्मी के कारनामे से सरकार की छवि हो रही धूमिल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

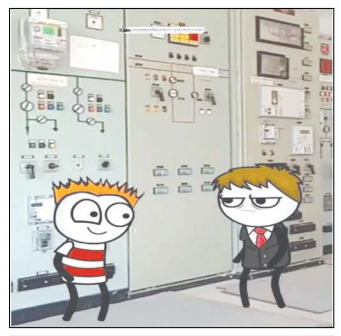

**संविदाकर्मी के द्वारा संग्रह अमीन से किया गया अमर्यादित व्यवहार ,क्षेत्र में बना चर्चा का विषय,किसानों, मजदूरों,महिलाओं के बाद सरकारी कर्मचारियों से दुर्व्यवहार पर आमादा विद्युतकर्मी**

सकरन । क्षेत्र सकरन के विद्युत उपकेन्द्र साण्डा में करीब 12 वर्षो से जमे आउटसोर्स लाईनमैन के रूप में कार्य कर रहे दीपक कुमार उर्फ दीपू का दबदबा तो देखिये कि मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लखनऊ के प्रबंध निदेशक के आदेश होने कि ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत उन आउटसोर्स श्रमिक जो विगत 5वर्ष से एक ही उपकेन्द्र पर कार्यरत हैं उनका स्थानांतरण सुदूर बिजलीघर में किया जाये ।बावजूद इसके इस आदेश का असर सीतापुर के उन आउटसोर्स/ संविदा कर्मचारियों पर लागू नहीं हो सका जो अपने जेई को खुश करने में सफल रहे । उसमें एक नाम संविदाकर्मी दीपक कुमार उर्फ दीपू का भी है ज्ञात हो कि उपकेन्द्र साण्डा में कार्यरत आउटसोर्स संविदाकर्मी दीपक कुमार उर्फ दीपू जो कि बिजली बिल कम कराने के नाम पर इन दिनों सीधे-साधे उपभोक्ताओं से सम्पर्क साधकर अपनी पहुँच का हवाला देते हुये अवैध वसूली कर रहा है । इसके तेवर इतना गरम है कि जो उपभोक्ता इसका कहना नहीं मान रहा उस उपभोक्ता का काम नही हो पा रहा । ताजा मामला यह है कि इसने फोन करके बिसवाँ तहसील के संग्रह अमीन को भी अर्दब में लेने की कोशिश की जिस पर संग्रह अमीन ने आपत्ति की तो इसने

अमर्यादित भाषा शैली में बात की जिससे संग्रह अमीन को मानसिक पीड़ा पहुंची है । इस घटना की किसान नेता प्रमोद वर्मा ने कटुशब्दों में निन्दा करते हुये कहा कि ऐसे दबंग, भ्रष्ट , रिश्वतखोर संविदाकर्मी के विरूद्ध शीघ्र ही जिलाधिकारी सीतापुर से शिकायत की जायेगी। इसी कड़ी में बिजलीघर के एक संविदाकर्मी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि संविदाकर्मी दीपक कुमार उर्फ दीपू का संरक्षण एक विभागीय लाईनमैन करता रहा है बताते चले कि लगभग 7 वर्ष पहले मेसर्स बजाज कम्पनी ने बिजली विभाग में ठेका लिया था जिसमें दीपक कुमार उर्फ दीपू ने बिजली विभाग में पहले से ही संविदा लाईनमैन के रूप में कार्यरत रहते हुये मेसर्स बजाज कम्पनी में भी काम किया है इस प्रकार एक साथ दो अलग अलग कम्पनी में इस धोखेबाज संविदाकर्मी दीपक कुमार उर्फ दीपू ने काम किया है जो कि धोखाधड़ी के अन्तर्गत आता है लेकिन विभाग के धृतराष्ट्रों को कुछ दिखायी नहीं पड़ा। कमीशन के खेल में दीपू का नाम अव्वल रहता है जो केस कोई हल नहीं करा पाता दीपू उसे चुटकी बजाते हल करवा देते हैं। यदि ठीक ढंग से इन भ्रष्ट, धोखेबाज, कदाचार में लिप्त संविदाकर्मी दीपक कुमार उर्फ दीपू के कारनामों की पड़ताल विद्युत विभाग के जिम्मेदारों द्वारा करा ली जाये तो इसके पेटीएम, गूगल पे, आधार से लिंक बैंक खातों की जांच हो जाये तो पूरा मामला जगजाहिर हो जायेगा। इसी प्रकरण में किसान नेता प्रमोद वर्मा ने खुले शब्दों में विद्युत विभाग के जिम्मेदारों को चेतावनी देते हुये कहा है कि इस महाभ्रष्ट संविदाकर्मी दीपक कुमार उर्फ दीपू को नौकरी से बर्खास्त किया जाये तथा विद्युत विभाग द्वारा काली सूची में नाम डाल दिया जाये और यदि इसके विरूद्ध कठोर कार्रवाई नहीं होती है तो पूरे प्रकरण को जिलाधिकारी सीतापुर के संज्ञान में लाया जायेगा तथा जब तक सभी लापरवाहों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई नहीं हो जाती हम क्षेत्रीय किसान बन्धुओं के साथ आमरण अनशन करेंगे।

# मुख्यमंत्री युवा उद्यमी मंडलीय कार्यशाला का शुभारंभ

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा । योगी सरकार द्वारा संचालित सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम उद्यमी का लाभ युवा ले सकते हैं।मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के अंतर्गत प्रदेश में युवाओं को वित्त पोषित कर सूक्ष्म इकाईयों की स्थापना कराने के लिए चार वर्ष में बिना ब्याज के योजना के तहत बिना गारंटी पांच लाख रुपये का लोन मिलेगा।योजना के तहत आवेदन के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता कक्षा आठ निर्धारित की गई है। इंटर पास आवेदकों को प्राथमिकता मिलेगी।

दस प्रतिशत टर्म लोन के रूप में अनिवार्य उपायुक्त उद्योग बाबूराम यादव ने बताया कि इस योजना में परियोजना लागत का दस प्रतिशत टर्म लोन के रूप में अनिवार्य होगा।ऋण में भूमि का क्रय सम्मिलित नहीं होगा।सामान्य वर्ग के लिए पद्रह प्रतिशत,अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए 12.5 प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति जनजाति,दिव्यांगजन के व्यक्तियों को दस प्रतिशत स्वयं का अंशदान जमा कराना होगा।उद्योग व सेवा क्षेत्र की अधिकतम पांच लाख रुपये तक की परियोजनाओं (निगेटिव लिस्ट वाले उत्पाद उद्यम को छोड़कर) के ऋण पर अनुदान निर्धारित किया जाएगा, परियोजना की लागत का पांच लाख या जो भी कम हो का दस प्रतिशत मार्जिन मनी (सब्सिडी) के रूप में देय होगा।लिए गए ऋण के शत प्रतिशत ब्याज का उपादान वित्त पोषण की तिथि से अगले चार वर्षों तक देय होगा।ब्याज उपादान त्रैमासिक आधार पर देय होगा।

यह शर्तें जरूरी

उन्होंने बताया कि आवेदक प्रदेश का निवासी होना चाहिए एवं उसकी आयु 21 से 40 वर्ष होनी चाहिए। आवेदक न्यूनतम कक्षा आठ उर्त्तीण होना चाहिए। आवेदक द्वारा सरकार द्वारा संचालित प्रशिक्षण योजनाओं में प्रशिक्षण प्राप्त किया हो अथवा किसी मान्यता प्राप्त विद्यालय शैक्षणिक संस्थान से कौशल संबंधित प्रमाण पत्र प्राप्त किया हो।पूर्व में पीएम स्वनिधि योजना के अतिरिक्त राज्य अथवा केंद्र सरकार द्वारा संचालित किसी अन्य योजना में ब्याज अथवा पूंजी उपादान का लाभ प्राप्त न किया होगा।आवेदन केवल आनलाइन स्वीकार किए जाएंगे

# बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजनान्तर्गत महिला कल्या विभाग की ओर से केक काटकर कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर । इस अवसर पर उप जिलाधिकारी राखी वर्मा जी व जिला प्रोबेशन अधिकारी सुश्री प्रिया पटेल जी द्वारा बालिकाओं के जन्म पर केक कटवाकर उनकी माँ को बेबी किट, मिष्ठान, पम्पलेट, कम्बल, वनजात बालिकाओं को ऊनी फ्रॉक सेट देकर सम्मानित किया। साथ ही नवजात बच्चियों के माता-पिता को एसडीएम राखी वर्मा द्वारा यह भी बताया गया कि यहाँ से जाने के बाद कन्या सुमंगला योजनांतर्गत आवेदन कर दें। सभी जनसेवा केंद्रों पर यह सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा सभी बच्चियों का नियमित टीकाकरण कराते रहें। कार्यक्रम में जिला प्रोबेशन अधिकारी सुश्री प्रिया पटेल ने बताया कि बेटियाँ प्रकृति का अमूल्य उपहार हैं, सरकार द्वारा चलाए जा रहे सुकन्या समृद्धि योजना का मुख्य उद्देश्य सभी बालिकाओं के भविष्य को सुरक्षित करना है।महिलाओ को विभाग द्वारा चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। वन स्टॉप सेंटर की केंद्र प्रबंधक दीपिका नाग द्वारा वन स्टॉप सेंटर पर मिलने वाली सहायता के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डा0 सुनीता कश्यप ने महिलाओं को उनके स्वास्थ्य संबन्धी जानकारी देते हुए सभी नवजात कन्याओं की माता व पिता को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में वन स्टाप सेंटर के समस्त कर्मचारी उपस्थित रहे।

## जनपद की सभी सात तहसीलो मे आयोजित हुआ सम्पूर्ण समाधान दिवस

सीतापुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। जनता की शिकायतों एवं समस्याओं को पूर्ण गुणवत्ता के साथ निस्तारित करने के उद्देश्य से जनपद की सभी सात तहसीलों में शनिवार को सम्पूर्ण समाधान दिवस आयोजित किया गया। तहसील महोली में मा0 विधायक महोली शशांक त्रिवेदी, जिलाधिकारी अभिषेक आनंद एवं पुलिस अधीक्षक चक्रेश मिश्र की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। शिकायतकर्ताओं की शिकायतों को एक-एक करके सुना गया एवं जनता की शिकायतों एवं समस्याओं को समयान्तर्गत गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश के साथ संबंधित अधिकारियों को अंतरित किया। सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान ग्राम हाजीपुर निवासी एतवारी पुत्र कढ़िले द्वारा खतौनी में नाम सही किये जाने हेतु प्रार्थना पत्र दिया गया जिसे जिलाधिकारी के निर्देश पर धारा-38 में वाद दर्ज कर मौके पर ही संशोधित खतौनी वितरित की गयी। इसके साथ ही तहसील परिसर में जरूरतमंदों को कम्बल वितरण भी किया गया।

सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान जिलाधिकारी ने सभी विभागाध्यक्षों और अधिकारियों को निर्देश दिये कि लाभार्थीपरक योजनाओं से संबंधित प्रकरणों का तेजी से निस्तारण किया जाये, जिससे पात्रों को समय से लाभान्वित किया जा सके। जिलाधिकारी ने कहा कि आई0जी0आर0एस0 पोर्टल पर प्राप्त होने वाली शिकायतों का त्वरित गति से निस्तारण हो। उन्होंने कहा कि शिकायतकर्ता द्वारा जो शिकायत की गई हैं उसका निस्तारण संबंधित अधिकारी मौके पर पहुंचकर गुणवत्ता पूर्ण करें।

सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान उपजिलाधिकारी महोली शशि बिन्द कुमार द्विवेदी,पुलिस क्षेत्राधिकारी आलोक प्रसाद, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 हरपाल सिंह सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। तहसील महोली में सम्पूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर कुल 69 शिकायतों में से 12 का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। इसी प्रकार से जनपद की अन्य तहसीलों में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में तहसील लहरपुर में प्राप्त 46 प्रार्थना पत्रों में से 03, तहसील सिधौली में प्राप्त 78 प्रार्थना पत्रों में से 09, तहसील बिसवां में प्राप्त 35 प्रार्थना पत्रों में से 05, तहसील महमूदाबाद में प्राप्त 54 प्रार्थना पत्रों में से 04, तहसील मिश्रिख में प्राप्त 43 प्रार्थना पत्रों में से 05, तहसील सदर में प्राप्त 26 प्रार्थना-पत्रों में से 06 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। शेष बची हुयी शिकायतों को पृष्ठांकित कर एक सप्ताह के अन्दर संबंधित अधिकारी को निस्तारित करने के निर्देश दिये गये।

### जनपद की सभी सात तहसीलो मे आयोजित हुआ सम्पूर्ण समाधान दिवस

सीतापुर कैनविज टाइम्स संवाददाता । जनता की शिकायतों एवं समस्याओं को पूर्ण गुणवत्ता के साथ निस्तारित करने के उद्देश्य से जनपद की सभी सात तहसीलों में शनिवार को सम्पूर्ण समाधान दिवस आयोजित किया गया। तहसील महोली में विधायक महोली शशांक त्रिवेदी, जिलाधिकारी अभिषेक आनंद एवं पुलिस अधीक्षक चक्रेश मिश्र की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। शिकायतकर्ताओं की शिकायतों को एक-एक करके सुना गया एवं जनता की शिकायतों एवं समस्याओं को समयान्तर्गत गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश के साथ संबंधित अधिकारियों को अंतरित किया। सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान ग्राम हाजीपुर निवासी एतवारी पुत्र कढ़िले द्वारा खतौनी में नाम सही किये जाने हेतु प्रार्थना पत्र दिया गया जिसे जिलाधिकारी के निर्देश पर धारा-38 में वाद दर्ज कर मौके पर ही संशोधित खतौनी वितरित की गयी। इसके साथ ही तहसील परिसर में जरूरतमंदों को कम्बल वितरण भी किया गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान जिलाधिकारी ने सभी विभागाध्यक्षों और अधिकारियों को निर्देश दिये कि लाभार्थीपरक योजनाओं से संबंधित प्रकरणों का तेजी से निस्तारण किया जाये, जिससे पात्रों को समय से लाभान्वित किया जा सके। जिलाधिकारी ने कहा कि आई0जी0आर0एस0 पोर्टल पर प्राप्त होने वाली शिकायतों का त्वरित गति से निस्तारण हो। उन्होंने कहा कि शिकायतकर्ता द्वारा जो शिकायत की गई हैं उसका निस्तारण संबंधित अधिकारी मौके पर पहुंचकर गुणवत्ता पूर्ण करें। सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान उपजिलाधिकारी महोली शशि बिन्द कुमार द्विवेदी,पुलिस क्षेत्राधिकारी आलोक प्रसाद, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 हरपाल सिंह सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

# रेडिको खेतान परिसर में एटीएम का हुआ उद्घाटन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर। कंदूनी मास्टरबॉग दिनाँक 21/12/2024 भारतीय स्टेट बैंक की कंदूनी शाखा रेडिको खेतान परिसर में एटीएम उदघाटन रेडिकों के प्लांट हेड श्री हरि शंकर शुक्ला सीनियर जनरल मैनेजर फाइनेंस श्री अनिल जैन सीनियर मैनेजर फाइनेंस अभिनंदन मिश्रा भारतीय स्टेट बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री नीरज राय मुख्य प्रबंधक श्री राजेश शुक्ला शाखा प्रबंधक श्रीमती अंकित शुक्ला रोकड़ अधिकारी श्री नितेश कुमार श्री दीपनारायण सिंह, दिपोली, जी तथा अन्य सैकड़ों लोग उपस्थित रहे रेडिको खेतान के द्वारा यह एक सराहनीय कार्य हुआ है इस फैक्ट्री में काम कर रहे लोगों में बहुत ही खुशी दिखाई पड़ी।

### सिधौली रामपाल भार्गव समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव एडवोकेट को सिधौली पुलिस ने किया नजर बंद

सीतापुर। विरोध प्रदर्शन के आगाह से प्रशासन द्वारा नेताओं पर कड़ी निगरानी रखते हुए उनके निज निवास पर ही नजर बंद किया गया। प्रशासन की कड़ी सुरक्षा के बीच अपने निज निवास पर नजर विरोध पपदर्शन के आगाह से प्रशासन द्वारा नेताओं पर कड़ी निगरानी रखते हुए उनके निज निवास पर ही नजर बंद किया गया। प्रशासन की कड़ी सुरक्षा के बीच अपने निज निवास पर नजर कैद प्रदेश सचिव रामपाल भार्गव द्वारा कुछ मीडिया बंधुओ से प्रेस वार्ता में बताया गया। संविधान निर्माता बाबा साहब पर की गई टिप्पणी बहुत ही निंदनीय है। अमर्यादित बयान बाजी का हम लोग विरोध करते हैं। और सरकार से अमित शाह जी को बर्खास्त करने की मांग करते हैं। यदि ऐसा नहीं किया गया तो हम लोग हर संभव क्रांतिकारी प्रदर्शन करने के लिए बाध्य होंगे।

### मेरी पंचायत मेरा अधिकार बैठक का आयोजन

लहरपुर सीतापुर । विकासखंड परसेंडी की ग्राम पंचायत राही में ग्रामीणों को सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ देने के उद्देश्य से मेरी पंचायत मेरा अधिकार बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में पंचायत सचिव मनोज कुमार ने बताया उत्तर प्रदेश सरकार एवं केंद्र सरकार के द्वारा विभिन्न योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराने व ग्रामीणों का उसका लाभ देने के उद्देश्य से विभिन्न योजनाओं के बारे में जागरूक किया गया उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री आवास, शौचालय आदि योजनाओं का लाभ पाने के लिए अपना नाम अंकित करा दें जिससे उनका लाभ प्राप्त हो सके, बैठक में शौचालयों के लिए 65 आवास के 210, राशन कार्ड के 55, किसान सम्मान निधि के 25, मुख्यमंत्री आवास के 25 आवेदन बैठक मेंप्त हुए। बैठक में ओम प्रकाश शुक्ला प्रधान प्रतिनिधि, मनोज कुमार त्रिवेदी, लेखपाल अरुणेश मिश्रा, शिवानी मिश्रा पंचायत सहायक, पप्पू कनौजिया, हेमराज पंचायत मित्र, कल्पना त्रिवेदी, गगा प्रसाद, विरेश मिश्रा पूर्व प्रधान सरस्वती मिश्रा, राजेश राठौर, आदि उपस्थित थे।

# समाज के प्रेरणास्रोत रहे समाजसेवी दिलीप शुक्ला का विकल्प कौन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लहरपुर ( सीतापुर ) । जहाँ एक तरफ समाज का खुली बांहो से नेतृत्व करने वाला स्वर सदा के लिए शांत हो गया लेकिन उसकी असाधारण अनुपस्थित एक यक्ष प्रश्न को जन्म दे ही गयी ? चाहे वह हजारों कांवरियो के जत्थे को सुव्यवस्थित ढंग से प्रसाद की व्यवस्था कराना हो या फिर वार्ड नं 7 की राजनीति की रणनीति का हिस्सा बनना हो या समाज के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति के हक़की लड़ाई का हिस्सा बनना हो ? 1995 मे स्वयं राजनीति के सफर की शुरुवात करने वाला निडर और साहसी व्यक्तित्व स्व. पं रामदयाल शुक्ला के छोटे बेटे दिलीप शुक्ला कई चुनौती से टकराकर लहरपुर की पंचायत मे ज़ब बैठा तो कई महारथियों अपना होश खो बैठे लेकिन दिलीप शुक्ला ने उस पायदान पर चढ़ने के बाद उतरने का नही बल्कि निरंतर आगे बढ़ने का ही प्रयास किया उसी बीच समाज मे स्थापित कई संस्थाओ और समितियों के अध्यक्ष भी रहें समय बीतता रहा 5 वर्षो तक वार्ड की रहनुमाई करने के बाद महिला सीट पर अपनी माता को रिकॉर्ड मतों से विजयी बनाने की रणनीति हो या उस समय की ताकतवर तत्कालीन सपा सरकार से टकराकर अपनी भाभी को नगर पालिका का उपाध्यक्ष बनवाना यह सब उनके कुशल नेतृत्व और राजनैतिक चतुरता को बखूबी बयां करती नजर आई थी तदुपरान्त वह व्यक्तित्व ज़ब राजनैतिक से समाज के कार्यक्रमो मे अपनी जान फूंकी तो विभिन्न वर्गो के मोतियों को पिरोकर उनकी माला बनाई और सुंदर और भव्य समिति का निर्माण किया जो शिव शक्ति सनातन सेवा समिति बनकर काँवरियो के प्रसाद और ठहरने की सेवा का जिम्मा अपने कंधो पर लेती नजर आने लगी दशकों से यह कार्यक्रम जिले मे चर्चा का विषय बना रहता है। इसके लिए शासन प्रशासन भी सदैव उनके कंधे से कंधा मिलाकर सारथी की भांति खड़ा नजर आता रहा लेकिन उनकी असमय मृत्यु के बाद यह प्रश्न बना हुआ है ।कि इन सभी राजनैतिक और सामाजिक आयोजन का हिस्सा कौन बनेगा जो स्वयं मे दिलीप शुक्ला की विचारधारा और नेतृत्व की बागडोर पकड़ उस कार्यक्रम को शीर्षता प्रदान करेगा यह यक्ष प्रश्न समाज मे एक चुनौती बनकर खड़ा है । अब इस प्रश्न को उत्तर मिलेगा कि यह प्रश्न एक प्रश्न की भांति स्तम्भ बनकर खड़ा रहेगा यह भविष्य के गर्भ मे है।

# वार्षिकोत्सव मे 7वीं रैंक प्राप्त गौरी सिंह को विशेष सम्मान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

मछरेहटा-सीतापुर बंशीधर युवन पब्लिक इण्टर कालेज मछरेहटा मे मेधावी छात्र अलंकरण समारोह एवं बालमेला सांस्कृतिक कार्यक्रमो के साथ धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर विधायक रामकृष्ण भार्गव ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। यूपी बोर्ड परीक्षा मे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण मेधावी छात्रों को प्रतीक चिह्न व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।इस अवसर पर यूपी बोर्ड परीक्षा मे 7 वीं रैंक प्राप्त छात्रा गौरी सिंह को विशेष रूप से सम्मानित किया गया । वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित बालमेले मे बच्चों ने अनेक प्रकार के स्टॉलो को सजाकर लोगों का मन मोह लिया। छोटे-छोटे बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से लोगो को मन्त्रमुग्ध कर दिया। विद्यालय के प्रबंधक हरीश शुक्ला ने आए हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया साथ ही अजीत तिवारी ''राहुल '' के सफल संचालन मे प्रधानाचार्य विजय त्रिवेदी ने आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर अरुणेश, मिश्र, अजय भार्गव, राम गोपाल अवस्थी, झनकार नाथ शुक्ल, राम सागर पाण्डेय, अभिषेक सिंह, सुशील शुक्ला,अंजनी

# योगी से मिलकर चहक उठे स्कूली बच्चे

एजेंसी

गोरखपुर। अनुशासित शासन व्यवस्था के लिए देश-दुनिया में सुप्रसिद्ध मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के व्यक्तित्व का एक खास पहलू है, बाल प्रेम। देश के भविष्य के बीच सीएम योगी, वर्तमान के अपने निजी व्यस्तता में भी समय निकाल ही लेते हैं। प्रोटोकॉल से इतर मुलाकात, प्यार-दुलार, आशीर्वाद के बीच बच्चों की पढ़ाई से जुड़ी बातें करना उन्हें आत्मीय संतोष देता है। तभी तो कानून व्यवस्था को लेकर सख्त छवि वाले मुख्यमंत्री से मिलकर बच्चे चहक उठते हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बाल प्रेम और बच्चों के साथ परस्पर जुड़ाव की अनुभूति का एक दृश्य शनिवार दोपहर बाद गोरखपुर सर्किट हाउस परिसर में जीवंत हुआ। सीएम योगी आजीविका मिशन के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए गोरखपुर आए। इसे लेकर शनिवार को गोरखपुर सर्किट हाउस परिसर के हेलिपैड पर प्रोटोकॉल और सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद थी। इसी बीच जैसे ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का हेलीकॉप्टर यहां लैंड हुआ, परिसर से सटे और एक बंद गेट से उस पार पड़ने वाले आंबेडकर पार्क में पिकनिक मनाने आए स्कूली बच्चों का उत्साह और उल्लास आसमान छूने लगा। हवा में लहराते सैकडों बच्चों के हाथ देख और बालकंठ से समवेत गुंजित अभिवादन की आवाज सुन सीएम योगी पहले से तय कार्यक्रम स्थल (योगिराज बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह) जाने की बजाय मुस्कुराते हुए बच्चों के पास पहुंच गए। फिर शुरू हुआ वही सिलसिला जो मुख्यमंत्री को अलहदा बनाती है। बाल प्रेम, बच्चों के लिए प्रोटोकॉल से बेपरवाह। आंबेडकर पार्क के बंद गेट के पास बच्चों को प्यार-दुलार, खूब पढ़ने का आशीष तो जमकर हंसी ठिठोली भी। अकस्मात इस आत्मीय मुलाकात-संवाद के बीच बंद गेट से कई बच्चों ने मुख्यमंत्री की तरफ हाथ बढ़ा दिया और सीएम योगी ने भी बिना पल गंवाए अभिभावक सरीखे होकर उनके हाथ थाम लिए।

सर्किट हाउस से सटे आंबेडकर पार्क में पिकनिक मनाने आए स्कूली बच्चों से मिले मुख्यमंत्री

सीएम ने बच्चों से मिलाया हाथ, दुलार के साथ दिया आशीर्वाद

# महाकुंभ में 410 रोडवेज के साथ प्राइवेट बसें भी जायेंगी लगायी

एजेंसी

इटावा। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में अगले साल जनवरी माह में शुरू होने जा रहे महाकुंभ स्नान में इटावा जिले से 410 रोडवेज बसें से सीधे प्रयागराज जाएगी।

परिवहन निगम के क्षेत्रीय प्रबंधक उमेश सीएस आर्य ने शनिवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि शहरवासियों को सीधे प्रयागराज भेजने के लिए प्राइवेट बसों को अधिग्रहित किया जाएगा, इसकी जिम्मेदारी एआरटीओ को सौंपी गई है। इसके लिए प्राइवेट बस अड्डा पर चिह्नित किया जाएगा, जिससे शहरवासी एक स्थान से सीधे बस से चढ़ सकेंगे। परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने महाकुंभ को लेकर वीडियो कांफ्रेंसिंग की। उन्होंने जिले के अधिकारियों से महाकुंभ स्नान को लेकर समीक्षा की। परिवहन निगम के क्षेत्रीय प्रबंधक ने बताया कि इटावा में द्वितीय चरण में 18 जनवरी से 23 फरवरी तक 410 बसें सीधे प्रयागराज भेजी जाएंगी। इसको लेकर तैयारियां युद्ध स्तर पर चल रही हैं। इसमें 210 में कायाकल्प किया जा चुका है। अन्य बसों का मरम्मत कार्य चल रहा है। परिवहन मंत्री ने कहा कि जिले से सीधे प्रयागराज जाने वाले यात्रियों को आने-जाने में कोई असुविधा न हो। इसके लिए विभागीय अफसरों की ड्यूटी लगाई जाए। साथ ही बसों की कमी न हो, इसलिए प्राइवेट बसों को भी अधिग्रहित किया जाए। इसके लिए एआटीओ को जिम्मेदारी सौंपी गई। एआरटीओ प्रदीप कुमार देशमणि ने बताया कि महाकुंभ के दौरान जिले में प्राइवेट बसों को पकड़ा जाएगा। साथ ही एक ही स्थान से यात्रियों को सीधे प्रयागराज ले जाएगा और उतारा जाएगा। इससे उन्हें आने-जाने में कोई दिक्कत न हो। परिवहन मंत्री ने महाकुंभ स्नान में श्रद्धालुओं को कोई दिक्कत न हो। इसके लिए उनकी सुख सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जाए। इसमें किसी प्रकार की कोई लापरवाही मिलती है तो जिम्मेदार पर कार्रवाई तय होगी। इस मौके पर सदर एसडीएम राघव विक्रम सिंह, आरएएम उमेश सीएस आर्य, एआरएम मुकेश चंद्र अग्रवाल, एआरटीओ प्रदीप कुमार समेत कई अफसर मौजूद रहे।

## विश्व ध्यान दिवस पर विशेष ध्यान सत्र में शामिल हुए बटुक और वेदपाठी ब्राम्हण

वाराणसी। विश्व ध्यान दिवस पर शनिवार को छित्तुपुर सामनेघाट तारानगर कॉलोनी स्थित वेद मंदिर में विशेष ध्यान सत्र का आयोजन किया गया। मंदिर परिसर में वैदिक एजुकेशनल रिसर्च सोसायटी के बैनर तले वैदिक ब्राम्हणों और बटुकों ने ध्यान लगाया। ज्योतिर्विद पंडित शिवपूजन चतुर्वेदी ने ध्यान को सुलभ बनाने के लिए अपने विशेषज्ञों के गहन शोध के बाद खोजी गई ''वाईटल सेल्फ मेडिटेशन'' सहज ध्यान विधि का अभ्यास कराया। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस मनाने की घोषणा की है। यह घोषणा प्राचीन भारतीय ज्ञान की श्रेष्ठता और वैज्ञानिकता का वैश्विक उद्घोष है। यह इस बात का प्रमाण है कि दुनिया ध्यान के लाभकारी प्रभावों को कितना महत्व देती है। यह विशेष कार्यक्रम पूरी दुनिया में प्रतिवर्ष मनाया जाएगा, जिससे सभी को ध्यान की सकारात्मक शक्ति का एहसास होगा।

## मेट्रो रेल कॉरपोरेशन उत्तर प्रदेश में असिस्टेंट मैनेजर पद पर चयनित होने से गांव में खुशी की लहर

**राजापाकड़/कुशीनगर, कैनविज टाइम्स संवाददाता।** फ़ाज़िलनगर कसया विकास खंड के एक होनहार का चयन उत्तर प्रदेश मेट्रो रेल कारपोरेशन में असिस्टेंट मैनेजर के पद पर होने से गांव में खुशी का माहौल है साथ ही ग्रामीणों ने बधाई और शुभकामनाएं दी है। कुड़वा के अलावलपट्टी निवासी ब्रजेश राव के होनहार पुत्र पवन कुमार राव ने 2020 में बी टेक करने के बाद प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लग गए।उत्तर प्रदेश मेट्रो रेल कारपोरेशन के जारी रिजल्ट में पवन कुमार राव का चयन असिस्टेंट मैनेजर के पद पर हुआ है।इससे पूर्व पवन का चयन दिल्ली नगर निगम में जूनियर इंजीनियर के पद पर हुआ है। माता मीना देवी,सहित पूर्व विधायक रजनीकांत मणि त्रिपाठी,ग्राम प्रधान प्रतिनिधि कामोद सिंह,भृगुनाथ श्रीवास्तव, प्रभुनाथ लाल श्रीवास्तव, टोनी पांडेय,संजय सिंह कौशिक,पूर्व ग्रामप्रधान शम्भू कुशवाहा,डॉ चंद्रशेखर सिंह,सतीश चंद्र शर्मा,संदीप सिंह,सोनू सिंह आदि ने बधाई और शुभकामनाएं दी है।

## संदिग्ध परिस्थितियों में मिला युवक का शव

**कुशीनगर, कैनविज टाइम्स संवाददाता।** शनिवार की सुबह हाटा नगर पालिका के वार्ड नं 01 वाघनाथ में बंधन हरिजन के कटरैन सेड में जिऊत पुत्र चन्नू प्रसाद उम्र में 18 वर्ष का शव बरामद हुआ। शव मिलने की सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने स्थलीय निरीक्षण कर शव को अपने कब्जे में लेकर पीएम हेतु भेज दिया और आवश्यक कार्यवाही में जुटी हुई है। युवक अपने साथी गोविंद अन्य युवकों के साथ देर शायं घर से निकला लेकिन देर रात घर नहीं लौटा। जब सुबह लोगों ने घर से कुछ दूर का ट्रेन सेट में युवक का शव देखा तो सनसनी फैल गई। मामले में पुलिस तीन लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।इस संबंध में कोतवाली प्रभारी हाटा सुशील कुमार शुक्ला ने बताया कि पीएम रिपोर्ट आने के बाद आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

## 22 दिसंबर को होगा निशुल्क स्वास्थ्य जांच

**कुशीनगर, कैनविज टाइम्स संवाददाता।** कप्तानगंज विकास खण्ड क्षेत्र अंतर्गत जगदीशपुर बरडीहा में स्थित विद्यार्थी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आज दिनांक 22/12/2024 दिन रविवार को राणा हॉस्पिटल गोरखपुर एवं राज आई हॉस्पिटल गोरखपुर के संयुक्त तत्वाधान में निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया है।जिसमें राणा हॉस्पिटल गोरखपुर तथा राज आई हॉस्पिटल के चिकित्सकों की टीम विद्यार्थी स्नातकोत्तर महाविद्यालय जगदीशपुर बरडीहा के परिसर में प्रातः 9 बजे से सायं 3 बजे तक उपस्थित होकर लोगों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण कर दवा का वितरण करेंगे ।उक्त कैंप में कंबल वितरण भी किया जायेगा।उक्त आशय की जानकारी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ प्रमोद कुमार पाण्डेय ने एक प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से दी है।

## पत्रकार को पितृशोक पत्रकारों व शुभ चिन्तकों ने दी श्रद्धांजली

**कुशीनगर, कैनविज टाइम्स संवाददाता।** कप्तानगंज विकास खण्ड क्षेत्र के ग्राम पकड़ी निवासी दैनिक समाचार पत्र हिन्दस्तान के बरिष्ठ संवाददाता संतोष चौधरी के पिता का शनिवार को हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया है।पत्रकार चौधरी के पिता के निधन की खबर आम होते ही पत्रकारों व शुभचिन्तकों में शोक की लहर दौड़ गई है ।

## राजेश शुक्ला अध्यक्ष शिवप्रसाद पांडे वरिष्ठ महामंत्री निर्विरोध चुने गए

**लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता।** बुद्धेश्वर विकास महासभा के आज होने वाले संगठनात्मक चुनाव में पाच पदों के चुनाव होने थे अध्यक्ष महामंत्री कोषाध्यक्ष उपाध्यक्ष व संगठन महामंत्री का जिसमें संगठन महामंत्री अभिषेक गुप्ता व कोषाध्यक्ष सुदीप तिवारी मिन्टी पहले ही निर्विरोध निर्वाचित हो चुके थे आज चुनाव वाले दिन अध्यक्ष महामंत्री व उपाध्यक्ष के भी दूसरे दावेदारों ने अपना आवेदन वापस लेने की घोषणा की जिससे चुनाव कराने की जरूरत नहीं पड़ी जिससे अध्यक्ष राजेश शुक्ला प्रदेश महामंत्री शिव प्रसाद पांडे उपाध्यक्ष दिनेश कुमार यादव निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए इनके अलावा कई दर्जन लोगों को संरक्षक मंडल व संगठन ने मनोनीत किया आज के कार्यक्रम में मुख्य रूप से मुख्य संरक्षक राम शंकर राजपूत ऋषि चौरसिया अजय त्रिपाठी मुन्ना कल्पेश द्विवेदी अमर त्रिपाठी डॉक्टर घनश्याम पांडे राशिद अली इरशाद अहमद गुड्डू गिरिराज किशोर अग्रवाल बालाजी ढाबा संचालक आर डी पांडे सुनील द्विवेदी अयोध्या प्रसाद शुक्ला राकेश मोहन मिश्रा पूर्व पार्षद तारा चंद्र रावत पार्षद धर्मेंद्र सिंह केके सेठ वीर विक्रम गुड्डू सिंह वीरेंद्र शुक्ला महिला सभा के अध्यक्ष रेखा सेठ ज्योति सिंह वंदना सिंह नीतू पांडे मनोज तिवारी सोनी गौतम रमा राजपूत वंदना राजपूत व्यापार मंडल अध्यक्ष पिंटू गुप्ता काकोरी मोड़ मोहन रोड व्यापार मंडल अध्यक्ष सुरेंद्र पाल सिंह राम गोपाल अवस्थी डॉक्टर धर्मेंद्र वर्मा रुपेश वर्मा ज्ञानचंद काकोरी मोड़ व्यापार मंडल सलाहकार शिवम पांडे सहित सैकड़ो लोगों ने भाग लिया

# वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पडरौना,कुशीनगर। स्थानीय सहकारी समिति स्थान शिवपुर पर नाबार्ड के वित्तीय समावेशन निधि के अन्तर्गत एकदिवसीय वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कृष्ण मोहन पांडेय तथा मुख्य वक्ता कोऑपरेटिव बैंक शाखा कुबेर स्थान के प्रबंधक रायबहादुर वर्मा रहे।

नाबार्ड के वित्तीय समावेशन निधि के अंतर्गत इस एकदिवसीय वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन देवरिया- कसया जिला सहकारी बैंक के द्वारा सहकारी समिति सखवनिया स्थान शिवपुर पर किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रबंधक राम बहादुर वर्मा ने कहा कि समिति की ऋण सीमा में बढ़ोतरी एवं नए गोदाम का निर्माण कराकर समिति के मुनाफ़े को बढ़ावा दिया जाएगा। कृषकों से अधिक से अधिक सदस्य बनने तथा कृषि ऋण लेकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने का आवाहन भी किए। प्रशिक्षक ऋतिक ने कहा कि सहकारी समिति के

सौजन्य से आज वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन यहां किया गया है इसका मूल उद्देश्य कृषक बन्धुओं को जागरूक करना है कृषि लोन राशि को 6 महीने के अंदर जमा करने पर ब्याज दर 3 प्रतिशत लगता है तथा यही ऋण पुराना हो जाने पर अधिक ब्याज देना पड़ता है और इससे कृषक को वित्तीय घाटे का सामना करना पड़ता है। मुख्य अतिथि कृष्ण मोहन पांडेय साइबर फ्रॉड से बचने के लिए किसी को अपना आधार नंबर या ओटीपी न बताएं नहीं तो आप साइबर ठगी के शिकार हो सकते हैं। इसलिए समिति या बैंक पर जमा निकासी करते समय पर्ची पर अपनी धनराशि स्वयं जांच कर ले जिससे डिजिटल फ्रॉड से बचा जा सकता है। समिति के ऋण सीमा की बढ़ोतरी होनी चाहिए इस समिति की जो ऋण सीमा है वह यहां की जनसंख्या के हिसाब से पर्याप्त नहीं है तथा नए गोदाम का निर्माण भी अधिकारियों से करवाने की मांग किए इस अवसर पर कार्यशाला की अध्यक्षता अध्यक्ष अशोक सिंह संचालन कन्हैया तिवारी सचिव ने की।

# रामानुज द्विवेदी को मिला अखिल भारतीय भोजपुरी गौरव सम्मान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर। श्रीनाथ संस्कृत महाविद्यालय हाटा, कुशीनगर में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक व युवा साहित्यकार डा0 रामानुज द्विवेदी को अखिल भारतीय भोजपुरी गौरव सम्मान 2024 से सम्मानित किया गया। इस दौरान उनके भोजपुरी पुस्तक संझा पराती का लोकार्पण भी किया गया।

डा0 द्विवेदी को यह सम्मान पश्चिम बंगाल स्थित भोजपुरी साहित्य विकास मंच एवं प्रगति शोध फाउण्डेशन कोलकाता के संयुक्त तत्त्वावधान में सम-सामयिक विषय लोक साहित्य में मानवीय चितन और प्रतिरोध के स्वर पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में प्रतिक चिन्ह प्रशस्ती-पत्र उन्हें मुख्य अतिथि विजय किशोर पाण्डेय (नेपाल), विशिष्ट अतिथि भोजपुरी साहित्य के ध्वज वाहक प्रो0 डा0 गुरूचरन सिंह की उपस्थिति में मिला। इस दौरान अतिथियों द्वारा उनकी पुस्तक ''संझा पराती'' का लोकर्पण किया गया। इस मौके पर वरिष्ठ साहित्यकार डा0 शैलेष सिंह शौर्य, डा0

जमील अहमद अंसारी, डा0 ओमप्रकाश द्विवेदी, डा0 विद्यासागर उपाध्याय, डा0 रिंकी उपाध्याय भोजपुरी साहित्य विकास मंत्र के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 बिमलेश त्रिपाठी, डा0 रेखा त्रिपाठी, भोजपुरी सम्राट लाखन सिंह, महासचिव प्रकाश कुमार त्रिपाठी, लोक गायक गजेन्द्र ओझा, गुड्डू गुलशन, प्रिया श्रीवास्तव, विनोद यादव सहित विभिन्न प्रांतो के कवि, लेखक व साहित्यकार उपस्थित थे। डा0 रामानुज द्विवेदी को उनकी कृति ''संझा पराती'' के साथ-साथ साहित्यिक रूची रचना धर्मिता के लिए यह पुरस्कार मिला है।

# मेधावी छात्रों को किया गया प्रोत्साहित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

राजापाकड़/कुशीनगर। तुर्कपट्टी थाना क्षेत्र के ग्रामसभा घोरठ शंकरपुर के लखी बाग में संचालित किसान उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आज शनिवार को सम्पन्न हुए बौद्धिक परीक्षा में कक्षा षष्ट में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले अन्तिमा कुशवाहा,ऋतु गुप्ता, साजिया खातुन,अंकित कुमार,रीषिमा शर्मा, लकी यादव, राजू निषाद व अरमान अंसारी आदि मेधावी छात्रों को प्रधानाचार्य द्वारा लेखन सामग्री देकर प्रोत्साहित किया गया।पुरस्कार पाने वाले प्रसन्न छात्रों ने भी अपने शिक्षकों से भविष्य में शत-प्रतिशत अंक प्राप्त करने का आश्वासन दिया।

प्रातः वन्दन के पश्चात कक्षा षष्ट में अध्ययनरत सवा सौ छात्रों में हुयी विषयगत टेस्ट में सबसे अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करते समय अपने सम्बोधन में विद्यालय के प्रधानाचार्य अजयकृष्ण सिंह ने कहा कि आगामी वार्षिक परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को विशेष पुरस्कार देकर सम्मानित किया जायेगा इसलिये आप सभी छात्र अभी से अध्ययन में जुट जायें।आप का परिश्रम ही आपके सफलता की गारण्टी है।वरिष्ठ शिक्षक अमरनाथ पाण्डेय ने छात्रों के बौद्धिक परीक्षा की सफलता पर सन्तोष व्यक्त करते हुए उसमें मिली कुछ कमियों को दूर करने के लिये सुझाव दिये।बौद्धिक परीक्षा को सकुशल सम्पन्न कराने वाले शिक्षकों ने कम अंक पाने वाले छात्रों का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि उनको निराश होने की बजाय अगले आयोजित टेस्ट में आपस में प्रतिस्पर्धा कर अधिक अंक प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये।इस अवसर पर चन्द्रशेखर प्रसाद,विनोद कुमार पाण्डेय, सिराजुद्दीन अंसारी,बृजेश पटेल व राजेन्द्र वर्मा आदि शिक्षक उपस्थित थे।

# जूनियर हाईस्कूल भलूही मदारीपट्टी के बच्चे परिजनों को करेंगे साक्षर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर ।नयी दिशा पर्यावरण सेवा संस्थान द्वारा देश को साक्षर बनाने में योगदान देते हुए हर हाथ कलम अभियान चलाकर पढ़े लिखे लोगों के सहयोग से अनपढ़ों को साक्षर बनाने का प्रयास किया जा रहा। इस क्रम में शनिवार को नगर पालिका परिषद कुशीनगर स्थित जूनियर हाईस्कूल भलूही मदारीपट्टी में वार्ड वासी अवकाश प्राप्त शिक्षक सुरेश तिवारी के जन्मदिन पर उनके सहयोग से विद्यालय के पूर्व चिन्हित 30 बच्चों को स्लेट, चॉक, पुस्तक भेंट किया गया। इन बच्चों ने अपने परिजनों को साक्षर करने की सहर्ष स्वीकृति दी थी।

बच्चों को संबोधित करते बुद्ध पीजी कॉलेज कुशीनगर के हिंदी विभाग के आचार्य डॉ0 गौरव तिवारी ने कहा कि अगूंठा छाप कहलाना एक कलंक है।

हमारे माता पिता हमें पढ़ा लिखाकर योग्य नागरिक बनाने के लिए दिन रात लगे रहते हैं। हमारा भी उनके प्रति कुछ दायित्व बनता है। कम उम्र में आप बहुत कुछ नही कर सकते लेकिन यदि अनपढ़ परिजनों को साक्षर कर लें तो ये भी उपलब्धी होगी।

सभासद प्रतिनिधि सोनू तिवारी ने नयी दिशा के हर हाथ कलम अभियान की सराहना की और बच्चों को प्रोत्साहित किया। संचालन संस्था सचिव डॉ0 हरिओम मिश्र ने किया। प्रधानाध्यापिका डॉ0 प्रतिभा तिवारी ने स्वागत व आभार प्रकट किया। इस अवसर पर सुदर्शन, रमावती देवी, सुमित्रा देवी आदि उपस्थित रहे।

# बेटी के जन्मदिन पर दुर्लभ साहित्य से साहित्यकारों का हुआ सम्मान

## कवियों ने कविताओं के माध्यम से बिटिया आध्या को दिया आशीर्वाद

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर। कसया क्षेत्र के अहिरौली बाजार स्थित एमपी जायसवाल इंटरमीडिएट कॉलेज में नन्ही सी बिटिया अध्या का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। जन्मदिन के अवसर पर खास बात यह रही कि जनपद के मुर्धन्य साहित्यकार और कवियों को विद्यालय परिवार की तरफ से दुर्लभ साहित्य देकर सम्मानित किया गया। कवियों ने भी अपनी कविताओं के माध्यम से बिटिया को ढेर सारा आशीर्वाद देते हुए उसके उज्जवल भविष्य की कामना की।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ के द्वारा राहुल सांकृत्यायन सम्मान से सम्मानित पूर्वांचल के श्रेष्ठ साहित्यकार एवं कवि चंदेश्वर शर्मा परवाना के कठिन परिश्रम से तैयार हिंदी -भोजपुरी शब्दकोश जो सर्व भाषा प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित है साहित्यकारों में वितरित किया गया। इस प्रकार के श्रेष्ठ आयोजन ने समाज के लिए एक उदाहरण भी प्रस्तुत किया। जनपद के वरिष्ठ शायर एवं मंच संचालक मुजबुल्लाह राही, रेडियो प्रज्ञा के कार्यक्रम नियंत्रक,विमर्श साहित्यिक संस्था के अध्यक्ष, शिक्षक एवं पत्रकार आर के भट्ट बावरा, वरिष्ठ पत्रकार एवं कवि दिनेश तिवारी भोजपुरिया, गीतकार अश्वनी द्विवेदी, गायक एवं संगीतकार धीरज राव, पत्रकार आफताब आलम को विद्यालय परिवार एवं साहित्यकार चंदेश्वर शर्मा परवाना के द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आध्याके पिता-रमेश जायसवाल (डायरेक्टर एम पी इंटर कॉलेज अहिरौली बाजार)माता-अंजली जायसवाल, दादा-राधे श्याम जायसवाल-प्रधानाचार्य अच्छे लाल जायसवाल, नितीश, साहिल बजाज, विनय,अमित राव, राहुल गौतम, दशरथ यादव एवं विद्यालय परिवार के अन्य लोग उपस्थित रहे ।

# गृहमंत्री के इस्तीफ़े की मांग को लेकर सपा का प्रदर्शन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पडरौना, कुशीनगर। गृह मंत्री अमित शाह के डॉ. अम्बेडकर पर दिये गए बयान से नाराज सपा कार्यकर्ताओं ने शनिवार को कलक्ट्रेट पर प्रदर्शन कर धरना दिया। उनकी मांग है कि गृह मंत्री इस्तीफा दें और जिले में प्रदर्शन के दौरान गिरफ्तार किये गए कार्यकर्ताओं को तत्काल छोड़ा जाए। पार्टी के जिला अध्यक्ष मोहम्मद शुकरूल्लाह अंसारी के अगुवाई में कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन करने पहुंचे सपाइयों ने अपनी मांगों का ज्ञापन सौपा। इस दौरान पूर्व मंत्री राधेश्याम सिंह पुर्व बिधायक डॉ पीके राय,पूर्व एमएलसी रामअवध यादव पूर्व विधायक पूर्णमासी देहाती,पूर्व प्रत्याशी विक्रमा यादव,विजेंद्र पाल यादव,डॉ उदय नारायण गुप्ता,रणविजय सिंह,राजेंद्र यादव मुन्ना,वीरेंद्र सिंह सैथवार, कैलाश चंद कनौजिया,विजय कुशवाहा,एके बदल,पूर्व जिला अध्यक्ष इलियास अंसारी, हरिशंकर राजभर,मनोज कुमार यादव,पुरंदर प्रताप यादव,भोला यादव,हीरालाल प्रजापति

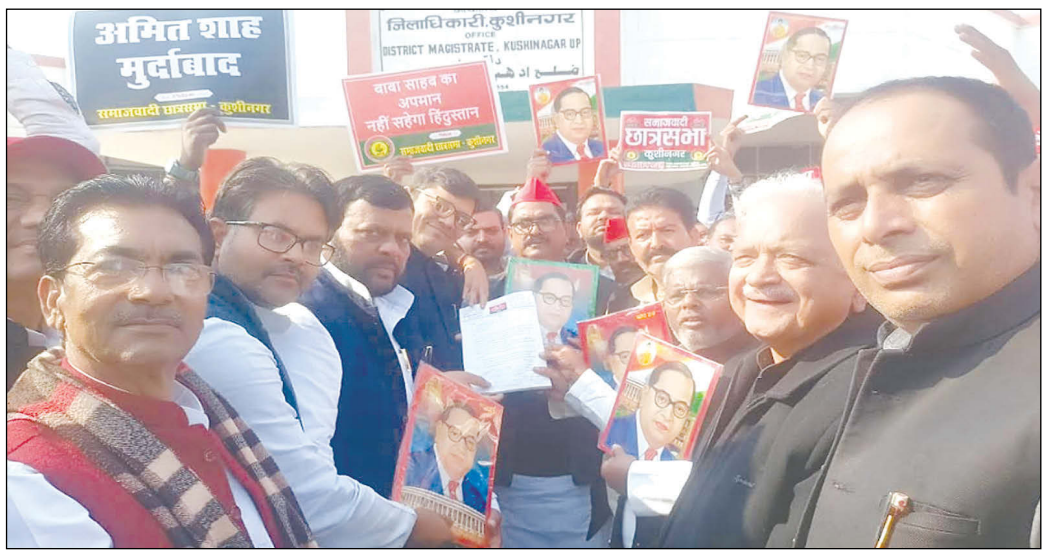


रामाधार कुशवाहा,मार्कण्डेय तिवारी,लखीचंद यादव,कृष्णा सिंह पटेल,रामप्रताप कुशवाहा, डॉ मनोज कुमार कुशवाहा, उग्रसेन यादव,मनीष सिंह,सुरेंद्र यादव,कैसर जमाल टीटू,सुरेश यादव,लख्मीचंद यादव,रहमत अंसारी,डॉ अब्दुल मजीद,राजेश यादव,वाजिद अली,गुड्डू यादव, राकेश सिंह सैथवार,आजम अंसारी,रामलखन यादव,पंकज आर्य,अमर जायसवाल,संजय यादव,राजेंद्र पाल,ओम प्रकाश यादव,राकेश यादव,निठूरी राजभर, सचिंद्र यादव,राजेन्द्र यादव,उदयभान यादव,सिकंदर आलम,गुलबदन यादव, रामपरसन सिंह,सैथवार सुरेंद्र यादव,विवेक ओझा,दूंगा सिंह, राकेश सिंह सैथवार,अवधेश राय, गोंदा सिंह आदि लोग मौजुद रह।

# संपूर्ण समाधान दिवस में डीआईजी ने सुनी जनता की समस्याएं

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा । सम्पूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर पुलिस उपमहानिरीक्षक देवीपाटन परिक्षेत्र गोण्डा अमित पाठक ने तहसील सभागार पयागपुर जनपद बहराइच व तहसील सभागार इकौना जनपद श्रावस्ती में पुलिस अधीक्षक श्रावस्ती के साथ जनसुनवाई कर शिकायत कर्ताओं की समस्याओं को सुनकर उनका समाधान कराया गया।प्राप्त प्रार्थना पत्रों में कुछ शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण कराया गया तथा शेष प्रार्थना पत्रों के गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध निस्तारण हेतु संबंधित को निर्देशित किया गया।वही पुलिस उपमहा निरीक्षक द्वारा पीसीएस प्री- परीक्षा 2024 के त्रुटिहीन आयोजन हेतु परीक्षा केंद्र अलक्षेन्द्र इंटर कॉलेज भिनगा और जगतजीत इंटर कालेज इकौना जनपद श्रावस्ती का निरीक्षण किया गया।कंट्रोल रूम, कक्षों आदि का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों आयो जकों को परीक्षा सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु आवश्यक निर्देश दिये गये।डीआईजी अमित पाठक ने पुलिस अधीक्षक श्रावस्ती के साथ जिले में अपराधों की रोकथाम,कानून एवं शांति व्यवस्था के दृष्टिगत रिजर्व पुलिस लाइन सभागार जनपद श्रावस्ती में गोष्ठी की गई।इस गोष्ठी में विभिन्न बिन्दुओं जैसे- असामा जिक तत्वों पर प्रभावी कार्यवाही,अवैध मादक पदार्थों के क्रय-विक्रय एवं निष्कर्षण पर पूर्ण रूप से रोक थाम,फुट पेट्रोलिंग एवं चेकिंग अभियान,अपराध एवं अपराधियों पर प्रभावी कार्यवाही व नियंत्रण आदि पर चर्चा की गयी।थाना क्षेत्र के कस्बों,बाजारों में अतिक्र मण हटाए जाने तथा सुरक्षा एवं शांति व्यवस्था बनाये रखने के संबंध में दिशा निर्देश दिए गए।इस दौरान सोशल मीडिया पर सतर्क दृष्टि बनाये रखने तथा साम्प्रदायिक सौहार्द प्रभावित करने वालों,भ्रामक व गलत संदेश,सूचना को किसी भी प्लेटफार्म पर प्रसारित करने वालों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने,थाना स्तर पर जनशिकायतों का शत प्रतिशत अंकन तथा प्राथमिकता के साथ गुणवत्तापूर्ण निस्तारण किये जाने के सम्बन्ध में निर्देशित किया गया।इस अवसर जनपद के समस्त क्षेत्राधिकारी एवं थाना,शाखा प्रभारी मौजूद रहे।

# डीएम नेहा शर्मा के प्रयास से महिला को चौबीस घंटे में मिला न्याय

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोंडा । जिले में प्रशासनिक तत्परता और त्वरित न्याय का एक प्रभावी उदाहरण देखने को मिला,जब जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने एक गंभीर शिकायत पर 24 घंटे के भीतर समाधान सुनिश्चित किया।ग्राम नंदौर, तहसील करनैलगंज की निवासी तारावती ने 19 दिसंबर 2024 को जिलाधि कारी को अपनी पैतृक संपत्ति पर अवैध हस्तक्षेप और वरासत रिकॉर्ड से संबंधित समस्याओं के संबंध में शिकायत की थी। जिलाधिकारी ने इस मामले को प्राथमिकता से लेते हुए संबंधित अधिकारियों को त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए।बताते है कि तारावती ने अपनी शिकायत में बताया कि उनके पिता की मृत्यु के बाद उनकी पैतृक संपत्ति पर अन्य लोगों द्वारा अवैध कब्जे की कोशिश की जा रही थी।शिकायत के अनुसार, उनकी वरासत से संबंधित रिकॉर्ड में छेड़छाड़ कर कुछ लोगों ने अपना नाम दर्ज करवा लिया था।जब स्थानीय स्तर पर उन्हें न्याय नहीं मिला, तो उन्होंने जिलाधिकारी से हस्तक्षेप का अनुरोध किया।

**जिलाधिकारी की त्वरित कार्रवाई**

जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने शिकायत प्राप्त होते ही एसडी एम करनैलगंज भारत भार्गव और तहसीलदार करनैलगंज मनीष कुमार समेत अन्य संबंधित अधिकारियों को तत्काल मौके पर जांच करने और निष्पक्ष समाधान सुनिश्चित करने का आदेश दिया।उनकी सख्त निर्देशों के तहत टीम ने मौके पर पहुंचकर विवादित भूमि और संबंधित दस्तावेजों की गहन जांच की।जांच में यह स्पष्ट हुआ कि तारावती की संपत्ति पर अवैध हस्तक्षेप किया गया था। इसके अलावा,रिकॉर्ड में गड़बड़ियों को सुधारने और उनकी संपत्ति पर अधिकार को बहाल करने की कार्रवाई भी तत्काल की गई।जिलाधिकारी के निर्देशों का पालन करते हुए तहसील प्रशासन ने 20 दिसंबर 2024 तक मामले का समाधान सुनिश्चित किया।अवैध कब्जा हटाया गया और रिकॉर्ड में सुधार कर तारावती को उनकी संपत्ति पर कानूनी अधिकार बहाल किया गया।इस प्रक्रिया में सभी कानूनी औपचारिकताओं का पालन किया गया, जिससे पीड़िता को त्वरित न्याय मिला।जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने इस कार्रवाई पर कहा,''प्रशासन का उद्देश्य है कि हर व्यक्ति को समयबद्ध और निष्पक्ष न्याय मिले।किसी भी अवैध गतिविधि को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।जनता का विश्वास बनाए रखना हमारी प्राथमिकता है।

# बेलवा गाँव में लूट:फर्जी मस्टर रोल व हाजरी से लगा रहे सरकारी खजाने में सेंध

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा । केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार में भ्रष्टाचार का दीमक लग गया है।केंद्र सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए तमाम योजनाओं को संचालित कर रही है,वहीं व्याप्त भ्रष्टाचार की आगोश में गोण्डा जिले में अधिकारियों की मिलीभगत से मनरेगा योजना धड़ाम हो रही हैं।विकास के नाम पर सरकार द्वारा लाखों करोड़ो रुपए खर्च किए जाने के बावजूद भी गांव की भौगोलिक स्थिति पूर्व की भांति नजर आ रही है।कहीं भी कोई खास बदलाव विकास नहीं देखा जा रहा है,हालाकि योगी सरकार ने व्याप्त भ्रष्टाचार को रोकने के लिए तरह-तरह के प्रयास किए।यहां तक कि भ्रष्टाचार पर प्रतिबंध लगाने के लिए ऑनलाइन सेवाएं आरंभ कीं लेकिन भ्रष्टाचारियों ने उसकी भी काट ढूंढ ली।एक कहावत है तू डाल डाल में पात पात,शायद इसी कहावत को अपनाते हुए विकासखंड पंडरी कृपाल के ग्राम पंचायत बेलावा में जनप्रतिनिधि और विभागीय अधिकारियों की मिलीभगत से मनरेगा में भ्रष्टाचार को अंजाम दे रहे हैं जिसमें सूत्र बता रहे है कि विकास भवन में बैठे डीसी मनरेगा,पड़री कृपाल की खंड विकास अधिकारी और एपीओ की अहम भूमिका है और इन तीनो अधिकारियों की मिली भगत से ही ब्लॉक पड़री कृपाल की ग्राम पंचायतों में मनरेगा योजना में घोटाले पर घोटाले किये जा रहे हैं।सूत्रों से जानकारी के अनुसार इस समय पड़री कृपाल में मनरेगा के तहत लाखों अधिक का घोटाला कर प्रधान व अधिकारी अपनी जेबें भरने में लगे हुए हैं।ऐसा ही एक मामला ब्लॉक पड़री कृपाल की ग्राम पंचायत बेलावा में देखने को मिला।जहां ग्राम प्रधान राम लाल द्वारा में मनरेगा में दो कार्य के लिए नव मस्टर रोल जारी कर सड़क पर मिट्टी पटाई का कार्य होना दर्शाया गया है।जिस कार्य के लिए छह मस्टरोल में 46 मजदूरों की उपस्थिति दर्शाकर मौके पर दो दिन के लिए एक साइड पर कुछ मजदूर को लगाकर थोड़ी सी सड़क पटवा दी है.जबकि दूसरे साइड पर अभी एक फावड़ा मिट्टी तक नहीं उठी है ज़ब कि ये कार्य दस दिसंबर 2024 चल रहा है किसी दिन 45 मजदूरों की हाजिरी लगा रही है तो किसी दिन 46 मजदूरों की हाजिरी कागज में चल रही है।जबकि ग्रामीणों ने बताया कि दो दिन सिर्फ प्रदीप के घर से साहि बान के घर तक मात्र दो चार मजदूर ही काम करते थे और यह काम अब दो दिन से रोक दिया गया है जब इस मामले की जमीनी हकीकत से रूबरू हुआ गया तो वहां का नजारा ही कुछ और था।ग्राम प्रधान व रोजगार सेवक द्वारा 46 मजदूरों द्वारा कार्य होना दर्शाया गया था और उनकी हाजिरी भी नरेगा के पोर्टल पर अपलोड कर दी गई थी जबकि मौके पर एक भी मजदूर कार्य करते हुए नहीं मिले हैं।

**मनरेगा में हो रही गड़बड़ी की शिकायत सीडीओ से**

वही बेलावा ग्राम पंचायत के रहने वाले शाकिर अली ने मुख्य विकास अधिकारी को एक शिकायती पत्र देकर मनरेगा में हो रहे अनियमिता की जांच की मांग की है शाकिर अली ने कहा है कि बेलावा गाँव में मनरेगा में हो रहे कार्य में व्यापक स्तर पर भ्रष्टाचार चल रहा है जो व्यक्ति दिल्ली और मुंबई में हैं वह भी इस समय मनरेगा के मस्टररोल में कागज में कार्य कर रहे है और धरातल पर एक भी मजदूर उपस्थित नहीं है।वही ब्लॉक पड़री कृपाल में इस समय मनरेगा के तहत फर्जी मजदूरों को दर्शाकर खंड विकास अधिकारी व एपीओ तथा ग्राम प्रधान के द्वारा लाखों के बारे न्यारे कर सरकार को चूना लगाया जा रहा है और उच्च अधिकारी इस कृत्य पर मौन साधे हुए हैं। जो मनरेगा में घोटाला होने का साफ संकेत दे रहा है।इस संबंध में जब डीसी मनरेगा जनार्दन प्रसाद यादव से फोन के जरिए संपर्क करने की कोशिश की गई लेकिन अपरि हार्य कारणों के चलते संपर्क नहीं हो सका।

# हत्या आरोपी को 6 महीने में मिली फांसी की सजा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोंडा । जिले में चार साल की मासूम बच्ची से रेप कर उसकी हत्या करने वाले उसके सौतेले पिता को फांसी की सजा सुनाई गई है।अपर सत्र विशेष न्यायाधीश (पॉक्सो एक्ट) राजेश नारायण मणि त्रिपाठी ने छह महीने में फैसला सुनाया। दोषी विश्वनाथ वंशकार मध्य प्रदेश का रहने वाला है।वह साधु के भेष में गोंडा में सौतेली बेटी को साथ लेकर घूम रहा था। 21 जून को नवाबगंज थाना क्षेत्र के कटरा रेलवे स्टेशन के पीछे चार साल की मासूम की लाश मिली थी।विश्वनाथ ने रेप के बाद बच्ची की जमीन पर पटक-पटक कर हत्या कर दी थी।22 जून को नवाब गंज थाने की पुलिस ने विश्वनाथ वंशकार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था।

**कूड़ा बीनने के दौरान महिला से हुआ था प्यार**

कई साल पहले विश्वनाथ वंशकार छत्तीसगढ़ के कवर्धा जिले में काम करने गया था। वहां कवर्धा की रहने वाली एक महिला से उसकी दोस्ती हो गई। धीरे-धीरे यह दोस्ती प्रेम में बदल गई। इसके बाद महिला ने अपने पति को छोड़ दिया। वह बेटी सृष्टि को लेकर विश्वनाथ के साथ अलग-अलग स्थानों पर रहने लगी।

**बेटी को विश्वनाथ के पास छोड़कर चली गई महिला**

विश्वनाथ के ज्यादा शराब पीने से परेशान होकर 2023 में महिला अपनी बेटी को विश्वनाथ के पास ही छोड़कर कहीं चली गई। उसके बाद से अभी तक महिला का कोई पता नहीं चला है। मां के जाने के बाद से ही बच्ची विश्वनाथ के साथ ही अयोध्या में रह रही थी। यहां साधु के भेष में भीख मांग कर विश्वनाथ अपना और बेटी का पेट भरता था। इसके साथ ही पूरे समय शराब के नशे में धुत रहता था।

गिरफ्तारी के बाद विश्वनाथ वंशकार ने पुलिस को बताया था कि बच्ची की मां से उसका प्रेम संबंध था।वह तीन साल पहले पति को छोड़कर उसके साथ चली आई थी। इसके बाद वह अपनी बच्ची को मेरे पास छोड़कर चली गई थी।मैंने 21 जून को ठेके से शराब खरीद कर पी। बच्ची जोर-जोर से रो रही थी।गुस्से में आकर मैंने उसके साथ रेप किया। इसके बाद उसकी हत्या कर दी थी।बताते है कि गोंडा जिले में पांच साल की मासूम की पटक-कर हत्या करने वाले मध्य प्रदेश निवासी साधु को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।बच्ची उसकी प्रेमिका की बेटी थी। वह बच्ची को अपने प्रेमी के पास छोड़कर कहीं चली गई थी। साधु प्रेमी ने मासूम बच्ची की इसलिए हत्या कर दी, क्योंकि वह भूख लगने पर रो रही थी।पहले तो आरोपी ने बच्ची से रेप की कोशिश की और फिर उसे मार डाला था।

# पुरानी ईंट से बन रही स्कूल की वाउण्ड्री वाल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

प्राथमिक विद्यालय की वाउण्ड्री का उच्चीकरण मे लग रही पुरानी को लेकर ग्रामीण ने तहसील दिवस मे की शिकायत

जरवल बहराइच । विद्यालय के बाउंड्री वाल निर्माण पुरानी लगाकर किया जा रहा है। पुरानी ईंट को नया दिखाकर पेमेंट करा लेने की तैयारी है। ग्रामीणों ने तहसील दिवस में शिकायत की है। जरवल शिक्षाक्षेत्र के गण्डारा में प्राथमिक विद्यालय की वाउण्ड्री का उच्चीकरण कार्य कराया जा रहा है। निर्माण कार्य में गुणवत्ता विहीन सामग्री लगाकर निर्माण कराने की शिकायत गांव निवासी राम सेवक यादव ने तहसील दिवस में की। शिकायत में आरोप लगाया है कि विद्यालय के वाउण्ड्री वाल निर्माण में पुरानी ईंट लगाई जा रही है,जिसकी शिकायत जरवल ब्लाक में की गई,जिसपर कोई कार्यवाही नहीं की गई। जेई की मिलीभगत से पुरानी ईंट पर प्लास्टर लगाकर पेमेंट कराने की तैयारी की जा रही है।ग्रामीणों ने जिलाधिकारी बहराइच मोनिका रानी से कार्यवाही की मांग की है।

# एसएसबी 42वीं वाहिनी की सीमा चौकी रुपैडिहा को गृह मंत्रालय द्वारा मिला गैलेंट्री अवार्ड

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नानपारा, बहराइच। भारत-नेपाल सीमा पर तैनात एसएसबी 42वीं वाहिनी को लगातार तीन बार सर्वश्रेष्ट वाहिनी का ख़िताब हासिल करने का गौरव प्राप्त है। इसी गौरव को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष भी बल के 61वें स्थापना दिवस के अवसर पर बल मुख्यालय द्वारा बल की प्रचालन एवं अहम विभिन्न गतिविधियों के आंकलन के आधार पर भारत नेपाल सीमा पर सर्वश्रेष्ट सीमा चौकी की चयन श्रेणी में एसएसबी 42वीं वाहिनी की सीमा चौकी रुपैडिहा को बल में द्वितीय स्थान से नवाजा गया है म बल के 61वें वर्षगाँठ समारोह के अवसर पर सीमांत मुख्यालय सशस्त्र सीमा बल सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल में आयोजित समारोह में अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। मुख्य अतिथि के समक्ष बल के वीर जवानो के द्वारा सलामी, मार्च, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा विभिन्न साहसिक करतलो का प्रदर्शन किया गया। मुख्य अतिथि को कार्यक्रम के दौरान बल के गौरवशाली 61 वर्षो के इतिहास को बताया गया कि बल किस प्रकार स्पेशल सर्विस ब्यूरो से सशस्त्र सीमा बल की भूमिका में आया और केन्द्रीय सशस्त्र बलों में अपनी सर्वाधिक लोकप्रियता वाला बल बना म सशस्त्र सीमा बल पहला सीमा रक्षक बल है जिसने महिलाओं की भर्ती की तथा महिलाएं विभिन्न दुर्गम क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कन्धा मिलाकर ड्यूटी का निर्वहन कर रही है म बल के 61वी वर्षगाँठ समारोह के अवसर पर गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह द्वारा 42वी वाहिनी के निरीक्षिक सामान्य कुमार ऋतुराज को उनके साहसिक एवं कर्तव्यनिष्ठा के साथ बगहा मुठभेड़ में 04 नक्सलियों को मार गिराने हेतु गैलेंट्री अवार्ड से सम्मानित किया गया म इसके अतिरिक्त 42वीं वाहिनी में तैनाती के दौरांन आरक्षी/सामान्य विजय कुमार जो आन्तरिक सुरक्षा ड्यूटी हेतु जम्मू-कश्मीर में तैनात थे। पोस्ट ड्यूटी के दौरान पुलवामा में आंतकियों की गोली सर में लगने से शहीद हो गए थे उन्हें भी मरणोपरांत गैलेंट्री अवार्ड से सम्मानित किया गया जिसे उनकी अर्धांगिनी ने ग्रहण किया।

# मोबिलाइजेशन ऑफ़ स्कूल स्टूडेंट के तहत बच्चों को किया पुरुस्कृत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नानपारा, बहराइच। नानपारा में संचालित कृषि विज्ञान केंद्र पर फसल अवशैष प्रबंधन परियोजना के अंतर्गत प0 महराजदीन शुक्ल शिक्षण सेवा संस्थान मटेरा कलां, शिवपुर में मोबिलाइजेशन ऑफ़ स्कूल स्टूडेंट के तहत इन सीटू फसल अवशैष प्रबंधन परियोजना पर 175 स्कूल विधार्थियों को जागरुक करते हुए प्रश्नोतरी व निबंध कार्यक्रमों का संचालन करते हुए छात्रों को पुरस्कृत भी किया गया । परियोजना के नोडल अधिकारी सुनील कुमार ने बताया कि फसलों के अवशेष जलाने के बजाय आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए उसे खेतों में ही मिला देना चाहिए। ऐसा करने से खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। केंद्र के उद्यान विशेषज्ञ उमेश कुमार ने बताया कि कृषि अपशिष्ट को कृषि उत्पादों जैसे फलों, सब्जियों, डेयरी और अनाज, साथ ही मांस, मुर्गी और फसलों की खेती और प्रसंस्करण के बाद बचे हुए अपशिष्ट के रूप में परिभाषित किया जाता है। केंद्र के फसल सुरक्षा विशेषज्ञ डॉक्टर पी के सिंह ने बताया कि फसल अवशेषों का प्रबंधन कर फसलों के समय में बुआई कर अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। फसल अवशेष का प्रबंधन करने से मृदा की भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है । फसल अवशेष मृदा में जल धारण क्षमता को बढ़ाता है। जिससे फसल को लंबे अवधि तक मृदा जल प्राप्त होता है। कार्यक्रम में स्कूल के प्रधानाचार्य सहित प्रबंधक ने पराली प्रवंधन पर छात्रों व बालिकाओं को कार्यक्रम के मानक को अपने गाँव गाँव जाकर मृदा संरक्षण का आह्वाहन करने को कहा ।

## जनपद न्यायाधीश ने डीएम व एसपी के साथ किया कारागार का निरीक्षण

बहराइच । जनपद न्यायाधीश उत्कर्ष चतुर्वेदी ने जिलाधिकारी मोनिका रानी, पुलिस अधीक्षक वृन्दा शुक्ला, सीजेएम श्रीमती प्रतिभा

चौधरी व अन्य अधिकारियों के साथ जिला कारागार का निरीक्षण कर कारागार प्रशासन द्वारा बन्दियों को मुहैय्या करायी जा रही सुविधाओं व कारागार की साफ-सफाई इत्यादि व्यवस्थाओं का जायजा लिया। कारागार के निरीक्षण के दौरान उच्चाधिकारियों ने पाकशाला सहित विभिन्न बैरकों का भी निरीक्षण किया। पाकशाला के निरीक्षण के दौरान साफ-सफाई तथा भोजन की गुणवत्ता तथा अन्य व्यवस्थाएं संतोषजनक पायी गईं। जिला कारागार के निरीक्षण के दौरान जेल अधीक्षक राजेश यादव, जेलर अजय कुमार झा, डिप्टी जेलर शेषनाथ यादव व अनीता सक्सेना सहित अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

# ट्रेन में बिना टिकट यात्रा करते पकड़े गए 43 यात्री

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा । बहराइच लूप लाइन रेलमार्ग के बीच चलने वाली डेमो ट्रेन 05373 और डेमो ट्रेनों में 05374 में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक पूर्वोत्तर रेलवे के निर्देश पर गोंडा के प्लेटफार्म निरीक्षक के.एल.यादव के नेतृत्व में ट्रेनों में गहन चेकिंग अभियान के दौरान बिना टिकट यात्रा करने वालों में खलबली मच गई।इसके तहत बिना टिकट रेलवे में यात्रा करने वालों को चिन्हित कर दंड के साथ फाइन वसूला गया है।अभियान के तहत गोंडा- बहराइच रेलवे स्टेशन के बीच टिकट की जांच की गई है.इस अभियान के तहत गोंडा - बहराइच ट्रेन नम्बर 05373 व 05374 डेमो ट्रेन में बिना टिकट सफर करने वाले यात्रियों पर कार्रवाई की गई जिसमें बीते एक दिन में 43 यात्री बिना टिकट के यात्रा करते मिले वही ट्रेन में बिना टिकट रेल यात्रा कर रहे थे।विभाग द्वारा इस अभियान से कुल 11,520 रुपए जुर्माने के रूप में वसूल किए गए है गौरतलब है कि लखनऊ मंडल में विशेष टिकट जांच अभियान विभिन्न ट्रेनो में चलाया जा रहा है जिसमें वाणिज्य विभाग के अधिकारी,चेकिंग स्टाफ,वाणिज्य निरीक्षक और रेलवे सुरक्षा बल सक्रिय योगदान दे रहे हैं बिना टिकट सफर करने वालों के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है ताकि टिकट लेकर यात्रा करने वाले लोगों को किसी प्रकार की कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़े बिना टिकट यात्रा से एक ओर जहां टिकट लेकर यात्रा करने वाले लोगों को परेशानी होती है,वहीं दूसरी तरफ रेल राजस्व की भी हानि होती है इस दौरान प्लेटफॉर्म निरीक्षक के.एल.यादव टिकट परीक्षक,एस.के.पटेल व माता प्रसाद व आरपीएफ के जवान आदि मौजूद रहे।

# तिलोई में लेखपालों ने ग्यारह सूत्रीय मांगों का ज्ञापन एडीएम को सौंपा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

तिलोई अमेठी । जनपद बरेली में एक लेखपाल की हत्या को लेकर तहसील तिलोई में भी लेखपालों में नाराजगी देखने को मिली। तहसील तिलोई में लेखपालों ने एडीएम को मुख्यमंत्री के नाम सम्बोधित ग्यारह

**जनपद बरेली में तैनात लेखपाल मनीष कश्यप की हत्या को नाराजगी जताई**

सूत्रीय मांगों का ज्ञापन सौंपकर पीड़ित परिवार को न्याय के साथ ही सरकारी नौकरी शस्त्र लाइसेंस और पचास लाख रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान किये जाने की मांग की है। लेखपाल संघ तिलोई ने मुख्यमंत्री के नाम सम्बोधित ज्ञापन में लिखा है कि बरेली जनपद में कार्यरत लेखपाल मनीष कश्यप बीती सत्ताइस नवम्बर को लापता हो गया था। परिजनों के साथ ही लेखपाल संघ द्वारा स्थानीय थाने में शिकायत दर्ज कराई गई थी लेकिन पुलिस ने मामले को गम्भीरता से नही लिया जिसका नतीजा यह निकला कि पन्द्रह दिसम्बर को लेखपाल का शव बरामद हुआ।लेखपालों द्वारा पुलिस एवं प्रशासन की संवेदनहीनता पर आक्रोश व्यक्त किया और लिखा गया है कि मृतक लेखपाल मनीष कश्यप की हत्या सत्यापन हेतु डीएनए जांच की शीघ्र रिपोर्ट मंगवाकर मौत की स्थिति स्पष्ट की जाय और सीबीआई जांच हो जिसमें घटना के सही कारणों एवं दोषियों का खुलासा हो सके और समस्त दोषियों की गिरफ्तारी के बाद सख्त सजा दिलाई जाय। संवेदनहीनता एवं लापरवाही के दोषी अधिकारियों के खिलाफ कारवाई की जाय। लेखपाल संघ तिलोई ने लिखा है कि मृतक का परिवार गरीब एवं असहाय है। मृतक के पिता की पूर्व में मृत्यु हो चुकी है। मृतक की माता एवं पत्नी व बच्चों को पचास पचास लाख रुपए आर्थिक सहायता प्रदान की जाये।जांच रिपोर्ट मे मृत्यु तस्दीक होते ही मृतक आश्रित कोटे में नौकरी एवं असाधारण पेंशन व देयकों का भुगतान तत्काल किया जाय।प्रदेश में कार्यरत इच्छुक लेखपालों को शस्त्र लाइसेंस बिना पुलिस कार्रवाई के केबल उपजिलाधिकारी की रिपोर्ट पर दिया जाय।क्षेत्र में रात्रि निवास की बाध्यता समाप्त की जाय और लेखपालों से कोई एफआईआर दर्ज न करवाई जाय।अवैध खनन के प्रकरणों में लेखपाल केवल रायलटी, जुर्माना रिपोर्ट करेगा और अवैध खनन पकड़ने में ड्यूटी न लगाई जाय। बरेली में लेखपाल मनीष कश्यप की हत्या से आक्रोशित तहसील तिलोई के लेखपालों ने एडीएम न्यायिक दिनेश कुमार मिश्रा को ग्यारह सूत्रीय मांग पत्र का ज्ञापन सौंपा है।इस मौके पर लेखपाल संघ के मंत्री कामता प्रसाद, उपाध्यक्ष वेद प्रकाश मिश्रा,मानस शुक्ला, पशुपतिनाथ द्विवेदी, संजीत विश्वकर्मा, शिवम तिवारी, श्रीकांत यादव, अशोक मधुकर,आलोक यादव, पुष्पा सिंह, ललिता सहित अन्य तमाम लेखपाल मौजूद रहे।

# तीन दिवसीय 38वीं मंडल स्तरीय क्रीडा प्रतियोगिता का हुआ समापन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

**पीलीभीत जिला सामूहिक चौंपियनशिप विजेता हुआ घोषित**

पीलीभीत।जिले को सामूहिक चैंपियनशिप राज्यमंत्री गन्ना विकास एवं चीनी मिलें यूपी शासन संजय सिंह गंगवार ने सौंपी। सामूहिक चैंपियनशिप विजेता की घोषणा होते ही पीलीभीत जिले के शिक्षकों और बच्चों में खुशी की लहर दौड़ गई। उपविजेता की चैंपियनशिप ट्रॉफी बरेली जिले के जिला व्यायाम शिक्षक मुकेश कुमार और उनकी टीम को गन्ना राज्यमंत्री ने सौंपी। प्राथमिक स्तर बालक वर्ग की व्यक्तिगत चैंपियनशिप शाहजहांपुर के अनिकेत के नाम हुई। बालिका वर्ग में भी शाहजहांपुर की मीनाक्षी चैंपियनशिप बनी।जूनियर स्तर बालक वर्ग की व्यक्तिगत चौंपियनशिप बरेली के नितेश विजेता घोषित किए गए। बालिका वर्ग में शाहजहांपुर की वर्षा को राज्यमंत्री ने व्यक्तिगत चौंपियनशिप की शील्ड सौंपी। राज्यमंत्री संजय सिंह गंगवार ने बरेली, बदायूं, शाहजहांपुर ,पीलीभीत के स्कूली बच्चों खिलाड़ियों शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि मौजूदा सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में कई अहम फैसले लेकर स्कूलों की पिछली सरकारों की जर्जर दशा को सुधार किया है। स्कूलों में कायाकल्प के सभी पैरामीटर पूरे करके बच्चों को बेहतर शिक्षा देने का काम मौजूदा सरकार कर रही है। उन्होंने कहा कि जो पीलीभीत जिला सामूहिक चैंपियनशिप विजेता बना है इसके पीछे शिक्षकों की मेहनत साथ-साथ जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अमित कुमार सिंह की अहम भूमिका है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अमित कुमार सिंह ने यह जो सफल रैली कराई है। इसके लिए भी बधाई के पात्र हैं। समापन समारोह के अवसर पर स्कूली बच्चों ने अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। स्कूली बच्चों की प्रस्तुति की सभी ने जमकर सराहना की। सभी विजेता छात्राओं को राज्यमंत्री,जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अमित कुमार सिंह ने फील्ड और मेडल देकर सम्मानित किया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने सभी का उत्साहवर्धन करते हुए कहा की इसी तरह से निष्पक्ष तरीके से राज्य स्तर पर प्रतिभाग करने जा रही सभी विजेता टीमों को मैं अग्रिम बधाई देता हूं।निर्णायक मंडल में नरेंद्र मौर्य,आदित्य गंगवार, अनुदेशक कल्याण समिति के प्रदेश संगठन मंत्री प्रखर मिश्रा,सर्वेश गंगवार,सुरेंद्र गंगवार,जयप्रकाश,केके सिंह,विभा मिश्रा,फैजान अली आदि रहे।इस अवसर बरेली मंडल के सभी खंड शिक्षा अधिकारी ,शिक्षक संगठनों के जिला अध्यक्ष जिला मंत्री जिला पर जूनियर हाई स्कूल शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष लालकरन, महिला शिक्षक संघ की जिला अध्यक्ष निराजना शर्मा, प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष दयाशंकर गंगवार,सीनियर बेसिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष भद्रपाल गंगवार, मंत्री डी पी गंगवार,राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के जिला अध्यक्ष मुकेश अवस्थी,यूटा के जिला अध्यक्ष राजेश मिश्र मंत्री मो अकरम,रजनी जौहरी आदि मौजूद रही हैं।तीन दिन तक खेल गतिविधियों की व्यवस्था संभालने में जिला समन्वयक राकेश पटेल जिला व्यायाम शिक्षक राजीव मिश्रा का विशेष योगदान रहा हैं।

# सुशासन सप्ताह कार्यक्रम के तहत संपूर्ण समाधान दिवस का जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक की अध्यक्षता में किया गया आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

**सम्पूर्ण समाधान दिवस में 45 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त हुये तथा मौक पर 07 का हुआ निस्तारण**

पीलीभीत।भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी बाजपेयी के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में सुशासन सप्ताह कार्यक्रम के तहत शासन के निर्देशानुसार जन सामान्य की शिकायतों के त्वरित निस्तारण के उद्देश्य से जिलाधिकारी संजय कुमार सिंह एवं पुलिस अधीक्षक अविनाश पाण्डेय की अध्यक्षता में तहसील बीसलपुर का सम्पूर्ण समाधान दिवस आयोजन किया गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 45 शिकायती प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये,जिसमें जिलाधिकारी द्वारा मौके पर ही 07 शिकायतों का निस्तारण किया गया। अवशेष शिकायतों के सम्बन्ध में संज्ञान लेते हुए कहा कि अधिकारी अपनी-अपनी विभागीय शिकायतों का गुणवत्ता परक ढंग से निस्तारण करें,अधिकारी स्वयं शिकायतकर्ता की शिकायतों के निस्तारण हेतु मौका मुआइना अवश्य करें और शिकायतकर्ता सहित दोनों पक्षों को बुलाकर शिकायतों का निस्तारण कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री कार्यालय से जन सुनवाई की शिकायतों की गुणवत्ता की जांच की जा रही है।सभी अधिकारी दोनों पक्षों को बुलाकर गुणवत्तापूर्ण शिकायतों का निस्तारण करायें तथा निस्तारण आख्या पोर्टल पर अपलोड करें, जिससे कि शिकायतकर्ता द्वारा दोबारा शिकायत न की जा सके। राजस्व सम्बन्धी मामलों में जहां पर पुलिस प्रशासन की आवश्यकता हो तो वहां पुलिस को साथ लेकर मौके पर निस्तारण कराया जाये। इसके साथ ही उन्होंने बीलसपुर चीनी मिल का निरीक्षण किया।

गन्ना तौल व्यवस्था देखी तथा चीनी की गुणवत्ता परखी।तहसील सम्पूर्ण समाधान दिवस में मुख्य चिकित्साधिकारी, डीएफओ सामाजिक वानिकी, जिला विकास अधिकारी,उप जिलाधिकारी बीसलपुर, उपायुक्त उद्योग, एलडीएम, समाज कल्याण अधिकारी, जिला पूर्ति अधिकारी, जिला प्रोबेशन अधिकारी व तहसीलदार बीसलपुर,खण्ड विकास अधिकारी सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे हैं।

# अमेठी के बारह परीक्षा केन्द्रों पर पीसीएस प्रारम्भिक परीक्षा होगी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

**पीसीएस प्रारम्भिक परीक्षा को नकल विहीन कराने के लिये डीएम ने परीक्षा केंद्रों का किया निरीक्षण**

अमेठी । उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा बाइस दिसम्बर को आयोजित होने वाली सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा प्रारंभिक परीक्षा को जनपद में नकल विहीन व शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए जिलाधिकारी निशा अनंत ने आज कई परीक्षा केंद्रों का स्थलीय निरीक्षण कर मूलभूत सुविधाओं, सुरक्षा व्यवस्था सहित अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया एवं परीक्षा को सकुशल संपन्न कराने में लगे अधिकारियों व केंद्र व्यवस्थापकों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बताते चलें कि बाइस दिसंबर को जनपद में बारह परीक्षा केंद्रों पर पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा आयोजित कराई जाएगी, जिसको सकुशल संपन्न कराने के लिए सभी परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरा, पार्किंग की व्यवस्था, पर्याप्त मात्रा में प्रकाश की व्यवस्था, सीटिंग प्लान, कंट्रोल रूम, स्ट्रांग रूम सहित अन्य व्यवस्थाओं को सुनिश्चित कराया जा रहा है जिसको लेकर आज जिलाधिकारी द्वारा परीक्षा केंद्र रणवीर इंटर कॉलेज अमेठी, पीएम श्री राजकीय बालिका इंटर कॉलेज अमेठी तथा श्री रणंजय इंटर कॉलेज गौरीगंज का स्थलीय निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी द्वारा कंट्रोल रूम, स्ट्रांग रूम, परीक्षा कक्षों में सीटिंग प्लान, पीने हेतु पानी, शौचालय, प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था आदि सुविधाओं को बारीकी से देखा गया एवं जो भी कमियां पाई गई उनको शीघ्र अति शीघ्र सुधारने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए गए। जिलाधिकारी ने बताया कि जनपद में पीसीएस परीक्षा को सकुशल संपन्न कराने के लिए बारह परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं जिन पर सभी जगह पर्याप्त मात्रा में पुलिस बल उपलब्ध रहेगा इसके साथ ही परीक्षार्थियों की जांच करने के उपरांत ही उन्हें परीक्षा कक्ष में प्रवेश दिया जाएगा, परीक्षा कक्ष में अभ्यर्थियों द्वारा घड़ी, मोबाइल, कैल्क्युलेटर तथा अन्य किसी भी प्रकार की इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस को लेकर जाना पूर्णतया प्रतिबंधित रहेगा। उन्होंने बताया कि पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा बाइस दिसंबर को दो पालियों में आयोजित कराई जाएगी परीक्षा को नकल विहीन व शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए सभी परीक्षा केंद्रों पर कड़े बंदोबस्त किए गए हैं अभ्यर्थी समय से अपने-अपने परीक्षा केंद्रों पर पहुंचे, प्रथम पाली की परीक्षा का समय साढ़े नौ से साढ़े ग्यारह बजे तक है जबकि द्वितीय पाली की परीक्षा का समय ढाई बजे से साढ़े चार बजे तक का है। निरीक्षण के दौरान अतिरिक्त मजिस्ट्रेट मोहम्मद असलम, सात्विक श्रीवास्तव, डीपीआरओ मनोज त्यागी, जिला खादी एवं ग्रामोद्योग अधिकारी महेंद्र मिश्रा, जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ राजेश द्विवेदी सहित अन्य संबंधित उपस्थित रहे।

## बाबा साहेब का अपमान नहीं सहेगा हिंदुस्तान जिला मुख्यालय पर गरजे सपाई

पीलीभीत कैनविज टाइम्स संवाददाता। जिला मुख्यालय पर राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी पार्टी के प्रदेश व्यापी आह्वान पर अमित शाह द्वारा बाबा साहब अम्बेडकर के खिलाफ असंवैधानिक और आपत्तिजनक बयान के ख़िलाफ़ धरना प्रदर्शन किया है। धरना प्रदर्शन में मुख्य रूप से राजकुमार ''राजू'' राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-समाजवादी युवजन सभा विधानसभा पूरनपुर,छात्र नेता नोमान वारसी,इमरान खान,पवन यादव,आनंद सिंह यादव,बंटू खान,नादिर रजा बरकाती,संजय सिंह यादव सहित सैकड़ों कार्यकर्ता और पदाधिकारी मौजूद रहे हैं।

## राज्य महिला आयोग की सदस्य गोमती सभागार में 24 दिसंबर को करेगी पीड़ित महिलाओं की जन सुनवाई

पीलीभीत कैनविज टाइम्स संवाददाता। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य सुनीता सैनी द्वारा घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं और बालिकाओं के साथ यौन उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या, लिंग भेदभाव, दुर्व्यवहार, के साथ मानव तस्करी में पड़ने की संभावनाएं जैसी घटनाओं से पीड़ित महिलाओं को उनके संरक्षण तथा उन्नयन हेतु आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़े जाने के साथ साथ जीवन यापन हेतु नवीन अवसर प्रदान किये जाने हेतु व किसी समस्या से पीड़ित महिलाओं एवं बालिकाओं की शिकायत हेतु महिला जनसुनवाई कार्यक्रम का आयोजन जनपद पीलीभीत के विकास भवन में स्थित गोमती सभागार में समय पूर्वान्ह 11:00 बजे किया जायेगा। जिला प्रोबेशन अधिकारी प्रगति गुप्ता ने बालिकाओं व महिलाओं से अपील की है। कि वह उक्त जनसुनवाई कार्यक्रम में उपस्थित होकर अपनी समस्याओं को सदस्या महिला आयोग के समक्ष रख सकती हैं जिसका त्वरित निस्तारण सदस्या के द्वारा किया जायेगा।

## पिपरिया दुलई गांव में बीसी केन्द्र पर एफडी बनाने के नाम दो दर्जन से ज्यादा लोगों के साथ धोखाधड़ी मामले एसडीएम से शिकायत

पूरनपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। कोतवाली क्षेत्र के गांव पिपरिया दुलाई के रहने वाले दो दर्जन से ज्यादा लोगों ने शनिवार दो बजे तहसील में पहुचकर एसडीएम को दिए शिकायती पत्र में बताया। गांव की रहने वाली जूली देवी पुत्री आत्माराम कुशवाहा एक बैंक में सखी है और बीसी केंद्र लगाकर गांव के सुशील कुमार,चमेली देवी, मिथलेश,जुवा देवी,मंजू देवी,कमला देवी, शिवरानी, मलका देवी, छत्रपाल सहित दो दर्जन से ज्यादा लोगों की एफडी बनाने के नाम पर लगभग 70 लाख रुपए की धोखाधड़ी की। जब गांव के लोगों ने एफडी की बौन्ड मांगी तो जूली देवी, आत्माराम कुशवाहा,दरबारी लाल, अभिषेक कुशवाहा सहित परिवार के लोगों के साथ मिलकर गाली गलौज कर जान से मारने की धमकी देने लगे। ग्रामीणों ने इस संबंध में पुलिस से शिकायत की थी पुलिस ने मामले में मुकदमा भी दर्ज किया था। आरोप है कि पुलिस ने उक्त लोगों की न तो गिरफ्तारी की और न ही रुपए बापस दिलवाएं है। इसी को लेकर मामले में एसडीएम से शिकायतकर न्याय की गुहार लगाई है।

## महिला शिक्षक संघ की वरिष्ठ उपध्यक्ष ने डायट प्रचार्य से की मुलाकात

पीलीभीत कैनविज टाइम्स संवाददाता। महिला शिक्षक संघ की वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष पूनम सहगल ने बीसलपुर में स्थित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में पहुंच कर डायट प्राचार्य से मुलाकात की जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष पूनम सहगल ने अपनी टीम के साथ महिला शिक्षकों से संबंधित कई समस्याओं को लेकर डायट प्राचार्य से लंबी वार्तालाप की समस्याओं को सुनने के बाद डायट प्राचार्य ने महिला शिक्षक संघ की जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष पूनम सहगल को महिला शिक्षकों से संबंधित समस्याओं के समाधान का आश्वासन दिया है। डायट प्राचार्य से मुलाकात के दौरान जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष महिला शिक्षक संघ पूनम सहगल, शगुफ्ता बी,फराना बेगम, रंजना कुमारी, मीनाक्षी देवी,अनुपमा, शिल्पा सिंह, आकांक्षा त्यागी,शबाना कई शिक्षकाए एव डायट प्रवक्ता आशा सुमन मौजूद रही हैं।

## अटल बिहारी बाजपेयी की जन्मशताब्दी वर्ष पर खेल प्रतियोगिता होगी

अमेठी कैनविज टाइम्स संवाददाता। उपक्रीड़ाधिकारी मोहम्मद मोसर्फ खां ने बताया कि खेल निदेशालय के निर्देशानुसार जिला खेल कार्यालय अमेठी के तत्वाधान में भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर विभिन्न खेलों का जिला स्तरीय प्रतियोगिता जनपद के डॉ0 भीमराव अम्बेडकर स्टेडियम में आयोजित किया जायेगा। उन्होंने बताया कि उक्त खेल प्रतियोगिता के अन्तर्गत पच्चीस दिसम्बर को प्रातः नौ बजे एथलेटिक्स पुरूष,महिला वर्ग तथा प्रातः दस बजे हैण्डबाल पुरूष वर्ग खेल प्रतियोगिता का आयोजन उक्त निर्धारित स्थल पर किया जायेगा। इस सम्बन्ध में उन्होंने बताया कि जनपद के स्थानीय विद्यालय के खिलाड़ियों एवं स्थानीय खिलाड़ियों को उक्त प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने हेतु एक दिवस पूर्व जिला खेल कार्यालय अमेठी में अपना रजिस्ट्रेशन कर सकते है।

# बाबा साहब पर टिप्पणी को लेकर सपाईयों ने नारेबाजी कर सौंपा ज्ञापन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। सपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता अनूप संडा ने कहा कि अमित शाह द्वारा बाबा साहब को लेकर जो टिप्पडी की है उससे देश पीडीए समाज आक्रोशित है। भाजपा और संघ की विचारधारा पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक विरोधी है। बाबा साहब का जितना नाम लिया जाता है, उससे पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह को तकलीफ होती है। राष्ट्रपति गृह मंत्री अमित शाह को बर्खास्त करें। भारत के पीडीए समाज के लोगों को आश्वस्त किया जाए कि उनके हक हकूक भाजपा की सरकार में सुरक्षित है। भाजपा खुद नही चाहती की सदन चले। जिस पार्टी ने विपक्ष के 146 सांसदों को निलम्बित किया हो एक सत्र में, वो इसका दावा करेगी कि विपक्ष सदन नही चलने देना चाहती। भाजपा तानाशाही मानसिकता से उपजी हुई विचारधारा से उपजी पार्टी है इसलिए वो विरोध को नही सुनना चाहती। यही वजह है भाजपा ने इस तरह की टिप्पडी की। गृहमंत्री ने ऐसी टिप्पडी की, पूरे देश की जनता आक्रोशित हो, उत्तेजित हो और उसका बहाना लेकर सदन की कार्यवाही को रोका जा सके,जिससे भाजपा की पोल पट्टी देश के सर्वोच्च सदन के माध्यम से जनता के सामने खुल ना सके। सदन में बाबा साहब को लेकर अमित शाह द्वारा की गयी टिप्पडी पर सपा नेतृत्व के निर्देश पर जिले के सपाइयों ने सड़क पर उतरकर किया प्रदर्शन। अमित शाह के खिलाफ सपाइयों ने की जमकर नारेबाजी। सपाइयों ने राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन एडीएम प्रशासन को सौंपा।

# पंचायत भवन पर लटक रहा ताला घर बैठे मानदेय ले रहें सहायक

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। दूबेपुर ब्लॉक क्षेत्र में पंचायत भवनों की स्थिति ठीक नहीं है। क्योंकि जिम्मेदारों की उदासीनता के चलते अधिकतर पंचायत भवन बंद रहते हैं। सहायक पंचायत इसमें बैठते नहीं हैं। जिसके चलते ग्रामीणों का प्राथमिक स्तर की अधिकांश समस्याओं का निस्तारण नहीं हो पा रहा है। ऐसे में उन्हें कोसों दूरी तय कर ब्लॉक के चक्कर लगाना मजबूरी बन गया है। विकास खण्ड दूबेपुर क्षेत्र के हसनपुर निवासी मगरू, साहिल खान, शंकर, शैलेश कुमार ने बताया कि पंचायत भवन पर पंचायत सहायक के रूप में तैनात कर्मी भी वहां कभी कभी बैठते हैं। वह घर बैठे छह हजार रुपये मानदेय ले रहे हैं। पंचायत भवन में कर्मचारियों के न आने से ज्यादा तर दिनों में ताला लटका रहता है। ऐसे में ग्रामीणों को परिवार रजिस्टर की नकल, जन्म और मृत्यु प्रमाणपत्र सहित अन्य सुविधाएं नहीं मिल पा रही है। ग्रामीण तो पेंशन आदि समस्या लेकर रोजाना पहुंच रहे हैं। लेकिन उनकी समस्या का समाधान न होने से मायूसी हाथ लग रही है। जिसके चलते ग्रामीणों को छः किलोमीटर दूरी तय कर ब्लॉक का चक्कर काटना पड़ता है। जबकि जिम्मेदार घर बैठ मानदेय ले रहे है। इस संबंध में ग्राम विकास अधिकारी मनोज कुमार पांडे ने बताया कि पंचायत भवन में ताला लटकने की जानकारी हमें नहीं है यदि ऐसा है तो जांच कर संबंधित के खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जायेगी।

# मच्छर जनित बीमारियों को लेकर विभाग सक्रिय

कैनविज टाइम्स संवाददाता

**शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में मलेरिया विभाग करवा रहा है फॉगिंग**

जयसिहपुर/सुल्तानपुर। मच्छर जनित बीमारियों के खात्मे को लेकर मलेरिया विभाग काफी सक्रियता से क्षेत्र में जुटा हुआ है। शहर, गांव व कस्बे में टीम पहुंच रही है, जनप्रतिनिधि व ग्रामीणों के द्वारा चिन्हित स्थानों पर मलेरिया नीरिक्षक सूर्यांश प्रताप सिंह के नेतृत्व में टीम पहुंचकर फॉगिंग के साथ ही ग्रामीणों को मच्छर जनित बीमारी से बचाव के लिए जागरूक भी किया जा रहा है। बीते शुक्रवार को देर शाम इंस्पेक्टर सूर्यांश प्रताप सिंह के नेतृत्व में अश्विनी कुमार पांडेय, देवी प्रसाद तिवारी के साथ जयसिहपुर तहसील के पुरानी बाजार पहुंचकर विभिन्न स्थानों फॉगिंग करवाया,साथ ही मौजूद ग्रामीणों को डेंगू, मलेरिया जैसी घातक बीमारियों के लक्षण व बचाव के तरीके बताएं। इंस्पेक्टर सूर्यांश प्रताप सिंह ने बताया की प्रभारी जिला मलेरिया अधिकारी हरिश्चंद्र श्रीवास्तव के द्वारा टीम बनाकर जनपद के समस्त तहसील व विकासखंडों के लिए निर्देशित किया गया है,की जहां भी मलेरिया विभाग से संबंधित आवश्यकता है, वहां हमारी टीम पहुंचकर दवा छिड़काव और डेंगू से बचाव के उपाय बताकर जागरूक करने का काम किया जाता है।

# हर्षोल्लास के साथ मनाया गया राष्ट्रीय गणित दिवस

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुलतानपुर। करौंदिया विवेकनगर स्थित कमला नेहरू इंस्टिट्यूट चाइल्ड एजुकेशन में राष्ट्रीय गणित दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कक्षा-10 की छात्रा आर्या गर्गवंशी ने श्रीनिवास रामानुजन और गणित विषय पर अपना वक्तव्य दिया। राष्ट्रीय गणित दिवस के उपलक्ष्य में जूनियर तथा सीनियर वर्ग में चैरिटी, होप, ज्वाय तथा पीस हाउस के विद्यार्थियों के इंटर हाउस गणित तथा विज्ञान विषय की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता हुई। जूनियर वर्ग में ज्वाय हाउस के विद्यार्थी आदित्य सिंह,रुद्र प्रताप पांडेय तथा मेधा त्रिपाठी विजयी रहीं। सीनियर वर्ग में पीस हाउस के विद्यार्थी वर्चस श्रीवास्तव,आराध्या बरनवाल,सुनैना श्रीवास्तव तथा संख्या पांडेय विजयी रहीं। आज की प्रार्थना सभा गणित के जादूगर रामानुजन पर आधारित रही। कक्षा-4 का छात्र आद्विक पाल ने आज का सुविचार कहा।प्रार्थना सभा का संचालन कक्षा-7 की छात्रा आराध्या सिंह ने किया। कक्षा-1से 12 तक के छात्र-छात्राओं ने गणित व विज्ञान विषय से संबंधित मॉडल ज्यामिति आकार,जैविक खेती, मिनी मिसाइल, ऊंचाई और दूरी, समुच्चय, अम्लीय वर्षा पर आधारित इत्यादि माडल अलंकृता गर्गवंशी, आलोक, जान्हवी सिंह, आदित्य राठी आदि विद्यार्थियों तथा उनकी टीम द्वारा बनाए गए। जिसकी तैयारी गणित शिक्षक-शिक्षिकाएं विश्वास मणि त्रिपाठी, अंकित सोनी, मो. हसानात, अमरदीप कौर, दीप्ति श्रीवास्तव व शुभांजलि शर्मा तथा विज्ञान शिक्षक अस्मित गुप्ता, सिद्धांत कुमार सिंह व सौरभ मिश्र ने कराई। प्रधानाचार्य तथा सी.बी. सिंह ने सभी मॉडलों का निरीक्षण किया तथा विद्यार्थियों से उनके माडल से संबंधित प्रश्न पूछे। विद्यार्थियों ने अपने-अपने माडल से संबंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए। विद्यार्थियों का प्रस्तुतीकरण अति उत्तम रहा। प्रधानाचार्य ने विद्यार्थियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रधानाचार्य डॉ.एन.डी.सिंह ने बताया कि भारत देश के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का जन्म 22 दिसंबर 1887 को तमिलनाडु के इरोड में एक तमिल अयंगर ब्राह्मण परिवार में हुआ था।उन्होंने 12 वर्ष की उम्र में त्रिकोणमिति में महारत हासिल कर ली थी। वर्ष 1912 में उन्होंने मद्रास पोर्ट ट्रस्ट में क्लर्क के पद पर कार्य करना शुरू कर दिया। उनकी गणित की प्रतिभा को पहचान कर उनके साथियों ने उन्हें कैंब्रिज यूनिवर्सिटी, ट्रिनिटी कॉलेज में रेफर कर दिया। वर्ष 1916 में उन्होंने बैचलर इन साइंस की डिग्री ली। लंदन की मैथमेटिकल सोसायटी में 1917 में उनका चुनाव कर लिया गया। सन् 1918 में श्रीनिवास रामानुजन को कैंब्रिज फिलोसॉफिकल सोसायटी, रॉयल सोसाइटी तथा ट्रिनिटी कॉलेज तीनों का फ़ेलो चुना गया। इनका देहावसान 32 वर्ष की अल्पायु में 26 अप्रैल 1920 को हुआ।

## पिघली अवरोध की बर्फ

यह हकीकत है कि चीन भौगोलिक रूप से हमारा पड़ोसी है, हम पड़ोसी नहीं बदल सकते। ऐसे में जरूरी है कि तमाम विसंगतियों के बावजूद अपनी संप्रभुता और हितों की रक्षा के साथ पड़ोसी से रिश्ते बेहतर बनाए जाएं। लंबी खटास व तनातनी के बाद भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच बीजिंग में हुई हालिया बैठक के सार्थक परिणाम सामने आए हैं। बीजिंग में डोभाल व वांग तथा दोनों देशों के विशेष प्रतिनिधियों की बैठक निश्चित रूप से कूटनीतिक लिहाज से महत्वपूर्ण प्रगति कही जा सकती है। खासकर 2020 में गलवान घाटी में हुई झड़पों के बाद पांच वर्षों में यह पहली बातचीत, दो एशियाई दिग्गजों के बीच संबंधों को सामान्य बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण व सतर्क बदलाव को ही दर्शाती है। दरअसल, इस चर्चा का केंद्र लद्दाख पर अक्तूबर 2024 के समझौते का कार्यान्वयन था। यह सुखद ही है कि दोनों पक्षों ने वास्तविक नियंत्रण रेखा यानी एलएसी पर शांति बनाये रखने की प्रतिबद्धता जतायी। निश्चय ही यह कदम भविष्य में संघर्षों को रोकने के लिये एक महत्वपूर्ण कदम है। बैठक में सीमा व्यापार बढ़ाने, सीमा पार नदियों का डेटा साझा करने तथा कैलाश मानसरोवर की यात्रा को फिर से शुरू करने जैसे क्षेत्रों में सहयोग को गहन करने के उद्देश्य से छह सत्री सहमति पर भी जोर दिया गया। हालांकि, ऐसा भी नहीं है कि इस तरह की सहमति से सारी चुनौतियां एकदम खत्म हो चुकी हैं। निर्विवाद रूप से सीमा विवाद एक संवेदनशील व जटिल मुद्दा बना है। जिसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि आपसी विश्वास में व्याप्त कमी को दूर किया जाए। निश्चित रूप से व्यावहारिक कूटनीति के साथ विश्वास निर्माण के उपायों को कदम दर कदम बढ़ाया जाना चाहिए। हालांकि इन प्रतिबद्धताओं को अमलीजामा पहनाने के लिये सतर्कता के साथ और राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरूरत होगी। बहरहाल, खट्टे-मीठे रिश्तों और लंबी कटुताओं के बावजूद इस बैठक के निहितार्थों को व्यापक संदर्भों में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। निर्विवाद रूप से चीन आज दूसरी बड़ी वैश्विक शक्ति है। भारत ने भी आर्थिक व अन्य क्षेत्रों में आशातीत प्रगति की है। इसके बावजूद दोनों ही देश वैश्विक शक्ति की बदलती गतिशीलता से जूझ रहे हैं। खासकर अमेरिका में होने जा रहे राजनीतिक परिवर्तन से उबरने वाली आर्थिक चुनौतियों के मद्देनजर। ऐसे में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को दोनों देशों की एकजुटता प्रभावित करने की क्षमता रखती है। खासकर व्यापार, प्रौद्योगिकी तथा ब्रिक्स जैसे बहुपक्षीय प्लेटफॉर्मों में सहयोगात्मक पहल से क्षेत्र में स्थिरता और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। निस्संदेह, दोनों देशों की सीमा पर शांति की पहल एक शुरुआत मात्र है। इसके उपरांत दोनों देशों के लोगों के बीच संपर्क, व्यापार बाधाओं व असंतुलन को दूर करना वक्त की जरूरत है। हमें सांस्कृतिक सहयोग के जरिये दोनों देशों के संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करने का लाभ उठाना चाहिए। विश्वास कायम करने और संघर्ष की छाया दूर करने के लिये ऐसे सकारात्मक कदम जरूरी हैं। निस्संदेह, रिश्तों को सामान्य बनाने का रास्ता लंबा है, लेकिन सार्थक संवाद से अधिक सामंजस्यपूर्ण भविष्य की आशा लगातार बनी रहती है। भारत और चीन के लिये शांति सिर्फ एक आदर्श मात्र नहीं बल्कि एक अपरिहार्य आवश्यकता है। निस्संदेह, भारत और चीन के बीच हुई यह तेईसवीं मुलाकात नई उम्मीद जगाती है। उल्लेखनीय है कि भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और चीनी विदेश मंत्री के बीच यह बातचीत कजान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की मुलाकात के बाद लिए गए फैसले के अनुरूप ही हुई है। जिसमें सीमा क्षेत्रों में शांति और सौहार्द की बहाली और सीमा विवाद का उचित समाधान तलाशने पर सहमति बनी थी। उम्मीद की जानी चाहिये कि संक्रमण के दौर से गुजर रहे वैश्विक परिदृश्य में भारत व चीन एकजुट होकर निर्णायक भूमिका निभाएंगे। यह स्थिति दोनों देशों के हित में ही कही जाएगी।

## संसद की गरिमा का दांव पर लगना चिन्ताजनक

संविधान-निर्माता भीमराव आंबेडकर को लेकर भारतीय संसद में जो दृश्य पिछले कुछ दिनों में देखने को मिले हैं, वे न केवल शर्मसार करने वाले है बल्कि संसदीय गरिमा को धुंधलाने वाले हैं। अंबेडकर को लेकर भाजपा और कांग्रेस आमने-सामने हैं। दोनों पक्षों ने गुरुवार को संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान हाथापाई भी हुई जिसमें भाजपा सांसद प्रताप सारंगी और मुकेश राजपूत घायल हो गए। लोकसभा के अध्यक्ष ओम बिरला ने सांसदों को चेतावनी देते हुए कहा कि सभी को नियमों का पालन करना पड़ेगा। संसद की मर्यादा और गरिमा सुनिश्चित करना सबकी जिम्मेदारी है। भारतीय संसद के प्रांगण में जिस तरह की अशोभनीय एवं त्रासद स्थिति का उत्पन्न हुई है, वे हर लिहाज से दुखद, विडम्बनापूर्ण और निंदनीय है। आरोप-प्रत्यारोप की वजह से परिवेश ऐसा बन गया है, मानो सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच शुद्ध शत्रुता, द्वेष, नफरत की स्थितियां उग्रतर हो गई हो। और तो और, धक्का-मुक्की, दुर्व्यवहार जैसे आरोपों को लेकर पुलिस में मामला दर्ज होना वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण है। इन दुखद एवं अशालीन स्थितियों का उपचार न किया गया, तो संसद में काफी कुछ अप्रिय एवं अशोभनीय होने की आशंकाएं बलशाली होगी। कहना न होगा कि देश की संसद लोकतंत्र के वैचारिक शिखर और देश की संप्रभुता को रेखांकित करने वाला शिखर संस्थान है। इसलिए इसकी गरिमा बनाए रखना सभी सांसदों का मूल कर्तव्य बन जाता है। इसके लिए जनप्रतिनिधियों से यह अपेक्षा होती है कि वे संसद की गरिमा को भंग न करे, अपना आचरण शुद्ध, शालीन एवं व्यवस्थित रखेंगे और व्यर्थ की बयानबाजी, धक्का-मुक्की, दुर्व्यवहार की जगह सार्थक बहस की संभावनाओं को उजागर करें। भारत की परंपरा कहती है कि वह सभा, सभा नहीं, जिसमें शालीनता एवं मर्यादा न हो। वह संसद संसद नहीं, जो लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा न करें। वह धर्म, धर्म नहीं, जिसमें सत्य न हो। वह सत्य, सत्य नहीं जो कपटपूर्ण हो। आज संसद में सांसदों का व्यवहार शर्म की पराकाष्ठा तक पहुंच गया है। पूरे देश की जनता ने बड़ा भरोसा जताते हुए अपने प्रतिनिधियों को चुनकर लोकसभा में भेजा है, ताकि वे सांसद के रूप में देश की भलाई के लिए नीति एवं नियम बनाएं, उसे लागू कराएं और जनजीवन को सुरक्षित तथा खुशहाल बनाते हुए देश का विकास करें। संसद की सदस्यता की शपथ लेते समय सांसदगण इन सब बातों को ध्यान में रखने की कसम भी खाते हैं, लेकिन उनकी कसम बेबुनियाद ही होते हुए संसद की मर्यादाओं को आहत कर रही है। बीते कुछ समय से धरना-प्रदर्शन के साथ सड़क पर राजनीतिक दमखम दिखाने वाले नजारे संसद के दोनों सदनों में भी दिखने लगे हैं। भौतिक रूप से छीना-झपटी और हाथापाई की नौबत भी दिखती रही है और विचाराधीन विषय से दूर एक-दूसरे को हीन साबित करना ही उद्देश्य बन गया है। संसद का मूल्यवान समय बर्बाद हो रहा है, यह इससे स्पष्ट होता है कि पहली लोकसभा में हर साल 135 दिन बैठकें आयोजित हुई थीं। आज स्थिति कितनी नाजुक हो गई है, इसका अनुमान इसी से लगा सकते हैं कि पिछली लोकसभा में हर साल औसतन 55 दिन ही बैठकें आयोजित हुईं। नयी लोकसभा की स्थिति तो और भी दुखद एवं दयनीय है। संसद में काम न होना, बार-बार संसदीय अवरोध होना तो त्रासद है ही, लेकिन धक्का-मुक्की तक नौबत पहुंचना ज्यादा चिन्ताजनक है। कोई भी दल हो, किसी भी दल के सांसद हो, उन्हें यह संदेश देने की जरूरत है कि संसद ऐसे किसी संघर्ष का अखाड़ा नहीं है। संसद और संविधान, दोनों ही सांसदों से उच्च गरिमा एवं मर्यादाओं की अपेक्षा करते हैं। संसद देश की आवाजों और दलीलों का मंच है, यह किसी भी प्रकार की शारीरिक जोर-आजमाइश का मंच न बने, इसी में देश की भलाई है, लोकतंत्र की अक्षुण्णता है। सार्थक और उत्पादक संवाद के लिए हर सांसद को संविधान का ज्ञान, संसदीय परंपराओं की जानकारी एवं उनके प्रति प्रतिबद्धता भी होनी चाहिए। दुर्भाग्य से बहुत कम सांसद ही इस ओर ध्यान देते हैं। मुखर प्रवक्ता के रूप में विपक्ष के कई सांसद अक्सर बेलगाम, फूहड एवं स्तरहीन आरोप-प्रत्यारोप दर्ज कराने में जुट जाते हैं। आधी-अधूरी सूचनाओं या गलत जानकारी के साथ विपक्ष के नेता सरकारी पक्ष को आरोपित करने में जुट जाते हैं, बयानों तो तोड़मरोड़ का प्रस्तुत करते हैं। निश्चित ही विपक्ष लगातार अपनी जिम्मेदारी से विमुख होता दिख रहा है। वह सरकार को घेरने और आरोपित करने के उद्देश्य से संसद के कार्य में अक्सर व्यवधान डालता है। लगता है विपक्ष का मकसद यही हो गया है कि संसद की कार्यवाही सुचारु रूप से न चल सके और सरकार की विफलता दर्ज हो। इस तरह की विपक्ष की बौखलाहट का बड़ा कारण भाजपा की लगातार चमत्कारी जीत है। सांसदों को समग्रता में सोचना चाहिए कि अगर संसद जोर आजमाइश एवं हिंसा का अखाड़ा होकर बात एफआईआर की राजनीति तक बढ़ेगी, तो संसद का संचालन जटिल से जटिलतर होता जायेगा। संसद में तनाव कोई नई बात नहीं है। तनाव और तल्खी का इतिहास रहा है, पर बहुत कम अवसर ऐसे आए हैं, जब शारीरिक बल का दुरुपयोग देखा गया है। संसद भवन के प्रांगण में ही नहीं, बल्कि देश में कहीं भी सांसदों को ऐसे आमने-सामने नहीं आना चाहिए, जैसे गुरुवार को देश ने देखा है। संसद भवन के प्रांगण में जगह-जगह कैमरे लगे हैं। उन कैमरों की मदद से कम से कम यह तो सुनिश्चित करना चाहिए कि दोषी कौन है? दुध का दुध एवं पानी का पानी हो और सच सामने आये। सच की जीत हो और झूठ नैस्तनाबूद हो। अगर किसी सांसद के सिर में चोट लगी है, तो यह वैसे भी गंभीर मसला है। भाजपा सांसद सारंगी ने यही बताया है कि नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की वजह से एक व्यक्ति उनसे टकराया और वह गिर गए। ऐसा ही आरोप कांग्रेस ने भी लगाया है। पक्ष-विपक्ष में आरोप-प्रत्यारोप लगेंगे, पर ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि सच सामने आए। यदि सच सामने न आए, तो कम से कम सभी सांसद ऐसी स्थिति फिर न बनने दें, इसके लिये संकल्पित हो। शीतकालीन सत्र में आंबेडकर के नाम पर संसद के भीतर-बाहर जो कुछ हो रहा है, उससे यह स्पष्ट होता है कि कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दल संसद की गरिमा से जानबूझकर खिलवाड़ करने पर तूले है। यह मानना अविश्वसनीय है कि यह धक्का-मुक्की अनजाने में हुई। राहुल गांधी आक्रामक ढंग से एक महिला सांसद के निकट जाकर उन्हें असहज करना तो बहुत ही शर्मनाक एवं कहीं अधिक फूहड़ है। पता नहीं किसके आरोपों में कितनी सच्चाई है, लेकिन इसमें संदेह नहीं कि उक्त घटना संसद ही नहीं, देश को भी शर्मिंदा करने वाली है। राजनीति का स्तर इतना नहीं गिरना चाहिए कि वह मर्यादा से विहीन दिखने लगे। ऐसी राजनीति केवल धिक्कार की पात्र होती है। संसद की मर्यादा को तार-तार करने वाली ऐसी घटनाएं सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच बढ़ती कटुता का ही नतीजा है, जो देश के हित में नहीं है। पक्ष-विपक्ष के बीच बढ़ती शत्रुता न केवल भारतीय राजनीति बल्कि लोकतंत्र के लिए भी खतरनाक हैं। दोनों पक्षों के बीच शत्रु भाव कम होने के कोई आसार इसलिए नहीं दिख रहे हैं, क्योंकि ऐसे मुद्दे सतह पर लाए जा रहे हैं, जिनका कोई औचित्य नहीं बनता और जिनका मकसद लोगों को बरगलाना एवं गुमराह करना है। बीते कुछ समय से यह जो भय का भूत खड़ा किया जा रहा है कि संविधान खतरे में है, वह राजनीति के छिछले स्तर का ही परिचायक है। कोई बताये तो संविधान कब और कैसे खतरे में आ गया। संसद में ऐसे विषयों को लेकर सार्थक एवं सौहार्दपूर्ण संवाद हो, वाद-विवाद की जगह कटुता न ले, विमर्श और विचार की गंभीरता से ही लोकतंत्र की शक्ति बढ़ेगी। दलगत पसंद और नापसंद स्वाभाविक है, किंतु उससे ऊपर उठकर रचनात्मक भूमिका निभाने का साहस भी जरूरी है। – ललित गर्ग

**संसद का मूल्यवान समय बर्बाद हो रहा है, यह इससे स्पष्ट होता है कि पहली लोकसभा में हर साल 135 दिन बैठकें आयोजित हुई थीं। आज स्थिति कितनी नाजुक हो गई है, इसका अनुमान इसी से लगा सकते हैं कि पिछली लोकसभा में हर साल औसतन 55 दिन ही बैठकें आयोजित हुईं। नयी लोकसभा की स्थिति तो और भी दुखद एवं दयनीय है। संसद में काम न होना, बार-बार संसदीय अवरोध होना तो त्रासद है ही, लेकिन धक्का-मुक्की तक नौबत पहुंचना ज्यादा चिन्ताजनक है। कोई भी दल हो, किसी भी दल के सांसद हो, उन्हें यह संदेश देने की जरूरत है कि संसद ऐसे किसी संघर्ष का अखाड़ा नहीं है। संसद और संविधान, दोनों ही सांसदों से उच्च गरिमा एवं मर्यादाओं की अपेक्षा करते हैं। संसद देश की आवाजों और दलीलों का मंच है, यह किसी भी प्रकार की शारीरिक जोर-आजमाइश का मंच न बने, इसी में देश की भलाई है, लोकतंत्र की अक्षुण्णता है। सार्थक और उत्पादक संवाद के लिए हर सांसद को संविधान का ज्ञान, संसदीय परंपराओं की जानकारी एवं उनके प्रति प्रतिबद्धता भी होनी चाहिए। दुर्भाग्य से बहुत कम सांसद ही इस ओर ध्यान देते हैं। मुखर प्रवक्ता के रूप में विपक्ष के कई सांसद अक्सर बेलगाम, फूहड़ एवं स्तरहीन आरोप-प्रत्यारोप दर्ज कराने में जुट जाते हैं। आधी-अधूरी सूचनाओं या गलत जानकारी के साथ विपक्ष के नेता सरकारी पक्ष को आरोपित करने में जुट जाते हैं, बयानों तो तोड़मरोड़ का प्रस्तुत करते हैं। निश्चित ही विपक्ष लगातार अपनी जिम्मेदारी से विमुख होता दिख रहा है। वह सरकार को घेरने और आरोपित करने के उद्देश्य से संसद के कार्य में अक्सर व्यवधान डालता है। लगता है विपक्ष का मकसद यही हो गया है कि संसद की कार्यवाही सुचारु रूप से न चल सके और सरकार की विफलता दर्ज हो। इस तरह की विपक्ष की बौखलाहट का बड़ा कारण भाजपा की लगातार चमत्कारी जीत है। सांसदों को समग्रता में सोचना चाहिए कि अगर संसद जोर आजमाइश एवं हिंसा का अखाड़ा होकर बात एफआईआर की राजनीति तक बढ़ेगी, तो संसद का संचालन जटिल से जटिलतर होता जायेगा।**

## श्रीनिवास रामानुजन : संख्याओं के जादूगर

राष्ट्रीय गणित दिवस पर विशेष

**योगेश कुमार गोयल**

प्रतिवर्ष 22 दिसम्बर को भारत में 'राष्ट्रीय गणित दिवस' मनाया जाता है, जो देश के महान गणितज्ञों में से एक श्रीनिवास रामानुजन की स्मृति में उनके जन्मदिवस पर मनाया जाता है। करीब एक दशक पहले चेन्नई में रामानुजन की 125वीं जयंती समारोह में गणित में उनके अविस्मरणीय योगदान को याद कर उन्हें सम्मान देने के लिए प्रतिवर्ष 22 दिसम्बर को 'राष्ट्रीय गणित दिवस' मनाए जाने का निर्णय लिया गया था। मद्रास से करीब चार सौ किलोमीटर दूर तमिलनाडु के ईरोड शहर में 22 दिसम्बर 1887 को जन्मे श्रीनिवास अयंगर रामानुजन का बचपन कठिनाइयों और निर्धनता के दौर में बीता। तीन वर्ष की आयु तक वह बोलना भी नहीं सीख पाए थे और तब परिवार के लोगों को चिंता होने लगी थी कि कहीं वह गूंगे न हों लेकिन कौन जानता था कि यही बालक गणित के क्षेत्र में इतना महान कार्य करेगा कि सदियों तक दुनिया उन्हें आदर-सम्मान के साथ याद रखेगी। उन्हें गणित में इतनी दिलचस्पी थी कि गणित में उन्हें प्रायः सौ फीसदी अंक मिलते थे लेकिन बाकी विषयों में बामुश्किल ही परीक्षा उत्तीर्ण कर पाते थे क्योंकि गणित के अलावा उनका मन दूसरे विषयों में नहीं लगता था। उन्होंने कभी गणित में किसी तरह का प्रशिक्षण नहीं लिया था। उनका गणित प्रेम इतना बढ़ गया था कि उन्होंने दूसरे विषयों पर ध्यान देना ही छोड़ दिया था। दूसरे विषयों की कक्षाओं में भी वे गणित के ही प्रश्न हल किया करते थे। नतीजा यह हुआ कि 11वीं कक्षा की परीक्षा में वे गणित के अलावा दूसरे सभी विषयों में अनुत्तीर्ण हो गए और इस कारण उन्हें मिलने वाली छात्रवृत्ति बंद हो गई। परिवार की आर्थिक हालत पहले ही ठीक नहीं थी इसलिए परिवार की आर्थिक जरूरतें पूरी करने के लिए उन्होंने गणितज्ञ रामास्वामी अय्यर के सहयोग से मद्रास पोर्ट ट्रस्ट में क्लर्क की नौकरी करनी शुरू की। नौकरी के दौरान भी वे समय मिलते ही खाली पन्नों पर गणित के प्रश्नों को हल करने लग जाया करते थे। एक दिन एक ब्रिटिश अधिकारी की नजर उनके द्वारा हल किए गए गणित के प्रश्नों पर पड़ी तो वह उनकी प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुआ। उसी अंग्रेज के माध्यम से रामानुजन का सम्पर्क जाने-माने ब्रिटिश गणितज्ञ और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर जी एच हार्डी से हुआ। हार्डी ने उनकी विलक्षण प्रतिभा को भांपकर उन्हें अपनी प्रतिभा को साकार करने के लिए लंदन बुला लिया और उनके लिए कैम्ब्रिज के ट्रिनिटी कॉलेज में व्यवस्था की, जिसके बाद उनकी ख्याति दुनियाभर में फैल गई। जी. एस. हार्डी ने रामानुजन को यूलर, गोस, आर्किमिडीज, आईजैक न्यूटन जैसे दिग्गजों के समकक्ष श्रेणी में रखा था। 1917 में उन्हें 'लंदन मैथेमेटिकल सोसायटी' का सदस्य चुना गया और अगले ही वर्ष इंग्लैंड की प्रतिष्ठित संस्था 'रॉयल सोसायटी' ने उन्हें अपना फैलो बनाकर सम्मान दिया। रामानुजन ने करीब पांच साल कैम्ब्रिज में बिताए और उस दौरान गणित से संबंधित कई शोधपत्र लिखे। इंग्लैंड में उन पांच वर्षों के दौरान उन्होंने मुख्यतः संख्या सिद्धांत के क्षेत्र में कार्य किया। प्रोफ़ेसर जी एच हार्डी के साथ मिलकर रामानुजन ने कई शोधपत्र प्रकाशित किए और उन्हीं में से एक विशेष शोध के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने रामानुजन को बी.ए. की उपाधि भी प्रदान दी। महान गणितज्ञ रामानुजन की गणना आधुनिक भारत के उन व्यक्तित्वों में की जाती है, जिन्होंने विश्व में नए ज्ञान को पाने और खोजने की पहल की। भारतीय गणित की महान परम्परा के वाहक श्रीनिवास रामानुजन को 'गणितज्ञों का गणितज्ञ' और संख्या सिद्धांत पर अद्भुत कार्य के लिए 'संख्याओं का जादूगर' भी कहा जाता है, जिन्होंने खुद से गणित सीखा और जीवनभर में गणित के 3884 प्रमेयों (थ्योरम्स) का संकलन किया, जिनमें से अधिकांश प्रमेय सही सिद्ध किए जा चुके हैं। रामानुजन ने गणितीय विश्लेषण, अनंत श्रृंखला, संख्या सिद्धांत तथा निरंतर भिन्न अंशों के लिए आश्चर्यजनक योगदान दिया और अनेक समीकरण व सूत्र पेश किए। वे ऐसे विश्वविख्यात गणितज्ञ थे, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों और विषय गणित की शाखाओं में अविस्मरणीय योगदान दिया और जिनके प्रयासों तथा योगदान ने गणित को एक नया अर्थ दिया। उनके द्वारा की गई खोज 'रामानुजन थीटा' तथा 'रामानुजन प्राइम' ने इस विषय पर आगे के शोध और विकास के लिए दुनियाभर के शोधकर्ताओं को प्रेरित किया।

## सेहत मंत्र

## योगाभ्यास से याद्दाश्त बेहतर होती है और सीखने की क्षमता भी बढ़ती है

योग के फायदे किसी से छिपे नहीं हैं। योग से होने वाले लाभों से लोगों को अवगत कराने के लिए जून के महीने में योगा दिवस भी मनाया जाता है। इतना ही नहीं, पिछले कुछ सालों में लोगों के बीच योग का क्रेज भी काफी बढ़ा है। लेकिन अगर आप सोचते हैं कि इसके फायदे सिर्फ व्यस्क लोगों तक ही सीमित हैं तो आप गलत हैं। सात?आठ साल से अधिक उम्र के बच्चे बेझिझक कई प्रकार के योगासन कर सकते हैं और इसका लाभ उठा सकते हैं। अपनी दिनचर्या में यदि बच्चे योग को शामिल कर लें तो इससे उन्हें कई तरह के लाभ होते हैं। सबसे पहले तो इससे उनके शरीर की कार्यप्रणाली बेहतर तरीके से काम करती है। साथ ही योग करने से एंडोक्राइनल नामक ग्रंथि को पोषण मिलता है। यह ग्रंथि बच्चों के विकास में अहम भूमिका निभाती है। योग जहां एक ओर शारीरिक विकास में सहायक होता है, वहीं दूसरी ओर यह बच्चों की मेंटल हेल्थ को भी बेहतर बनाता है। योग का नियमित अभ्यास करने से बच्चों में एकाग्रता, लर्निंग पावर व मेमोरी बेहतर होती है। इतना ही नहीं, यह उन्हें शांत भी बनाता है, इसलिए जो बच्चे एग्रेसिव स्वभाव के होते हैं, उन्हें नियमित रूप से योगाभ्यास करना चाहिए। योगाभ्यास लड़कियों के लिए भी बेहद लाभकारी माना गया है। इसका अभ्यास करने से उन्हें आगे चलकर मासिक धर्म के दौरान दर्द का अनुभव कम होता है। साथ ही उन्हें मासिक धर्म में अनियमितता या हैवी ब्लीडिंग जैसी समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता। इसके अतिरिक्त योगाभ्यास लड़कियों के पिट्यूटरी व पाइनल फंक्शन को नियंत्रित करता है, जिसके कारण उनका व्यवहार भी बेहतर होता है। भले ही योगाभ्यास बच्चों के लिए फायदेमंद हो लेकिन शुरूआती दौर में, बच्चों को कुछ ही योगासनों का अभ्यास करना चाहिए। जैसे ताड़ासन, वीरासन, पश्चिमोत्तानासन, त्रिकोणासन, वृक्षासन, पादहस्तासन, प्रणायाम, सूर्य नमस्कार आदि। यह सभी आसन बच्चों के समग्र विकास में सहायक होते हैं। वहीं जब आप योग करने के अभ्यस्त हो जाएं तो आप अन्य सभी योगासनों का भी अभ्यास कर सकते हैं।

## धर्म मंत्र

## हनुमान रक्षा स्त्रोत का पाठ करने से जीवन में नहीं आती कोई बाधा

बजरंग बली हनुमान का जन्म भगवान श्रीराम की सहायता के लिए हुआ। हनुमान जी को भगवान शंकर का अवतार भी माना जाता है। कहा जाता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की सेवा के निमित्त भगवान शिव जी ने एकादश रुद्र को ही हनुमान के रूप में अवतरित किया था। हनुमान जी चूंकि वानर उपदेवता श्रेणी के तहत आते हैं इसलिए वे मणिकुण्डल, लंगोट व यज्ञोपवीत धारण किए और हाथ में गदा लिए ही उत्पन्न हुए थे। पुराणों में कहा गया है कि उपदेवताओं के लिए स्वेच्छानुसार रूप एवं आकार ग्रहण कर लेना सहज सिद्ध है। पुराणों के अनुसार, इस धरा पर जिन सात मनीषियों को अमरत्व का वरदान प्राप्त है, उनमें बजरंगबली भी हैं। माता अंजनी एवं पवन देवता के पुत्र हनुमान का जीवनकाल पराक्रम और श्रीराम के प्रति अटूट निष्ठा की असंख्य गाथाओं से भरा पड़ा है। हनुमान जी में किसी भी संकट को हर लेने की क्षमता है और अपने भक्तों की यह सदैव रक्षा करते हैं। हनुमान रक्षा स्त्रोत का पाठ यदि नियमित रूप से किया जाए तो कोई बाधा आपके जीवन में नहीं आ सकती। साथ ही हनुमान चालीसा का पाठ करने से बड़े से बड़ा भय दूर हो जाता है। हनुमान जयंती के दिन हनुमान जी के पूजन का विशेष महत्व है। हनुमान जी भक्तों से विशेष प्रेम करते हैं और उनकी हर पुकार को सुनते हैं। श्रीराम की नित उपासना करने वालों पर हनुमान जी खूब प्रसन्न रहते हैं। हनुमान जयंती के दिन हनुमानजी की पूजा विधि विधान से करनी चाहिए।

## पर्यटन

## टूरिस्ट के दिलों पर राज करता है यह खूबसूरत शहर साऊथ अफ्रीका

दुनियाभर में अपने एडवेंचर्स और प्राकृतिक सुंदरता के लिए फ़ेमस दक्षिण अफ्रीका टूरिस्टों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। इसकी सुंदरता के कारण लोग इस शहर की और खिचे चले आते हैं। दक्षिण अफ्रीका आने वाले टूरिस्ट अपना सफर केपटाऊन शहर से शुरू करें तो उन्हें स्वच्छता और सुंदरता का अनोखा संगम देखने को मिलेगा। दक्षिण अफ्रीका को इंद्रधनुषी छटाओं वाला देश भी कहा जाता है। क्योंकि यहां आप इंद्रधनुष को करीब से देख सकते हैं। उत्तरी और पश्चिमी केपटाऊन की वादियों को फूलों से ढके देखना चाहते हैं तो यहां घूमने के वसंत ऋतु बिल्कुल परफ़ेक्ट सीजन है। दक्षिण अफ्रीका के जंगलों में आप अफ्रीकी हाथी, सबसे छोटा छुछुंदर, जिराफ, चीता, शुतुरमुर्ग, कोरी बस्टर्ड, चितकबरे गैंडे, हिप्पो और मगरमच्छ देख सकते हैं। अफ्रीका के इस शहर में अन्य जनजातियों के अलावा एशइयाई लोग भी बसे हुए है। इसमें 27 लाख लोग तो भारतीय है, जो बढ़िया बिजनेस चलाने के साथ अफ्रीका की आर्थिक स्थिति को भी मजबूत कर रहे हैं। भारतीय लोग होने के कारण आप यहां इंडियन फूड का मजा भी ले सकते हैं। दुनिया के सबसे निराले और खूबसूरत शहर केपटाऊन की अपनी अलग पहचान है। टूरिस्ट यहां ऊंचे पर्वतों, मनोरम समुद्री किनारों के साथ इस अनूठे शहर की मनमोहक तस्वीर का मजा ले सकते हैं। यहां के ऊंचे चपटे टेबल माऊंटेन, अंगूर के बगीचे और समुद्री तट आपके ट्रिप को और भी यादगार बना देंगे। यहां के ऊंचे पहाड़ों पर केबल कार से आप पूरे शहर की सुंदरता और वन्य जीवन को देख सकते हैं। केपटाऊन को दक्षिण अफ्रीका का सबसे शांत शहर माना जाता है। यहां पर सबसे फ़ेमस टेबल माऊंटेन है, जिसे आप पूरे केपटाऊन शहर के किसी भी कोने से साफ देख सकते हैं। शहर के बीच में स्थित विक्टोरिया एल्फ्रेड वाटरफ्रंट मस्ती और धूम-धड़ाका करने के लिए फ़ेमस है। यहां पर बढ़िया रेस्टोंरेस, बार, म्यूजिक शॉप और बड़े एक्वेरियम भी है, जिसे आप देख सकते हैं।

# राज्य में पहला आईसीडीएस ब्लॉक होगा कुर्सी

## डीएम सत्येंद्र की सराहना, बढ़ा हौसला

कैनविज टाइम्स संवाददाता

निंदूरा बाराबंकी। कुर्सी विधानसभा का विकास खंड निंदूरा, राज्य का वह पहला ब्लाक होगा,जहां समस्त आंगनबाड़ी केंद्रों के बच्चे मेज, कुर्सी पर बैठकर पढ़ाई करेंगे। इस उपलब्धि का बड़ा श्रेय बाराबंकी के जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार के खाते में होगा।शनिवार को फतेहपुर में आयोजित तहसील दिवस आयोजन में ?जिलाधिकारी सत्येन्द्र कुमार की सराहनीय पहल सार्वजनिक हुई जब उन्होंने बहरौली तृतीय की ब्रज रानी व बडडुपुर की आंगनबाड़ी कार्यकत्री सावित्रीदेबी को तहसील परिसर में संपूर्णता अभियान' के तहत मेज कुर्सियां का सेट प्रदान किया।और 'पोषण के साथ पढ़ाई अभियान का लक्ष्य प्राप्ति की अपेक्षा जताई। जिलाधिकारी श्री कुमार ने बताया कि बाल्यावस्था के अनुभव और शैक्षणिक प्रभाव मानव के व्यक्तित्व में आजन्म रहता है। इसलिए आंगनबांड़ी केंद्रों पर अच्छा वातावरण और इन्फ्रास्ट्रक्चर देने का प्रयास किया जा रहा है,ताकि इन्हे प्री-प्राइमेरी लर्निंग केंद्र के रूप में स्थापित किया जा सके ।

बतातें चले कि बाल विकास परियोजना निंदूरा में कुल 204 स्वीकृत आंगन बांडी केंद्र है।जिनमें 108 लोकेटेड आंगनबांड़ी केंद्रों में से 35 केंद्रों पर खंड विकास अधिकारी निंदूरा आलोक वर्मा व बाल विकास परियोजना अधिकारी अरुण कुमार पांडेय के समन्वय एवं प्रयास तथा एडीओ पंचायत निंदूरा अनिल कुमार सिंह के सहयोग विशेष से बतौर परीक्षण, ग्राम पंचायतों द्वारा विगत सितंबर व अक्टूबर माह में कुर्सी मेज सेट प्रदान किए जा चुके है। वहीं राज्यपाल की अनुकम्पा विशेष से आईसीआईसीआई बैंक द्वारा चालू माह दिसम्बर में 15 केन्द्रों को संतृप्त किया जा चुका है। जहां तीन से छः माह के नौनिहाल अब कुर्सी मेज पर बैठकर पढ़ाई कर सकेंगे।

**सुखद परिणाम**

उक्त आंगनबाड़ी केंद्रों पर औसत उपस्थिति में करीब 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आगामी 15 जनवरी तक शेष लोकेटेड केंद्रों को संतृप्त करने का लक्ष्य है।

**बोले सहायक विकास अधिकारी**

एडीओ पंचायत अनिल कुमार सिंह ने कहते हैं कि लक्ष्य पूरा होते ही बाल विकास परियोजना निंदूरा तीन से छः वर्ष के बच्चों के लिए सभी कोलोकेटेड केंद्रों पर कुर्सी और मेज उपलब्ध कराने वाला प्रदेश का पहला आईसीडीएस ब्लॉक होगा। विशेष अवसर पर पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह उप जिलाधिकारी फतेहपुर राजेश कुमार विश्वकर्मा, सीडीपीओ अरुण कुमार पांडेय,एडीओ पंचायत अनिल कुमार सिंह उपस्थित रहे।

**इन केंद्रों को मिला फर्नीचर**

अब तक जिन आंगनबाड़ी केंद्रों को फर्नीचर मिला है,उनमें ग्राम पंचायत मल्लावां, सिंगतरा, हसुवापारा, करूवा, कुर्सी, बहरौली, जजियामऊ, कोडरी गोपाल पुर, मोहसंड, ददेरा, चकिया, परवर भारी, दीनपनाह, समरदा, दरावां, घुंघटेर, कतुरी कला, भद्रास, बिसई कुल 50 पंचायतों में आंगनबाड़ी केंद्रों को फर्नीचर प्राप्त कराया गया।

**डीएम सत्येंद्र कुमार ने बढ़ाया हौसला**

जिलाधिकारी श्री कुमार ने मातहतों का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि ब्लाक निंदूरा से अन्य को भी सीख लेना चाहिए। जिससे इस महत्वाकांक्षी योजना से पूरा जिला संतृप्त हो।

# सीडीओ ने पूर्ण मनोयोग से सुनी जन शिकायतें, तीन शिकायतों का निस्तारण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सिरौलीगौसपुर बाराबंकी। तहसील सम्पूर्ण समाधान दिवस पारिजात सभागार में मुख्य विकास अधिकारी अ सुदन की अध्यक्षता एवं उपजिलाधिकारी प्रीति सिंह

## लेखपाल, बाचालता की यहां भी गूंज

के संयोजन में हुआ । जिसमें कुल 34 शिकायतें आयीं। तीन शिकायतों का मौके पर निस्तारण भी किया गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में मुख्य विकास अधिकारी अ. सुदन ने फरियादियों की समस्याओं को सुना एवं शिकायतों का गुणवत्ता युक्त निस्तारण करने के निर्देश भी दिए। ग्राम इंटोरा के दुर्गा प्रसाद ने पूर्व लेखपाल पर आरोप लगाया कि उसकी जमीन में हेराफ़ेरी करते हुए गलत नाम अंकित कर दिया है।जिसे खत्म कर खतौनी पर सही नाम दर्ज करवाए जाएं। स्पष्टीकरण मांगा है। दिवस में नायब तहसीलदार दिनेश कुमार पाण्डेय श्वेताभ उपजिलाधिकारी प्रीति सिंह ने सम्पूर्ण समाधान दिवस में वन विभाग सहित कई विभागों के अधिकारी कर्मचारियों के न आने को गम्भीरता पूर्वक लेते हुए सिंह अवधेश कुमार, खंड विकास अधिकारी अदिती श्रीवास्तव, मोनिका पाठक,शिवजी, अभिषेक,जे ई एम आई सिरौलीगौसपुर, डाक्टर सन्तोष कुमार सिंह अधीक्षक, सहित अन्य विभागों के अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे।

# सभासदों ने की नियमानुसार हुए टैक्सी स्टैंड को निरस्त करने की मांग

## समाधान दिवस में सौंपा शिकायती पत्र, जांच के आदेश

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हैदरगढ़ बाराबंकी : अध्यक्ष नगर पंचायत आलोक तिवारी उपजिलाधिकारी (न्यायिक) आनंद तिवारी , अधिशाषी अधिकारी अशोक कुमार खरवार, एवं सभासदों की मौजूदगी में हुई टैक्सी स्टैंड की नीलामी को निरस्त करने के लिए आज आधा दर्जन सभासदों ने एसडीएम को समाधान दिवस में शिकायती पत्र दिया है । गौरतलब है कि जिलाधिकारी श्री सत्येंद्र कुमार द्वारा जल्द से जल्द नगर की सीमा में स्टैंड शुरू करने को कहा था जिसके क्रम में नगर पंचायत अध्यक्ष आलोक तिवारी के निर्देश पर नगर पंचायत एवं राजस्व की सयुक्त टीम द्वारा भूमि चिन्हांकन कर स्टैंड बनवाया गया जिसमें बैठने हेतु मेज , शौचालय , शुद्ध पेयजल आदि मूलभूत सुविधाओं को ध्यान में रखा गया उसके बाद नगर पंचायत के पत्र पर जिलाधिकारी द्वारा स्टैंड की नीलामी हेतु एसडीएम न्यायिक आनंद तिवारी को नामित किया गया । जानकारी के अनुसार ही बीती 21 नवंबर को एसडीएम , चेयरमैन ईओ और नगर के सभासदों की मौजूदगी में खुली बैठक कराई गई जिसमें नियमानुसार स्टैंड उठाए गए उसके बाद से ही सभासदों का एक तबका विरोध में उतर आया आज पुनः सभासद सूरज दीक्षित , महेश अग्रवाल , रीतू वर्मा , हरिराम , विपिन सोनी आदि ने समाधान दिवस में शिकायत कर स्टैंड प्रक्रिया निरस्त करने की मांग की है । वही सभासद मो0 इसहाक, सब्बीर अली पहाड़ी हाजी अतीक राजीव अवस्थी उमर हासमी आदि ने स्टेन्ड शुरू होने पर नगर पंचायत अध्यक्ष को धन्यवाद ज्ञापित किया।

समाधान दिवस में हैदरगढ़ के सभासदों ने विभिन्न आरोप लगाकर टैक्सी स्टैंड को निरस्त करने हेतु पत्र समाधान दिवस में दिया है जांच करवाकर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

**एसडीएम हैदरगढ़**

# जनता की समस्याओं का समाधान करना हम सबके लिए सर्वोपरि : सत्येंद्र कुमार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। जनता की समस्याओं का त्वरित व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण संभव हो सके इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम तहसील संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार की अध्यक्षता में तहसील फतेहपुर के लोकसभागार में किया गया। जिलाधिकारी ने समस्याओं को बहुत ही गंभीरता के साथ सुनने के उपरांत मौके पर ही उनका निराकरण करने के संबंध में अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि कोई भी फरियादी समस्या के समाधान के उद्देश्य से ही सरकारी कार्यालयों में आता है इसलिए जनता की समस्या का समाधान करना हम सबके लिए सर्वोपरि है। जिलाधिकारी ने निर्देश देते हुए कहा कि भूमि विवाद सम्बंधित जन शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता से किया जाए। साथ ही यह भी निर्देश दिए कि शासन द्वारा संचालित समस्त जन-कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जनपद के हर पात्र व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए। संबंधित विभाग के अधिकारी सोशल मीडिया व अन्य माध्यमों से शासन की योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार कराएं , जिससे कि आम आदमी भी योजना से सीधे जुड़ सके और लाभान्वित हो सकें। संपूर्ण समाधान दिवस में कुल 74 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए, जिसमें से 07 शिकायतों का जिलाधिकारी के माध्यम से मौके पर निस्तारण किया गया। राजस्व विभाग से सम्बन्धित 23 प्रार्थना पत्र , पुलिस विभाग से सम्बन्धित 14 प्रार्थना पत्र , विकास से सम्बन्धित 12 प्रार्थना पत्र, खाद्य एवं रसद विभाग से 08 प्रार्थना पत्र, विद्युत विभाग से 14 प्रार्थना पत्र, नगर निकाय विभाग से 01 प्रार्थना पत्र, स्वास्थ्य विभाग से 01 प्रार्थना पत्र, जिला प्रोबेशन विभाग से 01 प्रार्थना पत्र प्रस्तुत हुए। जिलाधिकारी ने कहा जिन शिकायतों का मौके पर निस्तारण नहीं हो सका है संबंधित विभाग के अधिकारी स्थलीय निरीक्षण कर शिकायतों का गुणवत्ता के साथ निस्तारण करना सुनिश्चित करें।

# लेखपाल संघ के पदाधिकारी और एंटी करप्शन शिकायतकर्ता में हुई जमकर हाथापाई, रपट

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। शहर स्थित कलेक्ट्रेट परिसर में उस समय हंगामा मच गया। जब लेखपाल संघ के पदाधिकारियों की एंटी करप्शन की टीम और एक शिकायतकर्ता से हाथापाई हो गई। शिकायतकर्ता की माने तो उसे एंटी करप्शन टीम का साथ देना महंगा पड़ गया है। तो वहीं दूसरी तरफ लेखपाल संघ का कहना है कि व्यक्ति ने महिला लेखपाल को बैड टच करने का प्रयास किया। जिससे हाथापाई शुरू हो गई। मारपीट के दौरान बीच-बचाव करने में सभी को चोटें लगी है। इसके बाद एंटी करप्शन टीम और शिकायतकर्ता बलवंत की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी ने लेखपाल के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया है। वहीं शहर कोतवाली प्रभारी आलोक मणि त्रिपाठी ने बताया कि महिला लेखपाल ने अज्ञात व्यक्ति पर बैड टच करने के प्रयास का आरोप लगाया है। घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज निकल जा रहे हैं। आरोपी व्यक्ति की पहचान होने पर मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी। मोहम्मदपुर खाला निवासी बलवंत व घायल व्यक्ति जुगराज ने बताया कि वह अधिवक्ता शहर स्थित कलेक्ट्रेट निजी काम से आया था। जहां पर साईं होटल पर चाय पी रहा था। इसी बीच उनकी मुलाकात एंटी करप्शन टीम से हुई। जिसकी जानकारी होने पर लेखपाल संघ अध्यक्ष आशुतोष वर्मा, चंद्रसेन, बृजेंद्र कुमार, संदीप, सुनील कुमार व अन्य 10 से 15 लोगों ने लोहे की गॉड से सिर पर हमला कर दिया। इस हमले में कुछ महिलाएं भी शामिल थी। उधर लेखपाल संघ से जुड़ी एक महिला लेखपाल द्वारा शहर कोतवाली को दिए

## पुलिस ने लेखपाल संघ के पदाधिकारियों पर मुकदमा दर्ज कर शुरू की जांच पड़ताल

गए शिकायती पत्र में कहा गया है कि शनिवार को संपूर्ण समाधान दिवस के दौरान आवश्यक दस्तावेजों की फोटो कॉपी करने के लिए वह तहसील से बाहर आई। इसी बीच वहां पहुंचे अज्ञात व्यक्ति जिसने पीले रंग की पगड़ी व नीले रंग की जैकेट पहन रखी थी, उसने मेरे कंधे पर टक्कर मारी। मेरे द्वारा विरोध करने पर आरोपी ने बैड टच करने का प्रयास किया। जिसकी सूचना से मौके पर भारी संख्या में लेखपाल साथी उपस्थित हो गए। जिनमें और युवक में जमकर मारपीट हुई। इसी तरह एंटी करप्शन टीम ने भी विवेचना के दौरान कचहरी के बाहर लेखपाल संघ द्वारा हमले किए जाने का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया है।

(खुन्नस में लेखपाल संघ ने की घटना)

शुक्रवार को लेखपाल संघ द्वारा मार पीटे जाने वाला व्यक्ति और कोई नहीं आम आदमी पार्टी का जिला महासचिव जुगराज सिंह है। जिन्होंने पूछने पर बताया कि उन्हें इमानदारी का बड़ा इनाम मिला है। दो दिन पूर्व उनके साथी बलवंत ने एंटी करप्शन टीम की मदद से नवाबगंज तहसील के एक लेखपाल व मुंशी को भूमि पैमाइश के मामले में 20 हजार की घूसखोरी के आरोप में गिरफ्तार कराया था। शुक्रवार को मामले की विवेचना की दौरान एंटी करप्शन टीम शहर स्थित कलेक्ट्रेट परिसर पहुंची। बलवंत के न होने पर जुगराज एंटी करप्शन टीम के बुलाने पर कचहरी पहुंचा। जहां प्लानिंग बनाकर घटना को अंजाम दिया गया।

(नाराज आप पार्टी जिलाध्यक्ष व हजारों कार्यकर्ता)

कचहरी में हुई इस घटना के बाद लेखपाल संघ द्वारा आम आदमी पार्टी के महासचिव के साथ मारपीट करने के मामले में आम आदमी पार्टी के जिलाध्यक्ष धर्मवीर ने कहा कि घटना की जितनी भी निंदा की जाए उतनी कम है। इस घटना से जनपद के हजारों कार्यकर्ताओं में नाराजगी है। यदि हमारे पदाधिकारी के साथ कुछ अवैधानिक हुआ तो हम बड़ा आंदोलन करने को बाध्य होंगे।

## मेला में व्यवस्था के लिए सम्मानित किए गए कार्मिक

जैदपुर बाराबंकी कैनविज टाइम्स संवाददाता। कस्बे में मोहल्ला संगत स्थित श्रीराम जानकी बालाजी महाराज संगत मंदिर में आयोजित तीन दिवसीय श्रीराम विवाह महोत्सव (धनुष यज्ञ मेला) में कस्बे मैं चेयरमैन प्रतिनिधि दाऊद अंसारी के निर्देशन में साफ-सफाई कार्य में उत्कृष्ट योगदान देने वाले सद्दाम अली और सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। श्रीराम लीला धनुष यज्ञ मेला कमेटी ने श्रीराम बारात शोभायात्रा मार्ग की सफाई और चूना छिड़काव कार्य में उनकी अहम भूमिका की सराहना की और सफाई कर्मचारियों को स्टील टिफिन और लड्डू प्रदान कर विशेष सम्मान दिया। धनुष यज्ञ मेला कमेटी के हाथों सम्मान पाकर सफाई कर्मी गदगद दिखे। वहीं रविवार को होने वाली पीसीएस परीक्षा के मद्देनजर कॉलेज के आस-पास बिखरी गंदगी और कूड़े की सफाई की गई। इस अभियान में नगर पंचायत के सफाई कर्मचारी और जेसीबी की मदद से फैल हुए कूड़े को ट्रैक्टर-ट्रॉलियो में भरकर कस्बे के बाहर कूड़ा डंपिंग ग्राउंड में डाला गया ! जबकि कस्बे के नूर मोहम्मद इंटर कॉलेज में होने वाली परीक्षा को लेकर जैदपुर नगर पंचायत की तरफ से कॉलेज के आस-पास बिखरी गंदगी और कूड़े की सफाई करते नजर आये।

## समाधान दिवस ,निस्तारण की गति धीमी

रामनगर बाराबंकी कैनविज टाइम्स संवाददाता। उप जिलाधिकारी पवन कुमार की अध्यक्षता में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में राजस्व संबंधी सबसे अधिक शिकायतें 57 व पुलिस और विकास संबंधी आठ-8 खाद्य एवं रसद 8 विद्युत 1 समाज कल्याण 1 कृषि विभाग 2 जलनिगम 1 नगर निकाय 1 व सिंचाई विभाग की एक शिकायत सहित कुल 88 शिकायती प्रार्थनापत्र आए।

## चुनाव सकुशल संपन्न, अध्यक्ष बनीं आरती

निंदूरा बाराबंकी। विकास खंड क्षेत्र की ओदरिया ग्राम पंचायत स्थित टीएचआर प्लांट के अध्यक्ष,उपाध्यक्ष और सचिव पद के लिए शनिवार को ब्लॉक प्रांगण स्थित जनलोक सभागार में चुनाव संपन्न हुआ। अध्यक्ष पद के लिए आरती देवी ,माया,पिंकी ने,कोषाध्यक्ष पद के लिए नीतू,नीलम ,साधना सिंह ने और सचिव पद के लिए सीता, रेखारानी ने नामांकन किया।जिसके उपरांत समूह की महिलाओं ने मतदान किया। 35 वोटो के साथ माया देवी अध्यक्ष चुनी गई वहीं आरती 25 वोटो के साथ द्वितीय स्थान पर और पिंकी पांच वोटो के साथ तीसरे स्थान पर रही। 34 वोटो के साथ नीतू कोषाध्यक्ष चुनी गई वहीं नीलम को 19 वोट मिले और वह दूसरे स्थान पर रही,साधना सिंह नौ वोट मिले। 47 वोटो के साथ सीता सचिव चुनी गई, रेखा को 17 वोट प्राप्त हुए।

## कार्यालय ग्राम पंचायत रामपुर विकास खण्ड-बनीकोडर जनपद बाराबंकी

पत्रांक - मेमो0 / मनरेगा / निविदा / 2024-25 दिनांक - 20/12/24

### निर्माण सामग्री आपूर्ति हेतु अल्पकालीन निविदा सूचना

ग्राम पंचायत रामपुर विकास खण्ड बनीकोडर जनपद बाराबंकी की मनरेगा योजनान्तर्गत स्वीकृत वार्षिक कार्य योजना 2024-25 में निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु प्राप्त वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वीकृत के सापेक्ष स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार निर्धारित तकनीकी विष्टियों के अनुरूप सामग्री संदभित कार्यस्थल पर आपूर्ति हेतु इच्छुक फर्मों/ठेकेदारो से निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र दिनांक 20/12/2024 से दिनांक 25/12/2024 तक ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है तथा दिनाँक 25/12/2024 को 2:00 बजे तक ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में स्थापित निविदा पेटी में डाली जायेगी तथा उसी दिन अपरान्ह 04:00 बजे ग्राम पंचायत कार्यालय में ग्राम प्रधान / ग्राम सचिव / निविदा समिति के समक्ष खोली जायेगी।

| क्र.स. | कार्य का नाम | सामग्री का विवरण | कार्य की वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वीकृत धनराशि | कार्य पर सामग्री अंश हेतु स्वीकृत धनराशि | धरोहर राशि (लाख में) | निविदा प्रपत्र मूल्य (जीएसटी) | कार्य पूर्ण करने की अवधि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | सत्यनाम के खेत के पास बंधा पर पुलिया निर्माण कार्य | ईटा, गिट्टी मोरंग सीमेंट सरिया | 999950 | 837867 | | 500 | 30 दिन |
| 2. | माझां डामर रोड से मंदिर होकर राजेंद्र के घर तक व मंदिर से जवाहर लाल के घर तक खड़ंजा कार्य | ईटा | 995536.00 | 721733 | | 500 | 30 दिन |

**नियम व शर्तें -**

निविदादाता का पंजीकरण व्यापार कर विभाग में अवश्य होना चाहिए। 2- निविदा डालने से पूर्व कार्यस्थल का निरीक्षण अवश्य कर लें। 3- सामग्री की आपूर्ति कार्यस्थल पर प्राप्त की जाएगी। इस हेतु पृथक से कोई भाड़ा देय नहीं होगा। 4- इच्छुक निविदादाता कार्यवार तथा सामग्रीवार पृथक-पृथक निविदा प्रस्तुत कर सकते हैं। 5-निविदा प्रपत्र क्रय करते समय कार्य पर वांछित सामग्री की मात्रा का विवरण निः शुल्क प्राप्त किया जा सकता है तथा कार्यवार सामग्री की मात्रा सम्बन्धी विवरण पंचायत भवन के नोटिस बोर्ड पर भी चस्पा है। 6- निविदा स्वीकृत होने के पश्चात रु0 100 के स्टाम्प पेपर पर अनुबंध पत्र निष्पादित करना होगा। 7- ब्लैक लिस्टेड तथा अन्य कारणों से अस्वीकृत फर्मों/ठेकेदारों की निविदा मान्य नही होगी। 8- किसी भी कार्य पर शासन स्तर पर रोक या विवाद की स्थिति में स्वीकृत कार्य पर आपूर्तित सामग्री का भुगतान संभव न होगा एवं न्यायालय में बाध्य योग्य भी नहीं होगा। 9- बिना कारण बताए किसी भी निविदा को निरस्त करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा। 10- निविदा सामग्री की दर समान होने पर लॉटरी की पद्धति से निविदादाता का चयन किया जाएगा। 11-दिनांकः 25/12/24 को यदि किसी कारण निविदा खुलने का कार्य प्रभावित होता है, तो यह कार्य अगले दिवस में संपन्न होगा।

**शिवप्यारी**
**ग्राम प्रधान**
**ग्राम पंचायत-रामपुर**
**वि0ख0 बनीकोडर, बाराबंकी**

**अमरेंद्र सिंह**
**ग्राम विकास अधिकारी**
**ग्राम पंचायत-रामसिंह**
**वि0ख0 बनीकोडर, बाराबंकी**

## कार्यालय ग्राम पंचायत खुशेहटी विकास खण्ड-बनीकोडर जनपद बाराबंकी

पत्रांक - मेमो0 / मनरेगा / निविदा / 2024-25 दिनांक - 23/12/24

### निर्माण सामग्री आपूर्ति हेतु अल्पकालीन निविदा सूचना

ग्राम पंचायत खुशेहटी विकास खण्ड बनीकोडर जनपद बाराबंकी की मनरेगा योजान्तगत स्वीकृत वार्षिक कार्य योजना 2024-25 में निम्नलिखित कार्य हेतु प्राप्त वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वीकृत के सापेक्ष स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार निर्धारित तकनीकी विष्टियों के अनुरूप सामग्री संदभित कार्यस्थल पर आपूर्ति हेतु इच्छुक फर्मों/ठेकेदारो से निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र दिनांक 23/12/2024 से दिनांक 29/12/2024- तक ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है तथा दिनाँक 30/12/2024 को 2:00 बजे तक ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में स्थापित निविदा पेटी में डाली जायेगी तथा उसी दिन अपरान्ह 04:00 बजे ग्राम पंचायत कार्यालय में ग्राम प्रधान / ग्राम सचिव / निविदा समिति के समक्ष खोली जायेगी।

| क0स0 | कार्य का नाम | सामग्री का विवरण | कार्य की वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वीकृत धनराशि | कार्य पर सामग्री अंश हेतु स्वीकृत धनराशि | धरोहर राशि (लाख में) | निविदा प्रपत्र मूल्य (जीएसटी) | कार्य पूर्ण करने की अवधि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | देवी स्थान से गांव के बाहर तक इंटरलॉकिंग निर्माण कार्य | प्रथम श्रेणी, ईट इंटरलॉकिंग ईट सीमेंट, बालू, मौरंग गिट्टी | 984518 | 815087 | 1000/-रू0 मात्र | NIL | |

**नियम व शर्तें -**

निविदादाता का पंजीकरण व्यापार कर विभाग में अवश्य होना चाहिए। 2- निविदा डालने से पूर्व कार्यस्थल का निरीक्षण अवश्य कर लें। 3- सामग्री की आपूर्ति कार्यस्थल पर प्राप्त की जाएगी। इस हेतु पृथक से कोई भाड़ा देय नहीं होगा। 4- इच्छुक निविदादाता कार्यवार तथा सामग्रीवार पृथक-पृथक निविदा प्रस्तुत कर सकते हैं। 5-निविदा प्रपत्र क्रय करते समय कार्य पर वांछित सामग्री की मात्रा का विवरण निः शुल्क प्राप्त किया जा सकता है तथा कार्यवार सामग्री की मात्रा सम्बन्धी विवरण पंचायत भवन के नोटिस बोर्ड पर भी चस्पा है। 6- निविदा स्वीकृत होने के पश्चात रु0 100 के स्टाम्प पेपर पर अनुबंध पत्र निष्पादित करना होगा। 7- ब्लैक लिस्टेड तथा अन्य कारणों से अस्वीकृत फर्मों/ठेकेदारों की निविदा मान्य नही होगी। 8- किसी भी कार्य पर शासन स्तर पर रोक या विवाद की स्थिति में स्वीकृत कार्य पर आपूर्तित सामग्री का भुगतान संभव न होगा एवं न्यायालय में बाध्य योग्य भी नहीं होगा। 9- बिना कारण बताए किसी भी निविदा को निरस्त करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा। 10- निविदा सामग्री की दर समान होने पर लॉटरी की पद्धति से निविदादाता का चयन किया जाएगा। 11-दिनांकः 30/12/24 को यदि किसी कारण निविदा खुलने का कार्य प्रभावित होता है, तो यह कार्य अगले दिवस में संपन्न होगा।

**मंशाराम**
**ग्राम प्रधान**
**ग्राम पंचायत-खुशेहटी**
**वि0ख0 बनीकोडर, बाराबंकी**

**ग्राम विकास अधिकारी**
**ग्राम पंचायत-खुशेहटी**
**वि0ख0 बनीकोडर, बाराबंकी**

# भारतीय हॉकी के लिए यादगार रहा वर्ष 2024, ओलंपिक पदक के साथ पीआर श्रीजेश को मिली मनचाही विदाई

एजेंसी

नई दिल्ली। पांच दशक बाद लगातार दो ओलंपिक पदक, हॉकी इंडिया लीग की वापसी और महिला टीम के जीत की राह पर लौटने से वर्ष 2024 भारतीय हॉकी के लिए यादगार रहा हालांकि महान गोलकीपर पीआर श्रीजेश और महिला हॉकी स्टार रानी रामपाल के संन्यास के साथ एक दौर का अंत भी हो गया। पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतकर हरमनप्रीत सिंह की कप्तानी वाली भारतीय टीम ने साबित कर दिया कि टोक्यो खेलों में मिला कांसा कोई तुक्का नहीं था। पिछले दो दशक से भारतीय हॉकी के सबसे मजबूत स्तंभ रहे श्रीजेश को भी इस पदक के साथ खेल से मनचाही विदाई मिली। अब जूनियर हॉकी टीम के कोच के रूप में वह एक नयी भूमिका में नजर आयेंगे। टोक्यो और पेरिस से पहले भारतीय हॉकी टीम ने 1968 मैक्सिको सिटी और 1972 म्युनिख ओलंपिक में लगातार पदक जीते थे। कोच क्रेग फुल्टोन के साथ भारतीय टीम ने अपने

रक्षात्मक ढांचे और जवाबी हमलों पर अधिक जोर दिया है और इसके नतीजे भी मिले हैं। ओलंपिक में भारत ने बेखौफ हॉकी खेली और दस खिलाड़ियों के साथ खेलते हुए क्वार्टर फाइनल में ब्रिटेन को हराया। फुल बैक अमित रोहिदास को लालकार्ड मिलने के बाद भारत ने 43 मिनट तक दस खिलाड़ियों के साथ खेला और शूट आउट में एक बार फिर श्रीजेश के कौशल ने भारत को लगातार दूसरे ओलंपिक सेमीफाइनल में जगह दिलाई। आखिरी पूल मैच में भारत ने आस्ट्रेलिया को 3-2 से हराया और ओलंपिक में 52 साल बाद इस दिग्गज टीम पर जीत मिली थी। फाइनल खेलने की उम्मीदें जर्मनी से करीबी मुकाबले में हार के बाद टूट गई लेकिन इस हार के 24 घंटे के भीतर भारत ने स्पेन को 2 -1 से हराकर कांस्य पदक जीता। भारतीय हॉकी में कई सितारों का उदय हुआ लेकिन अनुभवी हरमनप्रीत और श्रीजेश का जलवा कायम रहा। दोनों ने टीम की सफलता में सूत्रधार की भूमिका निभाई। श्रीजेश जहां गोल के सामने भारत की दीवार साबित हुए वहीं कप्तान हरमनप्रीत ने दस गोल दागे जिसके दम पर उन्हें तीसरी बार एफआईएच वर्ष के सर्वश्रेष्ठ पुरूष खिलाड़ी का पुरस्कार भी मिला। टोक्यो में ऐतिहासिक चौथे स्थान पर रही भारतीय महिला टीम की पूर्व कप्तान रानी रामपाल ने भी 14 वर्ष के सुनहरे कैरियर पर विराम लगा दिया। हरियाणा के शाहबाद से निकलकर हॉकी की बुलंदियों को छूने वाली रानी अब जूनियर और महिला लीग में कोच के रूप में अपनी सेवायें देंगी। सात साल बाद हॉकी इंडिया लीग की वापसी की घोषणा सोने पे सुहागा रही। इस लीग से युवाओं को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के साथ खेलने का मौका मिलेगा। इस बार चार टीमों की महिला हॉकी लीग भी साथ में होगी। पुरुषों की लीग 28 दिसंबर से राउरकेला में जबकि महिलाओं की 12 जनवरी से रांची में खेली जायेगी। साल की शुरूआत में महिला टीम का पेरिस ओलंपिक के लिये क्वालीफाई नहीं कर पाना निराशाजनक रहा। इसके बाद यानेके शॉपमैन की जगह हरेंद्र सिंह को एक बार फिर कोच बनाया गया।

# बॉक्सिंग डे टेस्ट में शीर्षक्रम से बेहतर प्रदर्शन चाहते हैं जडेजा

एजेंसी

मेलबर्न। भारत के स्टार हरफनमौला रविंद्र जडेजा ने शनिवार को कहा कि शीर्षक्रम के रन नहीं बना पाने से निचले क्रम पर दबाव बनता है और उन्हें बॉक्सिंग डे टेस्ट में बल्लेबाजों से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है। आस्ट्रेलिया के खिलाफ वर्षाबाधित ब्रिसबेन टेस्ट में जडेजा ने पहली पारी में 77 रन बनाकर ड्रॉ कराने में अहम भूमिका निभाई। एमसीजी पर बातचीत के दौरान जडेजा ने कहा ,'' भारत के बाहर खेलने पर शीर्षक्रम के रन काफी महत्वपूर्ण है खासकर आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका में। जब शीर्षक्रम रन नहीं बनाता है तो निचले क्रम पर दबाव बन जाता है। उन्होंने कहा ,'' उम्मीद है कि इस टेस्ट में शीर्षक्रम और मध्यक्रम अच्छे रन बनायेगा। हमें शीर्षक्रम से अच्छे प्रदर्शन की जरूरत है। अगर बल्लेबाजों में सभी योगदान देंगे तो टीम का प्रदर्शन बेहतर होगा। ब्रिसबेन में केएल राहुल (84) को छोड़कर भारत के शीर्षक्रम के बल्लेबाज कुछ खास नहीं कर सके। पहले दो टेस्ट से बाहर रहे जडेजा को ब्रिसबेन में मौका दिया गया था। जडेजा ने कहा कि पहले दो टेस्ट से बाहर रहने से उन्हें हालात के अनुकूल ढलने और गाबा टेस्ट की तैयारी का समय मिल गया। उन्होंने कहा कि मुझे यहां के हालात के अनुकूल खुद को ढालने के लिये काफी मसय मिला। मैं बहुत दिन से यहां हूं और लगातार बल्लेबाजी और गेंदबाजी का अभ्यास कर रहा हूं इसलिये हालात को समझ गया हूं। नेट पर होमवर्क से मुझे काफी मदद मिली। बॉक्सिंग डे टेस्ट के बारे में उन्होंने कहा कि तीन टेस्ट के बाद 1-1 से बराबरी पर रहना अच्छा है। अगले दो मैच काफी अहम होंगे। अगर हम एक टेस्ट जीत जाते हैं तो ट्रॉफी हमारे पास रहेगी क्योंकि पिछली दो बार हमने जीती है। ब्रिसबेन टेस्ट के बाद आफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने अचानक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से विदा लेकर सभी को चौंका दिया। जडेजा ने इस बारे में कहा ,'' मुझे प्रेस कांफ्रेंस से पांच मिनट पहले ही इसके बारे में पता चला। किसी ने मुझे बताया कि ऐसा होने जा रहा है। हम पूरा दिन साथ रहे लेकिन उसने मुझे संकेत भी नहीं दिया। मुझे आखिरी पल पता चला। हम सभी को पता है कि अश्विन का दिमाग कैसे चलता है। अश्विन को अपना मेंटोर मानने वाले जडेजा ने कहा कि वह मैदान पर मेरे मेंटोर की तरह रहा। हम इतने साल से गेंदबाजी साझेदार के रूप में साथ खेल रहे थे। मैदान पर एक दूसरे को संदेश देते रहते थे। मुझे उसकी कमी खलेगी।

# केरला ब्लास्टर्स का लक्ष्य मोहम्मडन एससी के खिलाफ दूसरी जीत दर्ज करने पर

एजेंसी

कोच्चि। केरला ब्लास्टर्स एफसी और मोहम्मडन एससी रविवार शाम यहां जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में खेले जाने वाले इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2024-25 मुकाबले में भिड़ेंगी, तो ब्लास्टर्स का लक्ष्य मोहम्मडन स्पोर्टिंग पर लीग डबल दर्ज करना होगा। केरला ब्लास्टर्स एफसी ने 21 अक्टूबर, 2024 को दोनों टीमों के बीच सीजन का पहला मैच 2-1 से जीता था। लेकिन ब्लास्टर्स अपने पिछले तीन मैचों में लगातार हार से निराश हैं और स्वीडिश हेड कोच मिकेल स्टाहरे से नाता तोड़ लिया। वे 2022-23 सत्र में मिली लगातार चार हार के अनचाहे आंकड़े से बचना चाहेंगे। केरला ब्लास्टर्स एफसी 12 मैचों में तीन जीत, दो ड्रा और सात हार से 11 अंक लेकर तालिका में

10वें स्थान पर है। मोहम्मडन स्पोर्टिंग के 11 मैचों में एक जीत, दो ड्रा और आठ हार से पांच अंक लेकर 13 टीमों की तालिका में सबसे निचले स्थान पर है। ब्लास्टर्स हमलों के लिए नौहा सदौई निर्भर नजर आते हैं, क्योंकि मोरोक्कन विंगर आठ गोल (चार गोल और चार असिस्ट) का योगदान देकर इस सीजन में उन्हें छह अंक दिला चुका है। केरला ब्लास्टर्स की लीग में सबसे कम बचाव दर (48.9%) है और उसने टारगेट पर 46 शॉट खाए हैं, जो डिफेंस में उनकी कमियों को उजागर करता है। मोहम्मडन स्पोर्टिंग अपने पिछले दो आईएसएल मैचों में गोल नहीं कर पाई है। उसने इस सीजन में कुल पांच गोल किए हैं। मोहम्मडन को अपनी डिफेंस को मजबूत करने की आवश्यकता है, क्योंकि उसने इस सीजन में 19 गोल खाए हैं। केरला ब्लास्टर्स एफसी के अंतरिम हेड कोच टी.जी. पुरुषोत्तमन अंक तालिका में मोहम्मडन एससी की स्थिति को लेकर ज्यादा नहीं सोच रहे हैं। उन्होंने कहा, हर टीम के अपने सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष होते हैं, और कोई भी टीम हमें मुश्किल में डाल सकती है। लिहाजा, हमें अपने घर पर अच्छा खेलना होगा। ब्लैक पैंथर्स के रूसी हेड कोच एंड्री चेर्निशोव ने अपने खिलाड़ियों का समर्थन किया और कहा कि वे क्लब के प्रति प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा, अपने खिलाड़ियों के साथ काम करना अच्छा है क्योंकि वे बहुत पेशेवर हैं।

# आधुनिक क्रिकेट में सीखते रहना जरूरी : सिद्दिकउल्लाह अटल

एजेंसी

नई दिल्ली। अफगानिस्तान के नए बल्लेबाजी सनसनी सिद्दिकउल्लाह अटल ने पिछले एसीसी इमर्जिंग एशिया कप में अपने प्रदर्शन को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपने सहज प्रवेश का आधार बताया।

सिद्दिकउल्लाह अटल के पहले वनडे शतक और अब्दुल मलिक (84) के साथ उनकी 191 रनों की ओपनिंग साझेदारी की बदौलत अफगानिस्तान ने जिम्बाब्वे के खिलाफ सीरीज में जीत दर्ज की। इस साझेदारी की बदौलत मेहमान टीम ने मुश्किल पिच पर बड़ा स्कोर खड़ा किया। इसके बाद उनकी गेंदबाजी इकाई ने बेहतरीन अनुशासित प्रयास किया, जिससे जिम्बाब्वे की टीम 54 रनों पर ढेर हो गई और अफगानी टीम ने 232 रनों से जीत दर्ज की। अक्टूबर 2024 में एसीसी इमर्जिंग एशिया कप के बाद से ही अटल ने खूब धमाल मचाया हुआ है, जहाँ वे अफगानिस्तान ए के लिए पाँच मैचों में

122.66 की शानदार बल्लेबाजी औसत और 145 की स्ट्राइक रेट से 368 रन बनाकर टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी बने। उनके शानदार प्रदर्शन ने अफगानिस्तान ए की खिताबी जीत में अहम भूमिका निभाई। जिम्बाब्वे के खिलाफ दूसरे वनडे के बाद अटल ने क्रिकबज़ से कहा, ''इमर्जिंग एशिया कप का खिताब जीतना अफगानिस्तान क्रिकेट के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी। टूर्नामेंट के शीर्ष स्कोरर के रूप में, मुझे बहुत आत्मविश्वास मिला, यह महसूस करते हुए कि मेरे पास हर स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की क्षमता है। उन्होंने कहा, ''यह नया विश्वास (एसीसी इमर्जिंग कप में अफगानिस्तान ए के लिए उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के बाद) राष्ट्रीय टीम के साथ मेरे निरंतर प्रदर्शन में सहायक रहा है। अपने अंतरराष्ट्रीय करियर की मजबूत शुरुआत करने के बाद, अटल ने आत्मसंतुष्टि से बचने के महत्व पर जोर दिया। बाएं हाथ का यह खिलाड़ी लगातार अपने खेल में सुधार करने और अपने कौशल को विकसित करने के साथ-साथ फिटनेस पर भी कड़ी मेहनत कर रहा है। अटल ने कहा कि क्रिकेट लगातार विकसित हो रहा है और आधुनिक क्रिकेट में सीखते रहना जरूरी है। मैं अंतरराष्ट्रीय मंच पर शारीरिक, मानसिक और तकनीकी क्षमताओं के साथ खुद को एक अच्छे पैकेज के रूप में स्थापित करने के लिए लगातार अपनी फिटनेस और कौशल को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करता हूं। यह मेरा पहला शतक है और मैं खुश हूं। इससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि मेरा परिवार, खासकर मेरी मां, मेरी प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत हैं। जब भी मैं अच्छा प्रदर्शन करता हूं, तो मैं अपनी सफलता उन्हें समर्पित करता हूं, क्योंकि उनकी खुशी मेरे लिए दुनिया से बढ़कर है। एकदिवसीय श्रृंखला का समापन 21 दिसंबर को हरारे स्पोर्ट्स क्लब में होने वाले अंतिम एकदिवसीय मैच के साथ होगा। इसके बाद, दोनों टीमें 26 दिसंबर से बुलावायो में शुरू होने वाली दो मैचों की टेस्ट श्रृंखला में आमने-सामने होंगी।

## संक्षिप्त समाचार

### आस्ट्रेलियाई टीम से बाहर होने पर टूट चुके हैं मैकस्वीनी

**मेलबर्न।** आस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज नाथन मैकस्वीनी ने स्वीकार किया कि वह भारत के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के आखिरी दो मैचों के लिये टीम में जगह नहीं मिलने से टूट चुके हैं लेकिन उन्होंने कड़ी मेहनत करके दोबारा टीम में जगह बनाने का वादा भी किया। मैकस्वीनी को बाहर करके युवा सैम कोंटास को टीम में जगह दी गई है। मैकस्वीनी ने चैनल 7 से कहा ,'' हां मैं टूट चुका हूं। आस्ट्रेलिया के लिये खेलने का मेरा सपना सच हुआ लेकिन उस तरह से नहीं, जैसे मैं चाहता था। उन्होंने कहा कि लेकिन खेल में ऐसा होता है। मैं कड़ी मेहनत करके अगले मौके के लिये खुद को तैयार करूंगा। 25 वर्ष के मैकस्वीनी ने पर्थ में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया लेकिन पिछली छह पारियों में उनका स्कोर 10, 0, 39, नाबाद 10, 9 और 4 रहा। उन्हें श्रृंखला में चार बार भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने आउट किया। मैकस्वीनी ने कहा कि क्रिकेट में ऐसा ही है। मौका मिलने पर अच्छा नहीं खेलते हैं तो आपकी जगह सुरक्षित नहीं है। मैं चूक गया लेकिन अब फिर मेहनत करके टीम में दोबारा जगह बनाऊंगा। आस्ट्रेलिया के महान बल्लेबाज माइक हस्सी ने मैकस्वीनी से हमदर्दी जताते हुए फॉक्स क्रिकेट से कहा कि मुझे उसके लिये दुख हो रहा है। यह बहुत कठिन फैसला था।

### वनडे श्रृंखला से पहले सुरक्षा इंतजामात का जायजा लेने न्यूजीलैंड क्रिकेट का दल पाकिस्तान में

**कराची।** न्यूजीलैंड क्रिकेट ने जनवरी में होने वाली त्रिकोणीय श्रृंखला से पहले सुरक्षा और अन्य इंतजामात का जायजा लेने एक दल पाकिस्तान भेजा है। मेजबान पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के अलावा श्रृंखला में दक्षिण अफ्रीका भी भाग लेगी। पाकिस्तान में फरवरी मार्च में आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी होनी है। न्यूजीलैंड के दल में सुरक्षा विशेषज्ञ रेग डिकासन और न्यूजीलैंड खिलाड़ियों के संघ के प्रतिनिधि ब्राड रोडेन हैं जो कराची और लाहौर में सुरक्षा इंतजामों और अन्य तैयारियों का जायजा लेने पहुंचे हैं।

### भारत दो महिला अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल मैत्री मैचों के लिए करेगा मालदीव की मेजबानी

**नई दिल्ली।** भारतीय महिला फुटबॉल टीम दो फीफा अंतरराष्ट्रीय मैत्री मैचों के लिए मालदीव की मेजबानी करेगी। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने शुक्रवार को उक्त घोषणा की। भारत का सामना 30 दिसंबर और 2 जनवरी को बेंगलुरु के पादुकोण-द्रविड़ सेंटर फॉर स्पोर्ट्स एक्सीलेंस में मालदीव से होगा। मैच भारतीय समयानुसार दोपहर 3:30 बजे शुरू होंगे। 13 दिसंबर को जारी नवीनतम फीफा रैंकिंग के अनुसार, भारत 69वें स्थान पर है, जबकि मालदीव 163वें स्थान पर है। ब्लू टाइग्रेसेस ने आखिरी बार अक्टूबर में सैफ महिला चैंपियनशिप में मैच खेला था।

# दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज ओटनील बार्टमैन पाकिस्तान के खिलाफ तीसरे वनडे से बाहर

एजेंसी

जोहानसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज ओटनील बार्टमैन दाएं घुटने की समस्या के कारण पाकिस्तान के खिलाफ तीसरे वनडे से बाहर हो गए हैं। केशव महाराज के बाद बार्टमैन दूसरे गेंदबाज हैं जो वनडे सीरीज़ में चोटिल हुए हैं और इस गर्मी में बाहर होने वाले छठे तेज गेंदबाज हैं। गेराल्ड कोएत्ज़ी, वियान मुल्डर, लुंगी एनगिडी, लिज़ाद विलियम्स और एनरिक नोर्टजे अन्य गेंदबाज हैं। टेस्ट टीम में पहली बार शामिल किए गए कॉर्बिन बॉश, वनडे टीम में बार्टमैन की जगह लेंगे और बॉक्सिंग डे पर पाकिस्तान के खिलाफ डेब्यू टेस्ट के लिए भी तैयार हैं। केपटाउन में गुरुवार को दूसरे वनडे से पहले गेंदबाजी करते समय बार्टमैन को रन अप के दौरान असहजता महसूस हुई। वह मैच-डे इलेवन का हिस्सा नहीं थे, लेकिन दो दिन पहले पार्ल में सीरीज

के पहले मैच में खेले थे। तब, उन्होंने सात ओवर फेंके और 37 रन देकर 2 विकेट लिए। बार्टमैन का अगला काम एसए20 है, जहां उनका अनुबंध सनराइजर्स ईस्टर्न केप से है। उनकी चोट से दक्षिण अफ्रीका की टेस्ट योजनाओं पर कोई असर नहीं पड़ना चाहिए, भले ही वे मुल्डर की फिटनेस का इंतजार कर रहे हों। मुल्डर ने पिछले महीने श्रीलंका के खिलाफ पहले टेस्ट में अपनी दाईं मध्यमा उंगली तोड़ दी थी, लेकिन उसने फिर से गेंदें मारना शुरू कर दिया है और गुरुवार को उसका स्कैन होना था। टेस्ट कोच शुकरी कॉनराड ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका मुल्डर की वापसी को लेकर रूढ़िवादी रवैया अपनाएगा, जिससे पता चलता है कि वह सुपरस्पोर्ट पार्क में पहले टेस्ट में शायद न खेल पाए। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ दक्षिण अफ्रीका पूरी गति से खेल सकता है, और कगिसो रबाडा, मार्को जेनसन, बॉश और डेन पैटरसन को खिला सकता है या 18 वर्षीय क्वेना मफाका को चुन सकता है, जिसने गुरुवार को अपना वनडे डेब्यू किया। उन्होंने मैच में 72 रन देकर 4 विकेट लिए, जिसे दक्षिण अफ्रीका ने 81 रन से गंवा दिया। पाकिस्तान ने पहले ही सीरीज जीत ली है, लेकिन दक्षिण अफ्रीका रविवार को वांडरर्स में पिंक डे पर अपनी प्रतिष्ठा बचाने की कोशिश करेगा। अगले साल चैंपियंस ट्रॉफी से पहले यह उनकी सबसे मजबूत उपलब्ध टीम के साथ उनका आखिरी वनडे होगा।

# दर युक्तिकरण पर मंत्रिसमूह ने जीएसटी परिषद को रिपोर्ट सौंपना टाला

एजेंसी

जैसलमेर। जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाने पर गठित मंत्रिसमूह (जीओएम) ने शनिवार को अपनी रिपोर्ट जीएसटी परिषद को सौंपना टाल दिया। समिति के संयोजक और बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने यह जानकारी देते हुए बताया कि रिपोर्ट में 148 वस्तुओं में दरों को युक्तिसंगत बनाने का सुझाव दिया गया था। चौधरी ने यहां संवाददाताओं से कहा, ह्लमाल एवं सेवा कर (जीएसटी) दरों को युक्तिसंगत बनाने पर मंत्रिसमूह (जीओएम) की रिपोर्ट परिषद की अगली बैठक में सौंपी जाएगी।ङ्क मंत्री समूह ने इसी महीने करीब 148 वस्तुओं पर कर दरों में फ़ेरबदल करने पर व्यापक सहमति बनाई थी, जिसमें 'हानिकारक' पेय पदार्थ और तंबाकू उत्पादों जैसी वस्तुओं पर वर्तमान 28 प्रतिशत की तुलना में 35 प्रतिशत अधिक कर लगाना शामिल है। व्यापक रूप से उम्मीद की जा रही थी कि मंत्रिसमूह शनिवार को जीएसटी परिषद की बैठक में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा। वर्तमान में, जीएसटी एक चार-स्तरीय कर संरचना है जिसमें पांच, 12, 18 और 28 प्रतिशत की स्लैब हैं। विलासिता और बुरी मानी जाने वाली वस्तुओं पर 28 प्रतिशत की उच्चतम दर से कर लगाया जाता है, जबकि डिब्बा बंद खाद्य पदार्थ और आवश्यक वस्तुओं पर सबसे कम पांच प्रतिशत की दर से कर लगाया जाता है। जीओएम ने परिधान पर कर दरों को युक्तिसंगत बनाने का प्रस्ताव करने का भी फैसला किया था। निर्णय के अनुसार, 1,500 रुपये तक की लागत वाले तैयार कपड़ों पर पांच प्रतिशत जीएसटी लगेगा, 1,500 रुपये से 10,000 रुपये के बीच के कपड़ों पर 18 प्रतिशत जीएसटी लगेगा। 10,000 रुपये से अधिक की लागत वाले कपड़ों पर 28 प्रतिशत कर लगेगा। वर्तमान में 1,000 रुपये तक के कपड़ों पर पांच प्रतिशत जीएसटी लगता है, जबकि इससे अधिक कीमत वाले कपड़ों पर 12 प्रतिशत जीएसटी लगता है।


## उत्तर रेलवे

### ई-ऑक्शन सूचना

वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबंधक, उत्तर रेलवे, लखनऊ के द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु ई–ऑक्शन आमंत्रित किया जाता है।

| | |
|---|---|
| एडमिन यूनिट/जोन | Lucknow-NR-Division-Commercial/Northern Railway |
| नीलामी सूची सं. | **PFM-Food-Van3** |
| कार्य का विवरण | Creation, operation and maintenance of Food Van (Serving Customers 24X7) at Phaphamau railway station over Lucknow Division for a period of 5 year, as per site plan attached. |
| नीलामी सूची प्रकाशन तिथि | 10.12.2024 |
| नीलामी प्रारम्भ तिथि (समस्त लॉट) | 26.12.2024 at 10:00 Hrs. |
| नीलामी बन्द करने की तिथि व समय | 26.12.2024 at 10:30 Hrs. |
| वेबसाइट विवरण जहाँ पंजीकृत बोलीदाताओं द्वारा नीलामी का पूरा विवरण देखा जा सकता है। | E-Auction Module of **www.ireps.gov.in** |
| **विशेष नोट :** In the above work license is responsible for arrangement of van (or similar) that to be converted into food van. Entire cost of procurement, conversion creation, operation and maintenance lie with the licensee to whom work is allotted. | |

3908/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ


# क्रिसमस पर अमेरिकी वॉलमार्ट स्टोर्स और वॉलमार्ट डॉट कॉम पर मिलेंगे भारतीय उत्पाद

एजेंसी

**इस हॉलीडे वॉलमार्ट स्टोर्स पर मिलेंगे शानदार सजावट के सामान, कपड़े, आभूषण, खिलौने**

नई दिल्ली। क्रिसमस एवं छुट्टियों का मौसम नजदीक आने के साथ ही वॉलमार्ट अपने हॉलिडे कलेक्शन को पेश करते हुए बहुत उत्साहित है। इसमें भारत के आपूर्तिकर्ताओं से प्राप्?त उच्च गुणवत्ता वाले मौसमी सजावट, रोज़मर्रा एवं पार्टी के कपड़े, सहायक उपकरण और उपहार शामिल हैं। ये समान अमेरिकी वॉलमार्ट स्टोरों, सैम क्लबों और वॉलमार्ट डॉट कॉम पर उपलब्ध है। वॉलमार्ट पर उपलब्ध इस संग्रह में त्योहारी घरेलू सजावट से लेकर स्टाइलिश ठंड के मौसम के सामान, शानदार आभूषण, मजेदार खिलौने और खेल के सामान से लेकर कई तरह के उत्पाद शामिल हैं। भारत से मंगाए गए ये उत्पाद वॉलमार्ट के हॉलिडे लाइनअप में विविधता और गुणवत्ता लाते हैं, जो उपहार देने या व्यक्तिगत छुट्टियों की खरीदारी के लिए एक आदर्श विकल्प सुनिश्चित करते हैं। वॉलमार्ट में सोर्सिंग के कार्यकारी उपाध्यक्ष एंड्रिया अलब्राइट ने कहा, ''वॉलमार्ट में हम इस छुट्टियों के मौसम में अपने अमेरिकी ग्राहकों के लिए प्रतिभाशाली भारतीय आपूर्तिकर्ताओं से उच्च गुणवत्ता वाले, त्यौहारी उत्पाद लाने पर गर्व महसूस करते हैं।'' यह अनूठी मेड-इन-इंडिया पेशकशें न केवल अमेरिका में हमारे हॉलिडे कलेक्शन में एक विशेष स्पर्श जोड़ती हैं, बल्कि भारतीय व्यवसायों का समर्थन करने और 2027 तक भारत से निर्यात को सालाना 10 अरब डॉलर तक बढ़ाने के हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने की हमारी प्रतिबद्धता को भी दर्शाती हैं। इस वर्ष वॉलमार्ट के हॉलिडे टाइम्स संग्रह में प्रसिद्ध आपूर्तिकर्ताओं की जीवंत सामग्रियों को प्रदर्शित किया गया है, जिसे घरों को सजाने के लिए तैयार किया गया है। हस्तनिर्मित

आभूषण, जिसमें एएल पेपर द्वारा अपसाइकल किए गए सूती कपड़ों के वेस्ट से बने कागज क्रिसमस ट्री शामिल हैं। कनोडिया ग्लोबल द्वारा बुने हुए क्रिसमस स्टॉकिंग्स भी इसमें शामिल हैं। संग्रह में शानदार घरेलू साज-सज्जा के समान भी शामिल है, जिसमें सावा इंटरनेशनल के कुशन और तकिए, अवंती ओवरसीज के आलीशान खिलौने, और डिज़ाइनको, दीवान एंड संस और स्पेशलाइज्ड क्रिएशन्स की लकड़ी और धातु की सजावट वाले सामान शामिल है। वॉलमार्ट की हॉलिडे फैशन लाइनअप में रोज़मर्रा और पार्टी में पहनने के लिए बेहतरीन कपड़े उपलब्ध हैं, जो उपहार देने या व्यक्तिगत हॉलिडे स्टाइल के लिए एकदम सही हैं। हाइलाइट्स में शामिल हैं। वॉलमार्ट के निजी लेबल जॉर्ज के तहत पुरुषों के लिए लंबी आस्तीन वाली थर्मल क्रू शर्ट, ओवरशर्ट और छोटी आस्तीन वाली बुनी हुई शर्ट। शाही एक्सपोर्ट द्वारा तैयार फ्री असेंबली लेबल के तहत महिलाओं के लिए बुने हुए टॉप और ड्रेस। गोकलदास एक्सपोर्ट द्वारा महिलाओं के लिए बुने हुए जैकेट, जो फ्री असेंबली ब्रांड के तहत भी बेचे जाते हैं। वॉलमार्ट के टेरा एंड स्काई ब्रांड के तहत प्लस-साइज़ बुने हुए स्कर्ट और ड्रेस( टाइम एंड टू ब्रांड के तहत शाही एक्सपोर्ट और गोकलदास एक्सपोर्ट की प्लेड शर्ट और ड्रेस। चमक जोड़ने के लिए, वॉलमार्ट की ब्रिलिएंस फाइन ज्वेलरी रेंज में एलिगेंट और इंटरगोल्ड से प्राप्त हीरे की बालियां, अंगूठियां और टेनिस ब्रेसलेट उपलब्ध हैं, जो उपहार देने या हॉलिडे लुक को पूरा करने के लिए एकदम सही हैं। इस छुट्टियों के मौसम में वॉलमार्ट के टीवी एक्सेसरीज़ के चयन के साथ पारिवारिक मूवी नाइट्स को बेहतर बनाएं। वॉलमार्ट के ओएनएन ब्रांड के तहत रेडिश के टिल्टिंग, स्विवेलिंग और फुल-मोशन वॉल माउंट का आनंद उठाएं। ये मूवी और गेमिंग नाइट्स अनुभव को और बेहतर बनाते हैं। वॉलमार्ट का खिलौना संग्रह सभी उम्र के लोगों को मनोरंजन प्रदान करता है।

# नौसेना को मिले अत्याधुनिक हथियारों और सेंसर से लैस ‘सूरत’ और ‘नीलगिरी’ जहाज

एजेंसी



नई दिल्ली। देश के आत्मनिर्भर होने की यात्रा में एक और ऐतिहासिक दिन जुड़ गया, जब भारतीय नौसेना को एक साथ दो युद्धपोत सौंपे गए। इनमें एक विध्वंसक सूरत और दूसरा फ्रिगेट नीलगिरी हैं। इन जहाजों को भारतीय नौसेना के युद्धपोत डिजाइन ब्यूरो ने स्वदेशी रूप से डिजाइन और मझगांव डॉक लिमिटेड (एमडीएल) ने निर्मित किया है। दो अत्याधुनिक युद्धपोतों के एक साथ समुद्री बेड़े में शामिल होने से भारतीय नौसेना की परिचालन और युद्ध क्षमता बढ़ेगी।

नौसेना को मिला जहाज ‘सूरत’ प्रोजेक्ट 15बी स्टील्थ गाइडेड मिसाइल विध्वंसक का चौथा और अंतिम है। इससे पहले पिछले तीन वर्षों में इसी प्रोजेक्ट के तीन जहाजों विशाखापत्तनम, मोरमुगाओ और इम्फाल को नौसेना के बेड़े में शामिल किया जा चुका है। सूरत की डिलीवरी भारतीय नौसेना की स्वदेशी विध्वंसक निर्माण परियोजना का समापन है। इस परियोजना की शुरुआत 2021 में हुई थी। कुल 7,400 टन वजन और 164 मीटर की लंबाई वाला निर्देशित मिसाइल विध्वंसक होने के नाते आईएनएस सूरत शक्तिशाली और बहुमुखी प्लेटफॉर्म है, जो सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों, जहाज रोधी मिसाइलों और टॉरपीडो सहित अत्याधुनिक हथियारों और सेंसर से लैस है। इसने अपने समुद्री परीक्षणों के दौरान 30 नॉट्स (56 किमी/घंटा) से अधिक की गति प्राप्त की है। यह स्वदेशी रूप से विकसित भारतीय नौसेना का पहला एआई सक्षम युद्धपोत है, जो इसकी परिचालन दक्षता को कई गुना बढ़ाएगा। नौसेना को सौंपा गया फ्रिगेट नीलगिरि प्रोजेक्ट 17ए स्टील्थ का पहला जहाज है। इस योजना के सात जहाज एमडीएल, मुंबई और जीआरएसई, कोलकाता में बनाए जा रहे हैं। ये बहु-मिशन फ्रिगेट भारत के समुद्री हितों के क्षेत्र में पारंपरिक और अपारंपरिक दोनों तरह के खतरों से ‘ब्लू वाटर’ में मुकाबला करने में सक्षम हैं। नए जहाजों को डीजल या गैस से संचालित किया जाता है। इन जहाजों में अत्याधुनिक एकीकृत प्लेटफ़ॉर्म प्रबंधन प्रणाली भी है। जहाजों में सुपरसोनिक सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल प्रणाली, मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली, 76 मिमी अपग्रेडेड गन और रैपिड फ़ायर क्लोज-इन हथियार प्रणालियों को लगाया गया है। नौसेना को 2047 तक आत्मनिर्भर बनाने को ध्यान में रखते हुए इन जहाजों में 75 फीसदी स्वदेशी सामग्री लगाई गई है। इन परियोजनाओं ने देश में आत्मनिर्भरता, आर्थिक विकास, रोजगार को बढ़ावा दिया है। इन युद्धपोतों में लगे प्रमुख हथियार और सेंसर स्वदेशी कंपनियों बीएपीएल, एलएंडटी, एमटीपीएफ, बीईएल, बीएचईएल, महिंद्रा आदि से हासिल किए गए हैं। इस वर्ग के शेष छह जहाज एमडीएल, मुंबई और जीआरएसई, कोलकाता में निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं। इन जहाजों के 2025 और 2026 में भारतीय नौसेना को सौंपे जाने की उम्मीद है।

# प्रधानमंत्री मोदी का कुवैत पहुंचने पर गर्मजोशी भरा स्वागत

एजेंसी




नई दिल्ली। कुवैत पहुंचने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का शनिवार को कुवैत के अमीर के साथ-साथ भारतीय प्रवासियों और कुवैती नागरिकों ने गर्मजोशी भरा स्वागत किया। प्रधानमंत्री मोदी ने यहां 101 वर्षीय पूर्व आईएफएस अधिकारी मंगल सेन हांडा और रामायण व महाभारत को अरबी भाषा में प्रकाशित करने वाले अब्दुल्लातीफ अलनेसेफ से भी मुलाकात की।

प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि कुवैत में उतरते ही गर्मजोशी से स्वागत किया गया। 43 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली यात्रा है और इससे निःस्संदेह विभिन्न क्षेत्रों में भारत-कुवैत मित्रता मजबूत होगी।

विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि एक नया अध्याय शुरू हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कुवैत में औपचारिक स्वागत किया गया। कुवैत के प्रथम उप प्रधानमंत्री शेख फहाद यूसुफ सऊद अल-सबा, कुवैत के विदेश मंत्री अब्दुल्ला अली अल-याह्या और कई अन्य मंत्रियों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने हवाई अड्डे पर उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कुवैत के एक होटल में भारतीय प्रवासियों से बातचीत की। प्रवासियों ने मोदी के सम्मान में दक्षिण भारतीय नृत्य का कार्यक्रम आयोजित किया। प्रवासी भारतीय समुदाय के साथ बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने 101 वर्षीय पूर्व आईएफएस अधिकारी मंगल सेन हांडा से भी मुलाकात की। मंगल सेन हांडा की पोती ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर मुलाकात की अपील की थी, जिसपर प्रधानमंत्री ने सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि वह भी मंगल सेन से मिलने को उत्सुक हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने रामायण और महाभारत को अरबी भाषा में प्रकाशित करने वाले अब्दुल्लातीफ अलनेसेफ और अनुवादक अब्दुल्ला बैरन से भी मुलाकात की।

## शाह के इस्तीफ़े की मांग को लेकर मुहिम तेज करेगी कांग्रेस, मनाएगी आंबेडकर सम्मान सप्ताह

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने शनिवार को कहा कि वह बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर के ‘अपमान’ के लिए गृह मंत्री अमित शाह के इस्तीफ़े की मांग को संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान जोर-शोर से उठाने के बाद अब सड़क पर उतरकर अपनी मुहिम तेज करेगी और आगामी सप्ताह को आंबेडकर सम्मान सप्ताह के रूप में मनाएगी। पार्टी के संगठन महासचिव के.सी. वेणुगोपाल ने कहा कि इस विषय पर पार्टी के सांसद और वरिष्ठ नेता 22 और 23 दिसंबर को देश के अलग अलग शहरों में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करेंगे तथा 24 दिसंबर को हर जिले में आंबेडकर सम्मान मार्च निकाला जाएगा। मुख्य विपक्षी दल बेलगावी में अगले सप्ताह प्रस्तावित कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में भी आंबेडकर के आदर्शों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराएगी। वेणुगोपाल ने एक्स पर पोस्ट किया, ‘गृह मंत्री अमित शाह के इस्तीफ़े की मांग को लेकर हमारा आंदोलन जारी रहेगा। हम मनुस्मृति पूजकों के खिलाफ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की विरासत की रक्षा के लिए लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस आगामी सप्ताह को डॉ. आंबेडकर सम्मान सप्ताह के रूप में मनाएगी। उन्होंने बताया कि सभी कांग्रेस सांसद, वरिष्ठ नेता और कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) के सदस्य 22-23 दिसंबर को देश भर में अपने निर्वाचन क्षेत्रों और गृह जिलों में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करेंगे। वेणुगोपाल का कहना था, ’24 दिसंबर को पूरे देश में हम बाबासाहेब आंबेडकर सम्मान मार्च निकालेंगे और अमित शाह के इस्तीफ़े की मांग करते हुए जिला कलेक्टरों के माध्यम से भारत के राष्ट्रपति को एक ज्ञापन सौंपेंगे। उन्होंने कहा, ‘सभी कांग्रेस कार्यकर्ता बाबासाहेब की प्रतिमा पर माल्यार्पण करेंगे, मार्च के दौरान बाबासाहेब के विशाल चित्र और हमारी प्रमुख मांगों को दर्शाने वाली तख्तियां लेकर चलेंगे। वेणुगोपाल के अनुसार, ’26-27 दिसंबर को हम बेलगावी में एक विस्तारित सीडब्ल्यूसी सत्र और एक विशाल रैली आयोजित करेंगे जहां आंबेडकर और उनके आदर्शों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता दोहराया जाएगा। कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने संवाददाताओं से कहा, ‘हमारे सभी सांसद और कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य 22 और 23 दिसंबर को 150 शहरों में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करेंगे।

# संयुक्त राष्ट्र ने मनाया पहला विश्व ध्यान दिवस

एजेंसी

न्यूयॉर्क। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन ने शुक्रवार को यहां संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में प्रथम विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर वैश्विक शांति और सद्भाव के लिए ध्यान का आयोजन किया।

इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष फिलेमोन यांग, अवर महासचिव अतुल खरे और कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर मुख्य उद्बोधन गुरुदेव श्री श्री रविशंकर ने दिया, जिन्होंने कार्यक्रम के दौरान 600 से अधिक उत्साही प्रतिभागियों के एक विशेष ध्यान सत्र का मार्गदर्शन भी किया।

संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि, राजदूत पार्वथानेनी हरीश ने अपने स्वागत भाषण में व्यक्तिगत पूर्णता और आंतरिक शांति के साधन के रूप में ध्यान की प्राचीन भारतीय परंपरा के महत्व को रेखांकित किया, जो वसुधैव कुटुम्बकम - पूरी दुनिया एक परिवार है - के सभ्यतागत सिद्धांत पर आधारित है। उन्होंने कहा कि विश्व ध्यान दिवस पर संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव ने स्वास्थ्य और कल्याण के पूरक दृष्टिकोण के रूप में योग और ध्यान के बीच संबंध को स्वीकार किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष ने कहा कि ध्यान लोगों के प्रति करुणा और सम्मान पैदा करता है। इस अवसर पर बोलते हुए, अवर महासचिव खरे ने मानसिक स्वास्थ्य और ध्यान के बीच अंतर्निहित संबंध और संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों पर ध्यान के गहन प्रभाव को रेखांकित किया। गुरुदेव श्री श्री रविशंकर ने अपने मुख्य भाषण में ध्यान से जुड़े कई लाभों और आयामों पर प्रकाश डाला। गौरतलब है कि बीते 06 दिसंबर को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सर्वसम्मति से 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस घोषित करने का प्रस्ताव पारित किया था। उक्त प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित कराने में भारत की अहम भूमिका रही है। ऐसे समय में इस प्रस्ताव को पारित करना शांति, सुकून और समग्र मानव कल्याण को बढ़ावा देने के महत्व को दर्शाता है, जब दुनिया संघर्ष और पीड़ा का सामना कर रही है। यह ध्यान की परिवर्तनकारी क्षमता की वैश्विक मान्यता में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार 21 दिसंबर को शीतकालीन संक्रांति होती है और भारतीय परंपरा में उत्तरायण की शुरुआत शीतकालीन संक्रांति से होती है और इसे वर्ष का सबसे शुभ समय माना जाता है, खास तौर पर ध्यान और आंतरिक चिंतन के लिए। यह 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के ठीक छह महीने बाद पड़ता है।

# ई-नाम पर 1389 कृषि मंडी पंजीकृत

एजेंसी

नयी दिल्ली। कृषि और बागवानी उपज के बेहतर विपणन के राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-नाम) योजना के ऑनलाइन प्लेटफार्म पर देशभर की 1389 मंडियों को जोड़ा जा चुका है। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार 31 अक्टूबर 2024 तक 23 राज्यों और चार केंद्रशासित प्रदेशों की 1389 मंडियों को ई-नाम प्लेटफॉर्म से जोड़ा गया है। ई-नाम प्लेटफॉर्म से अब तक 1.78 करोड़ किसान, 2.62 लाख व्यापारी और 4250 से अधिक किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) पंजीकृत हैं। ई-नाम प्लेटफॉर्म पर 3.79 लाख करोड़ रुपये मूल्य के कृषि उपज व्यापार दर्ज किए गए हैं। इस प्लेटफार्म पर प्रतिस्पर्धी ऑनलाइन बोली से किसानों के लिए उनकी उपज के मूल्य निर्धारण के लिए कृषि और बागवानी वस्तुओं का ऑनलाइन व्यापार किया जाता है। रिपोर्ट में बताया गया है कि ई-नाम प्लेटफॉर्म के तहत मंडियों की सम्बद्धता राज्य सरकारों और केंद्रशासित प्रदेशों से प्राप्त प्रस्तावों पर आधारित है। ई-नाम परिचालन दिशानिर्देशों के अनुसार आवश्यक बुनियादी ढांचे और तकनीकी आवश्यकताओं को पूरा करने पर मंडियों को इस प्लेटफॉर्म से सम्बद्ध किया जाता है। आंकड़ों के अनुसार ई-नाम प्लेटफॉर्म पर मंडियों की संख्या आंध्र प्रदेश में 33, असम में तीन, बिहार में 20, छत्तीसगढ में 20, गुजरात में 144, गोवा में सात,हरियाणा में 108, हिमाचल प्रदेश में 38, झारखंड में 19,कर्नाटक में पांच, केरल में छह, मध्य प्रदेश में 139, महाराष्ट्र में 133, नागालैंड में 19, ओडिशा में 66, पंजाब में 79, राजस्थान में 145, तमिलनाडु में 157 तेलंगाना में 57, त्रिपुरा में सात, उत्तर प्रदेश में 125, उत्तराखंड में 20 और पश्चिम बंगाल में 18 हैं। इनके अलावा अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह में एक,चंडीगढ़ में एक, जम्मू और कश्मीर में 17 और पुदुचेरी में दो मंडी ई नाम से जुड़ी है।

# पेज एक का शेष

## भ्रष्टाचारियों को...

जाहिर की। उन्होंने कहा कि गुजरे साल करीब 25000 से ज्यादा मौते सड़क हादसे में हुई हैं। इसमें 40 फीसदी मौते 18 से 40 वर्ष की उम्र के लोगों की हुई हैं। इसे रोकने के लिए यातायात के नियमों का पालन करें। ट्रॉमा सेंटर घायलों की जान बचाने में अहम भूमिका अदा कर रहा है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि काल का प्रवाह किसी का इंतजार नहीं करता। केजीएमयू की स्थापना के लिए उस समय की कई रियासतों ने इसके निर्माण में सहयोग किया है। आज देश के सबसे बड़े मेडिकल संस्थान के रूप में केजीएमयू एक अग्रणी चिकित्सा संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है। शासन की मंशा के अनुरूप 150 एकड़ के क्षेत्रफल में इसका दायरा होने जा रहा है। आज भारी भरकम फौज है। किसी व्यक्ति या संस्थान की पहचान संकट के समय होती है। सामान्य दिनों में तो सब लोग काम करते हैं, संकट के समय लोग मैदान छोड़कर भागते हुए दिखाई देते हैं। कई नई – नई सेवाएं यहां शुरू हुई हैं। वर्तमान के साथ–साथ भविष्य को देखते हुए भी अपनी तैयारी चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि डबल इंजन की सरकार में भ्रष्टाचार पर प्रहार किया है। समय से अगर कोई भी कार्ययोजना शासन के पास पहुंचती है तो उसे पास किया जाता है। मरीज को उपचार के लिए पैसे की कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि मोदी ने देश को 2027 तक ?विकसित भारत बनाने का लक्ष्य लिया है। मेडिकल एजुकेशन व स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में एक मानक तय करें। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह, प्रमुख सचिव चिकित्सा शिक्षा पार्थ सारथी सेन शर्मा व केजीएमयू की कुलपति प्रो. सोनिया नित्यानंद उपस्थित रहीं।

## सफलता की नई ...

पत्र वितरित करने के अलावा राष्ट्रीय आजीविका मिशन से जुड़ी 7405 महिला स्वयं सहायता समूहों को 242.30 करोड़ रुपये की सहायता राशि का हस्तांतरण भी किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आधी आबादी की उपेक्षा करके कोई भी समाज सशक्त और समर्थ नहीं हो सकता है। देश और समाज के विकास तथा इसे सशक्त और शक्तिशाली बनाने के लिए महिला सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन की दिशा में कार्य करना ही होगा। उन्होंने महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि सफलता की सभी जय जयकार करते हैं और विफलता को दुत्कारते हैं। जन्म सफलता के लिए हुआ है, दुत्कारने के लिए नहीं। जब हम सही दिशा में अच्छा कार्य करेंगे तो सफलता के साथ सराहना भी मिलेगी। इसलिए सही दिशा में बढ़ें और कभी असफलता मिले तो उसकी समीक्षा कर कमियों को दूर करें। याद रखना होगा कि परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता है। सही दिशा में किए गए परिश्रम से ही सफलतम कहानियां लिखीं जाती हैं। सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा और मार्गदर्शन में महिला सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन यानी नारी सशक्तिकरण का नया दौर शुरू हुआ है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना हो, नारी वंदन, या फिर प्रदेश में मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना व मातृ वंदना योजना, ये सभी महिला सशक्तिकरण के लिए ही हैं। पहली बार स्वतंत्र भारत मे महिलाओं को यह अनुभव हुआ कि उनके नाम पर योजनाएं बनी हैं और इसका लाभ भी उन्हें प्राप्त हो रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन के तहत हर घर बने शौचालय नारी गरिमा के प्रतीक हैं तो मुफ्त रसोई गैस कनेक्शन नारी सम्मान और समर्थ नारी का अभियान। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बताया कि आगामी 27 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उत्तर प्रदेश के 40 लाख परिवारों को पीएम स्वामित्व योजना के तहत घरौनी प्रमाण पत्र वितरित करेंगे। उन्होंने बताया कि इसके पहले प्रदेश के 60 लाख परिवारों को घरौनी प्रमाण पत्र दिया जा चुका है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने आज लोकार्पित श्री बाबा गोरखनाथ दुग्ध उत्पादक संस्था से जुड़ी महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए खास तौर पर प्रेरित किया। सीएम योगी ने इसके लिए बुंदेलखंड की बलिनी मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनी का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि 2019 में बुंदलेखंड जैसे सूखे क्षेत्र में बलिनी मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनी को सिर्फ पांच महिलाओं ने शुरू किया था। आज इसके 71 हजार शेयरहोल्डर हैं और इसके जरिये प्रतिदिन 2.5 लाख लीटर दूध का कलेक्शन होता है। इस कम्पनी ने 1225 करोड़ रुपये का टर्नओवर करके 24 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री बाबा गोरखनाथ मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनी तो पूर्वांचल के हरियाली जैसे क्षेत्र में है। अभी इसके 12926 शेयरहोल्डर हैं और प्रतिदिन 33 हजार लीटर दूध का कलेक्शन हो रहा है। मेहनत करें, शेयरहोल्डर बढ़ाएं, लोगों को पशुपालन के लिए प्रेरित करें, गांव-गांव दुग्ध संग्रह समितियां बनाएं। ऐसा करेंगे तो श्री बाबा गोरखनाथ मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनी का सामर्थ्य प्रतिदिन 3 लाख लीटर दूध के कलेक्शन का होगा। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर एनआरएलएम की मिशन निदेशक को निर्देशित कि श्री बाबा गोरखनाथ मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनी से जुड़ी महिलाओं को बलिनी का दौरा कराकर प्रशिक्षण दिलाया जाए। उन्होंने कहा कि श्री बाबा गोरखनाथ मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनी महिलाओं के स्वावलंबन की दिशा में अद्भुत कार्य कर सकती है। सीएम ने बताया कि वाराणसी में गठित काशी मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनी में 30 हजार शेयरहोल्डर हैं तथा यहां प्रतिदिन 1 लाख लीटर दूध का कलेक्शन हो रहा है। इसके साथ ही आगरा की सामर्थ्य मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनी 3 लाख लीटर दूध का संग्रह कर उत्कृष्ट कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि श्री बाबा गोरखनाथ मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनी के अलावा गीडा में शुरू होने जा रही रेडीमेड गारमेंट की फ्लैटेड फैक्ट्री में भी महिलाएं आत्मनिर्भर बनेंगी। उन्होंने कहा कि स्वयं सहायता समूह की महिलाएं प्रशिक्षण लेकर फ्लैटेड फैक्ट्री में कपड़ा सिलाई का काम कर सकती हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आजीविका मिशन के तहत गठित स्वयं सहायता समूह की महिलाएं उत्कृष्ट कार्य कर स्वावलंबन की नई कथा लिख रही हैं। उन्होंने कहा कि ड्रोन का प्रशिक्षण लेकर नमो ड्रोन दीदी खेतों में एक दिन में होने वाले कीटनाशक छिड़काव का काम एक घण्टे में कर दे रही हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में 204 ब्लॉकों में पुष्टाहार का उत्पादन टेक होम राशन प्लांट लगाकर समूह की महिलाओं द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि समूहों को और आगे बढ़ाने के लिए आज गोरखपुर मंडल में 186 ग्राम संगठनों को 1.39 करोड़ रुपये, 1146 समूहों को 3.44 करोड़ रुपये का रिवॉल्विंग फंड, 1530 समूहों को 22.95 करोड़ रुपये की सामुदायिक निवेश निधि, 3270 समूहों को 196 करोड़ रुपये की सीसीएल क्रेडिट लिंकेज, 557 ग्राम संगठनों को 8.34 करोड़ रुपये आपदा निवारण निधि, छह इंटीग्रेटेड फार्मिंग क्लस्टर को 30 लाख रुपये तथा प्रेरणा कैफ़े के लिए 8 लाख रुपये की धनराशि स्वीकृत और वितरित की गई है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद रविकिशन शुक्ल ने कहा कि महिला भी सपना देखती है और उसके सपनों की हत्या नहीं होनी चाहिए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महिलाओं के सपनों को हकीकत में बदलने के लिए हर तरह का प्रोत्साहन दे रहे हैं। वह आधी आबादी के सपनों में हकीकत का रंग भर रहे हैं। रविकिशन ने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और स्वालंबन पीएम मोदी और सीएम योगी की प्राथमिकता है। मुफ्त आवास योजना हो, हर घर शौचालय या फिर स्वावलंबन की अनेक योजनाएं, सबके केंद्र में महिलाएं ही हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की निदेशक दीपा रंजन ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में आजीविका मिशन में साढ़े आठ लाख समूहों से प्रदेश की 96 लाख महिलाएं आत्मनिर्भरता की राह पर हैं। 40 हजार महिलाएं बीसी सखी के रूप में तथा 24 हजार महिलाएं विद्युत सखियों के रूप में महत्वपूर्ण सेवा कार्य कर रही हैं। महिलाएं टेक होम राशन प्लांट चलाने के साथ राशन की दुकानों का भी सफल संचालन कर रही हैं। महिलाओं द्वारा संचालित बलिनी मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनी की सफलता को देखकर सीएम योगी के निर्देश पर तीन अन्य दुग्ध कम्पनियों को स्थापित किया गया है। इस अवसर पर महापौर डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव, एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह, विधायक विपिन सिंह, प्रदीप शुक्ल, सरवन निषाद, राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष चारू चौधरी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कार्यक्रम स्थल पर राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन और राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़े समूहों के विभिन्न स्टालों का अवलोकन कर उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों और उनकी उपलब्धियों की जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने स्टालों पर मौजूद महिलाओं के कार्यों की सराहना कर उनका उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ये स्टाल महिला सशक्तिकरण की सफल कहानियों को आगे बढ़ा रहे हैं। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने योगिराज बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह परिसर से 10 प्रेरणा वाहनों (ई रिक्शा) को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इन प्रेरणा वाहनों का संचालन स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा किया जाएगा। इसके साथ ही सीएम योगी ने श्री बाबा गोरखनाथ कृपा दुग्ध उत्पादक संस्था के मिल्क वैन को भी हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम स्थल पर मुख्यमंत्री ने कृषि कार्य हेतु ड्रोन संचालन का प्रशिक्षण प्राप्त महिलाओं (नमो ड्रोन दीदी) के व्यावहारिक कार्यों का भी अवलोकन किया। उनके समक्ष महिलाओं ने ड्रोन उड़ाकर दिखाया। महिलाओं के कौशल और उनके आत्मविश्वास को देख मुख्यमंत्री काफी खुश हुए और उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम के दौरान गोरखपुर की महिला समूह वनशक्ति प्रेरणा के दो एमओयू मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के समक्ष हुए। इस समूह का एक एमओयू ओएनडीसी और दूसरा एवरेस्ट फूड कोर्ट वाराणसी के साथ हुआ। इस अवसर पर सीएम ने विद्युत सखी सुनीता देवी, महिमा गुप्ता, लखपति दीदी रीना देवी, संगीता, संध्या, मंजू, शशिप्रभा, विमला, नमो ड्रोन दीदी बबिता पासवान, कुंती देवी और बैंक सखी साक्षी मिश्रा को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में मंच पर मुख्यमंत्री ने सीसीएल लिंकेज के अंतर्गत गोरखपुर की महिला समूह को 70 करोड़ 44 लाख रुपये, देवरिया की समूह को 55 करोड़ 80 लाख, महराजगंज की समूह को 69 करोड़ 86 लाख तथा कुशीनगर की समूह को 40 करोड़ 10 लाख रुपये का प्रतीकात्मक चेक सौंपा।

## इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड...

दुरुपयोग को रोकने के लिए नियम में संशोधन किया गया है। सूत्र ने बताया कि आयोग का मानना है कि सीसीटीवी फुटेज साझा करने से विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर, नक्सल प्रभावित क्षेत्रों जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में गंभीर परिणाम हो सकते हैं, जहां गोपनीयता महत्वपूर्ण है। मतदाताओं की जान भी जोखिम में पड़ सकती है। सभी चुनाव कागजात और दस्तावेज अन्यथा सार्वजनिक निरीक्षण के लिए उपलब्ध हैं। एजेंसी के मुताबिक चुनाव आयोग के एक पूर्व अधिकारी ने बताया, ''चुनाव नियमों के तहत मतदान केंद्रों की सीसीटीवी कवरेज, वेबकास्टिंग नहीं की जाती है, बल्कि यह चुनाव आयोग द्वारा समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए कदमों का परिणाम है। चुनाव आयोग के एक पदाधिकारी ने कहा, ''ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जहां नियमों का हवाला देते हुए ऐसे इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड मांगे गए हैं। संशोधन यह सुनिश्चित करता है कि नियमों में उल्लिखित कागजात ही सार्वजनिक निरीक्षण के लिए उपलब्ध हों और कोई अन्य दस्तावेज जिसका नियमों में कोई संदर्भ नहीं है, उसे सार्वजनिक निरीक्षण की अनुमति नहीं है।

## संभल में दूसरे...

मोहल्ला कोट पूर्वी स्थित शिव मंदिर का ऋषिकेश कूप, मोहल्ला कोट पूर्वी में कल्कि मंदिर के पास स्थित परासर कूप, संभल कोतवाली के सामने मोहल्ला ठेर स्थित अकर्ममोचन कूप, मोहल्ला कोट गर्वी जामा मस्जिद चौकी के पास स्थित धरणि बाराह कूप, होज भदेसरा स्थित भद्रका आश्रम तीर्थ, जलालपुर मोहम्मदाबाद गांव स्थित स्वर्गदीप तीर्थ सती मठ, ग्राम जलालपुर मोहम्मदाबाद स्थित चक्रपाणि तीर्थ, मोहल्ला कोट गर्वी में एक रात वाली मस्जिद स्थित प्राचीन कूप, मोहल्ला कोट गर्वी में जामा मस्जिद परिसर स्थित प्राचीन कूप, मोहल्ला चमन सराय स्थित बाल विद्या मंदिर के सामने प्राचीन कूप, मोहल्ला खग्गू सराय न्यारियों वाली मस्जिद स्थित प्राचीन कूप, मोहल्ला कोट पूर्वी स्थित गद्दियों वाला प्राचीन कूप, मोहल्ला कोट पूर्वी में सेठों वाली गली में स्थित प्राचीन कूप, मोहल्ला डूंगर सराय स्थित एजेंटी चौराहे के पास प्राचीन मंदिर एवं मोहल्ला खग्गू सराय स्थित कूप के अलावा प्राचीन तीर्थ, शमशान, मंदिर का एएसआई टीम द्वारा सर्वे किया गया था।

## ‘किसी प्रधानमंत्री...

कुवैत में इतना बड़ा हादसा हुआ- जो अग्निकांड हुआ, इसमें अनेक भारतीयों ने अपना जीवन खोया, जब मुझे ये खबर मिली तो काफी चिंता हुई, लेकिन उस समय कुवैत सरकार ने जैसा सहयोग किया वो भाई ही कर सकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आने वाले दशकों में हम अपनी समृद्धि के बड़े पार्टनर बनेंगे, हमारे लक्ष्य अलग नहीं है, कुवैत के लोग न्यू कुवैत के निर्माण में जुटे हैं, भारत के लोग भी भारत को 2047 तक विकसित देश बनाने में जुटे हैं। भारत में दुनिया के स्किल कैपिटल बनने का सामर्थ्य है। ऐसे में भारत दुनिया की स्किल डिमांड को पूरा करने का सामर्थ्य रखता है, भारत दुनिया की जरूरतों को देखते हुए अपने युवाओं की स्किल डवलप कर रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि दुनियाभर के देश भारत के लिए दरवाजे खोल रहे हैं। कुवैत में भी आप सभी को भारत के प्रयासों से बहुत फायदा होने वाला है। हम दुनिया में कहीं भी रहें, उस देश का सम्मान करते हैं। आप सभी भारत से यहां आए, यहां रहे लेकिन भारतीयता को आपने अपने दिल में संजोकर रखा है। कौन भारतीय होगा जिसे मंगलयान की सफलता पर गर्व नहीं होगा, कौन भारतीय होगा जिसे चंद्रयान की चंद्रमा पर लैंडिंग की खुशी नहीं हुई होगी? आज का भारत एक नए मिजाज के साथ आगे बढ़ रहा है, आज भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी इकोनॉमी है। आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप ईकोसिस्टम भारत में है। आज भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल निर्माता देश है। कुवैत सिटी में पीएम मोदी ने कहा कि आज छोटे-छोटे गांव में भी डिजिटल का प्रयोग हो रहा है, आज डिजिटल लग्जरी नहीं, जीवन में शामिल हो गया है। डॉक्यूमेंट्स रखने के लिए लोगों के पास डिजीलॉकर है। टोल पर समय बचाने के लिए फास्टैग है, भारत डिजिटली स्मार्ट हो रहा है, अभी तो ये शुरुआत ह, भविष्य का भारत दुनिया को दिशा दिखाएगा, दुनिया के विकास का हब होगा, दुनिया का ग्रोथ इंजन होगा, वो दिन दूर नहीं जब भारत दुनिया का ग्रीन एनर्जी, फार्मा, इलेक्ट्रोनिक, सेमीकंडक्टर, कॉमर्शियल हब होगा। दुनिया के बड़े इकोनॉमिक सेंटर भारत में होंगे।

## यूपी बोर्ड: ड्यूटी के...

में दर्ज करें। जो शिक्षक छोड़ने एवं दिवंगत हो चुके शिक्षकों का ब्योरा पोर्टल से हटा दें। ताकि समय पर बोर्ड की ओर शिक्षकों की ड्यूटिजां लगायी जा सकें।

## महाकुम्भ समेत पूरे...

किया जाएगा। साइबर क्लब के माध्यम से कार्यशालाएं और रचनात्मक सत्र जैसे पोस्टर बनाना, स्लोगन/लघु कहानियां लिखना, सोशल मीडिया हेतु क्रिएटिव एवं वीडियो कंटेंट बनाना इत्यादि गतिविधियां कराई जाएंगी। डिजिटल वॉरियर का चयन करना : डिजिटल वॉरियर के रूप में केवल ऐसे व्यक्ति शामिल किए जाएंगे, जिनकी छवि स्वच्छ हो और जो विवादास्पद या नकारात्मक गतिविधियों में शामिल न हों। इस कार्य मे इच्छुक उत्तर प्रदेश के बाहर के सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स को भी सम्मिलित किया जा सकता है। ऐसे समस्त डिजिटल वॉरियर को परिपत्र के साथ संलग्न फ़ॉर्म को भरकर देना होगा, जिसका गूगल लिंक भी उपलब्ध कराया जा रहा है। स्वैच्छिक सहयोग और उपक्रम (अंडरटेकिंग) लिया जाना : डिजिटल वॉरियर को चयनित करने से पूर्व उनसे संलग्न फॉर्म के माध्यम से लिखित उपक्रम लिया जाएगा, जिसमें वे यह आश्वस्त करेंगे कि वह पुलिस का सहयोग कर फ़ेक न्यूज़ का खंडन करेंगे, किसी भी प्रकार की फ़ेक न्यूज़ का प्रसार नहीं करेंगे, किसी भी साइबर अपराध में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सम्मिलित नहीं होंगे, किसी विवादास्पद सामग्री को पोस्ट नहीं करेंगे और भारतीय कानून के अधीन रहकर कार्य करेंगे। यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि उनका सहयोग स्वैच्छिक होगा और उनकी सहमति के आधार पर होगा।

# मुख्यमंत्री ने दिल्ली मार्ग पर बसों की उपलब्धता बनाए रखने के दिए निर्देश

कैनविज टाइम्स संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में ग्रैप-4 (ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान) पॉलिसी लागू होने के कारण, दिल्ली में वाहनों के प्रवेश में आ रही दिक्कतों को देखते हुए उत्तराखंड परिवहन निगम को इस रूट पर सार्वजनिक परिवहन सेवाएं सुचारू रखने के निर्देश दिए हैं। इसके बाद परिवहन निगम, बसों का फ़ेरा बढ़ाने के साथ ही नई खरीदी गई बसों का संचालन करते हुए यात्रियों को हर तरह की सेवाएं देने का प्रयास कर रहा है। अपर सचिव परिवहन, नरेंद्र कुमार जोशी ने बताया कि उत्तराखण्ड परिवहन निगम की बीएस-3 एवं बीएस-4 बसों के नई दिल्ली में प्रवेश के रोक के दृष्टिगत उत्तराखंड परिवहन निगम ने

**मुख्यमंत्री के निर्देश के बाद परिवहन निगम अलर्ट मोड पर कर रहा है बसों का प्रबंधन**

मुख्यमंत्री के निर्देश के क्रम में कई कदम उठाए हैं। वर्तमान में उत्तराखंड परिवहन निगम के पास 185 सीएनजी बसें उपलब्ध हैं, जिन्हें दिल्ली मार्ग पर संचालित किया जा रहा है।साथ ही बीएस 6 मॉडल की 12 वोल्वो बसों के फ़ेरे बढ़ाते हुए, रिशिड्यूलिंग के जरिए दिल्ली मार्ग पर संचालित किया जा रहा है। इसके अलावा निगम द्वारा हाल में खरीदी गई बीएस-6 माडल की 130 डीजल बसों को भी प्रदेश के विभिन्न स्टेशनों से दिल्ली मार्ग पर संचालित

भी यदि किसी स्टेशन विशेष पर दिल्ली के यात्रियों की संख्या बढ़ती है तो तत्काल अतिरिक्त बसें संचालित किये जाने के निर्देश दिये गये हैं। उन्होंने बताया कि जो बसें दिल्ली में प्रवेश नहीं कर पा रही हैं, उनको यात्रियों की आवश्यकता के अनुसार मोहननगर व कौशाम्बी (उत्तर प्रदेश) तक दिल्ली बॉर्डर पर पहुंचाया जा रहा है। बॉर्डर से दिल्ली के अंदर यात्रियों को ले जाने के लिए डीटीसी की बसों के प्रयोग के लिए भी दिल्ली सड़क परिवहन से समन्वय बनाया जा रहा है। साथ ही उत्तराखंड के सभी डिपोज एवं सभी अधिकारियों को अलर्ट मोड पर रखा गया है। उत्तराखंड परिवहन निगम का प्रयास है कि यात्री को उत्तराखंड से दिल्ली आवागमन में कोई भी कठिनाई न हो। यात्रियों के आवागमन की स्थिति पूर्णतया सामान्य है।

# मुख्यमंत्री धामी से मिले जनप्रतिनिधि, समस्याओं के त्वरित समाधान के दिए निर्देश

कैनविज टाइम्स संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से शनिवार को मुख्यमंत्री आवास पर जनप्रतिनिधियों और प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोगों ने भेंट की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने उनकी समस्याओं को सुना और संबंधित अधिकारियों को उनके त्वरित समाधान के लिए आवश्यक निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार के लिए जनता की समस्याओं का समाधान करना प्राथमिकता है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि वे सभी जन समस्याओं पर गहरी निगाह रखें और उनका शीघ्र समाधान करें। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि हर जिले में नियमित रूप से जन सुनवाई की प्रक्रिया को प्रभावी तरीके से लागू किया जाए। मुख्यमंत्री ने जिलाधिकारियों को निर्देश दिए कि वे नियमित रूप से जन समस्याओं की सुनवाई करें और नागरिकों को तत्काल राहत प्रदान करें। उन्होंने कहा कि जनता के प्रति हमारी जिम्मेदारी है कि उनकी समस्याओं का त्वरित और प्रभावी समाधान किया जाए। भेंट के दौरान मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि राज्य सरकार विभिन्न विकास योजनाओं और योजनाओं के माध्यम से आम जनता की सेवा में निरंतर लगी हुई है। सभी सरकारी विभागों को जनता के बीच पहुंचने और उनकी समस्याओं का हल निकालने के लिए निर्देशित किया गया है।

## संक्षिप्त समाचार

### चार साहिबजादों की शहादत पर झांकी में दिखी वीरगाथा, देशभक्ति और धर्म की रक्षा का संदेश

**हल्द्वानी।** सिख फ़ेडरेशन हल्द्वानी ने गुरु गोविंद सिंह के चार साहिबजादों की शहादत को याद करते हुए नैनीताल रोड स्थित वॉक वे मॉल में एक विशेष झांकी का आयोजन किया। झांकी के माध्यम से 1704 में गुरु गोबिंद सिंह के परिवार द्वारा धर्म और देश की रक्षा के लिए दिए गए महान बलिदान को दर्शाया गया। सिख फ़ेडरेशन के सदस्यों ने बताया कि 21 दिसंबर 1704 को गुरु गोबिंद सिंह का परिवार अलग हो गया था और 28 दिसंबर तक चार साहिबजादों ने अपनी जान धर्म की रक्षा में कुर्बान कर दी। इस झांकी का उद्देश्य समाज को यह प्रेरणा देना है कि धर्म और देश के लिए गुरु परिवार की कुर्बानी अनमोल है। सिख फ़ेडरेशन ने कहा कि आज की पीढ़ी को गुरु गोबिंद सिंह जी के बताए मार्ग पर चलते हुए देश और धर्म की रक्षा के लिए तत्पर रहना चाहिए। मासूम साहिबजादों की बलिदान की गाथा हमें निडरता और समर्पण का पाठ सिखाती है। इस मौके पर अमनप्रीत सिंह कोहली, जसतरन सिंह कीर, मनमीत गुजराल, विक्की नरूला, जस्सी चढ़ा, मोनू कपूर, गगनदीप कोहली, गुरुप्रीत सिंह प्रिंस, सुखविंदर सिंह आदि उपस्थित थे।

### मसूरी में नियमों की अनदेखी पर बड़ी कार्रवाई नगर स्वास्थ्य अधिकारी कार्यमुक्त

**देहरादून।** उत्तराखंड की राजधानी देहरादून प्रशासन ने मसूरी में नियमों की अनदेखी पर सख्त रुख अपनाते हुए नगर स्वास्थ्य अधिकारी को उनके मूल पद पर वापस भेज दिया है। जिलाधिकारी सविन बंसल के निर्देश पर यह कार्रवाई की गई, जो उनकी विवादास्पद कार्यप्रणाली और जनशिकायतों के चलते अनिवार्य मानी जा रही थी। मसूरी में तैनात नगर स्वास्थ्य अधिकारी की कार्यशैली पर कई बार सवाल उठाए गए थे। दरअसल, नगर पालिका परिषद मसूरी में नगर स्वास्थ्य अधिकारी का कोई भी पद सृजित न होने और नगर पालिका की ओर से कोई मांग न किए जाने के बावजूद मुख्य चिकित्साधिकारी देहरादून ने चिकित्सक डॉ. आभाष सिंह को सम्बद्ध कर दिया था। नगर स्वास्थ्य अधिकारी वर्ष 2021 से मसूरी नगर पालिका परिषद में बिना पद सृजन और बिना किसी वैधानिक अनुमति के तैनात थे। उनके खिलाफ लगातार प्रश्नात्मक कार्यप्रणाली और जनमानस को परेशान करने की शिकायतें सामने आ रही थीं। अधिकारी पर निकाय चुनाव के दौरान कार्य विभाजन में बाधा डालने के आरोप थे। मसूरी के प्रशासक और उपजिलाधिकारी ने भी उनके कार्य करने के तरीके पर सवाल उठाए थे।जिलाधिकारी सविन बंसल ने स्पष्ट किया कि अनधिकृत तैनाती न केवल प्रशासनिक प्रक्रियाओं का उल्लंघन है, बल्कि इससे जनहित के कार्य प्रभावित होते हैं। जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी को आदेश दिया है कि अधिकारी को तीन दिनों के भीतर उनके मूल पद पर योगदान देने के लिए कहा जाए। इसे सेवा व्यवधान मानते हुए सेवा पुस्तिका में दर्ज किया जाएगा। अधिकारी का वेतन अग्रिम आदेशों तक रोक दिया जाएगा।

### रेडक्रॉस सोसाइटी की नई कार्यकारिणी के लिए फरवरी में होंगे चुनाव

**गोपेश्वर।** चमोली जिला रेडक्रॉस सोसाइटी की नई कार्यकारिणी के गठन के लिए आगामी फरवरी में चुनाव आयोजित किए जाएंगे। यह निर्णय शनिवार को कलेक्ट्रेट सभागार में मुख्य विकास अधिकारी (सीडीओ) नंदन कुमार की अध्यक्षता में हुई जिला रेडक्रॉस सोसाइटी प्रबंधन समिति की बैठक में लिया गया। बैठक में सोसाइटी के आय-व्यय, सदस्यों की सूची और अन्य कार्यों पर गहन चर्चा हुई। सीडीओ नंदन कुमार ने बैठक में सदस्य सचिव द्वारा रेडक्रॉस सोसाइटी के आय-व्यय और सदस्यों की सटीक जानकारी न प्रस्तुत करने पर नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी सदस्यों की सूची तैयार कर फरवरी तक चुनाव की प्रक्रिया पूरी की जाए। यह भी सुनिश्चित किया जाए कि सभी आजीवन सदस्यों को चुनाव की जानकारी मिले, ताकि कार्यकारिणी का गठन पूरी पारदर्शिता के साथ हो। बैठक में रेडक्रॉस कार्यालय के लिए कंप्यूटर, प्रिंटर, फर्नीचर और क्लर्क की कमी पर चर्चा की गई। सीडीओ ने सामग्री खरीद के लिए प्रस्ताव तैयार करने और एनएचएम के माध्यम से कार्मिक उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। साथ ही, स्वयंसेवकों और मास्टर ट्रेनरों की संख्या बढ़ाने और अधिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने की योजना पर जोर दिया गया। रेडक्रॉस सोसाइटी में 1082 आजीवन सदस्य हैं और पिछले वर्ष 62 नए सदस्य जुड़े हैं। बैठक में सदस्यता अभियान तेज करने और सोसाइटी की धनराशि, जो लगभग 14 लाख है, के प्रभावी उपयोग की चर्चा की गई। बैठक में अपर जिलाधिकारी विवेक प्रकाश, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. अभिषेक गुप्ता, जिला शिक्षाधिकारी श्रीकांत पुरोहित, जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी एनके जोशी, चेयरमैन भगत सिंह बिष्ट, सदस्य सचिव दलवीर सिंह बिष्ट, राज्य प्रतिनिधि ओम प्रकाश भट्ट और रेडक्रॉस प्रशिक्षक राजेंद्र सिंह कंडारी आदि उपस्थित थे।

### सफ़ेद चादर में लिपटा उत्तराखंड, पहाड़ों की सर्द रातों में अलाव और राहत का सहारा

**देहरादून।** उत्तराखंड के पहाड़ अपनी खूबसूरती के लिए जितने मशहूर हैं, ठंड में यहां जीवन उतना ही चुनौतीपूर्ण हो जाता है। भारी बर्फबारी और शीतलहर ने राज्य के जनजीवन को प्रभावित कर दिया है। राज्य के कई जिलों में न्यूनतम तापमान 4लए तक गिर गया है। जबकि ऊंचाई वाले क्षेत्रों में यह शून्य से नीचे पहुंच गया है। तापमान में भारी गिरावट के साथ-साथ कई क्षेत्रों में मार्ग अवरुद्ध हो गए हैं, जिससे सामान्य गतिविधियां बाधित हो रही हैं। देहरादून, मसूरी, चकराता और रुद्रप्रयाग जैसे जिलों में बर्फबारी के चलते प्रशासन ने राहत कार्यों में तेजी लाई है। भारी बर्फबारी के कारण देहरादून-मसूरी मार्ग और चकराता जैसे इलाकों में यातायात बाधित है। सड़कें खोलने के लिए युद्धस्तर पर कार्य किए जा रहे हैं। रुद्रप्रयाग और अन्य ऊंचाई वाले क्षेत्रों में आपदा प्रबंधन टीमों को सक्रिय रूप से तैनात किया गया है। राहत कार्यों के तहत 810 लोगों को रैन बसेरों में आश्रय दिया गया। इनमें से 752 लोग देहरादून में शरण लिए हुए हैं। साथ ही 99 स्थानों पर अलाव जलाए गए हैं और जरूरतमंदों को कंबल वितरण का कार्य प्राथमिकता से किया जा रहा है। रुद्रप्रयाग जिले में शीतलहर के प्रकोप से बचाव के लिए जिला प्रशासन ने 100 से अधिक प्रवासी मजदूरों और गरीब परिवारों को गर्म कंबल प्रदान किए गए। इसके अलावा ठंड से प्रभावित क्षेत्रों में खाद्य सामग्री और अन्य आवश्यक वस्तुएं भी वितरित की गईं। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि शीतलहर के दौरान अनावश्यक यात्रा से बचें।मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि उत्तराखंड जैसे पहाड़ी राज्य में ठंड और बर्फबारी हर साल चुनौती लेकर आती है, लेकिन हमारी सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि किसी भी नागरिक को आवश्यक सुविधाओं की कमी न हो।

# उत्तराखंड दिखा रहा है देश के हरे भविष्य की तस्वीर, वन और वृक्षावरण में किया 85 वर्ग किमी का इजाफा : भूपेंद्र यादव

कैनविज टाइम्स संवाददाता

देहरादून। केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने शनिवार को कहा कि उत्तराखंड ने वनीकरण और पर्यावरणीय प्रबंधन में उल्लेखनीय प्रगति की है। इस पहाड़ी राज्य ने वर्ष 2021 की तुलना में 85 वर्ग किमी वन और वृक्षावरण का इजाफा किया है। इस वृद्धि में जलवायु परिवर्तन से निपटने और पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने की प्रतिबद्धता झलकती है। उन्होंने यह जानकारी आज यहां वन अनुसंधान संस्थान(एफआरआई), देहरादून में आयोजित कार्यक्रम में 'भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2023' को जारी करने के अवसर पर दी। केंद्रीय मंत्री यादव ने कहा कि उत्तराखंड ने 'भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2023' में अपनी स्थिति को और मजबूत किया है। यह देश के हरे भविष्य की तस्वीर दिखा रहा है। राज्य की सरकार, स्थानीय समुदाय और पर्यावरण प्रेमियों के सामूहिक प्रयासों ने यह सुनिश्चित किया है कि उत्तराखंड न केवल अपनी हरित संपदा को बनाए रखे, बल्कि इसे आने वाले वर्षों में और भी बेहतर बनाए। इसमें उत्तराखंड की पर्यावरण संरक्षण और हरित प्रयासों की सशक्त भूमिका को दिखाया गया है। इस रिपोर्ट के अनुसार उत्तराखंड ने वनीकरण और पर्यावरणीय प्रबंधन में उल्लेखनीय प्रगति की है। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि राज्य में कुल वनावरण 24,295 वर्ग किमी है, जो राज्य के भौगोलिक क्षेत्र का 45.44% है। वृक्षावरण में भी राज्य ने सराहनीय प्रदर्शन किया है, जो स्थानीय जैव विविधता और ग्रामीण जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। वन और वृक्षावरण में वृद्धि वर्ष 2021 की तुलना में उत्तराखंड में 85 वर्ग किमी वन और वृक्षावरण का इजाफा हुआ है। इस वृद्धि में जलवायु परिवर्तन से निपटने और पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने की प्रतिबद्धता झलकती है। उन्होंने बताया कि बांस क्षेत्र उत्तराखंड में बांस क्षेत्र का विस्तार पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण आजीविका में सहायक हो रहा है। हालांकि मैंग्रोव राज्य का प्राथमिक क्षेत्र नहीं है, लेकिन राज्य ने मैदानी क्षेत्रों में वनीकरण और वृक्षारोपण पर ध्यान केंद्रित किया है। कार्बन स्टॉक में भी उत्तराखंड के वनों ने राष्ट्रीय कार्बन स्टॉक में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राज्य का कार्बन स्टॉक राष्ट्रीय आंकड़ों में एक प्रमुख घटक है, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने में मदद मिलती है। 2021 की तुलना में, राज्य ने कार्बन स्टॉक में 5.4 मिलियन टन का इजाफा किया है। उत्तराखंड में वन और वृक्षावरण की स्थिति- कुल वनावरण और वृक्षावरण : उत्तराखंड में कुल वनावरण 24,295 वर्ग किमी है, जो राज्य के भौगोलिक क्षेत्र का 45.44 फीसद है। वृक्षावरण में भी राज्य ने सराहनीय प्रदर्शन किया है, जो स्थानीय जैव विविधता और ग्रामीण जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। वन और वृक्षावरण में वृद्धि : 2021 की तुलना में उत्तराखंड में 85 वर्ग किमी वन और वृक्षावरण का इजाफा हुआ है। इस वृद्धि में जलवायु परिवर्तन से निपटने और पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने की प्रतिबद्धता झलकती है।संवेदनशील और संरक्षित क्षेत्र : राज्य में राजाजी नेशनल पार्क, कार्बेट नेशनल पार्क और नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व जैसे संरक्षित क्षेत्र वनावरण को बनाए रखने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। मैंग्रोव और बांस में योगदान- बांस क्षेत्र : उत्तराखंड में बांस क्षेत्र का विस्तार पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण आजीविका में सहायक हो रहा है।मैंग्रोव संरक्षणः हालांकि मैंग्रोव राज्य का प्राथमिक क्षेत्र नहीं है, लेकिन राज्य ने मैदानी क्षेत्रों में वनीकरण और वृक्षारोपण पर ध्यान केंद्रित किया है।

## पंजाब कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एचएस हंसपाल का निधन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

चंडीगढ़। पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष एवं पंजाब एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी (पेडा) के चेयरमैन एच.एस. हंसपाल का शनिवार को निधन हो गया। हंसपाल सामान्य जांच के लिए दिल्ली स्थित मैक्स अस्पताल में भर्ती थे, जहां दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार 24 दिसंबर को दिल्ली में ही किया जाएगा। हंसपाल के निधन से नामधारी संप्रदाय में शोक की लहर है। हंसपाल वर्ष 1970 से नामधारी दरबार अंतरराष्ट्रीय संस्था के अध्यक्ष पद के रूप में सेवाएं दे रहे थे। वह कुछ समय पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष रहे तथा राज्यसभा के सांसद भी बने। वर्ष 2022 में हंसपाल कांग्रेस छोड़कर आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए थे। पंजाब में आआपा की सरकार आने के बाद उन्हें पेडा का चेयरमैन बनाया गया था। उनके निधन पर पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान समेत कई नेताओं ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

# उत्तराखंड : चारधाम के श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए हर कदम पर पुलिस का पहरा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

देहरादून। शीतकालीन चारधाम यात्रा को लेकर उत्तराखंड पुलिस ने सुरक्षा और यात्रा व्यवस्था को सुगम बनाने के लिए अपनी तैयारियों को तेज कर दिया है। पुलिस और प्रशासन ने संभावित चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए रणनीति तैयार की है। इसके तहत अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती, संवेदनशील इलाकों की पहचान और यात्रियों की सुविधा के लिए विशेष प्रबंध किए जा रहे हैं। आईजी गढ़वाल रेंज राजीव स्वरूप ने बताया कि शीतकालीन यात्रा के दौरान बर्फबारी के कारण पहाड़ी क्षेत्रों में मार्ग अवरुद्ध होने की संभावना रहती है। इस स्थिति से निपटने के लिए संवेदनशील स्थानों को चिह्नित किया जा रहा है और वहां पर्याप्त पुलिस बल और

**बर्फबारी और ठंड की चुनौतियों के बीच यात्रा होगी सुरक्षित**

राहत सामग्री की व्यवस्था की जा रही है। संवेदनशील इलाकों पर खास नजरउत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में मौसम की अनिश्चितता और बर्फबारी यात्रा के मार्ग में प्रमुख बाधा बन सकती है। इसे ध्यान में रखते हुए पुलिस ने ऐसे स्थानों की पहचान शुरू कर दी है जहां यात्री अक्सर फंस जाते हैं या सड़कें बंद हो जाती हैं। संवेदनशील इलाकों में आपदा प्रबंधन और पुलिस की टीमें हर समय तैयार रहेंगी। फंसे हुए यात्रियों को तत्काल सहायता प्रदान करने के लिए हर 10-15 किमी पर राहत केंद्र स्थापित किए जाएंगे। अतिरिक्त पुलिस बल की तैनातीशीतकालीन यात्रा के सुचारू संचालन के लिए गढ़वाल मंडल में अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती की जाएगी। पुलिस कर्मियों को विशेष रूप से यात्री सहायता और आपदा प्रबंधन में प्रशिक्षित किया जा रहा है। पहाड़ी सड़कों पर यातायात को सुगम बनाने के लिए पुलिस कर्मियों को तैनात किया जाएगा। चारधाम मंदिर परिसर और अन्य धार्मिक स्थलों पर भीड़ प्रबंधन और सुरक्षा के लिए विशेष टीम तैनात होगी। चुनौतियां और समाधानआईजी गढ़वाल रेंज राजीव स्वरूप ने बताया कि शीतकालीन यात्रा के दौरान बर्फबारी और मार्ग अवरोध जैसी चुनौतियां हमेशा रहती हैं। इनसे निपटने के लिए हमने संवेदनशील स्थानों की पहचान की है।

# पंजाब में गुरदासपुर के बंगा वडाला पुलिस स्टेशन पर ग्रेनेड हमला, आतंकी संगठन बब्बर खालसा ने ली जिम्मेदारी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

चंडीगढ़। खालिस्तान समर्थक आतंकी संगठन बब्बर खालसा इंटरनेशनल ने पुलिस को चुनौती देते हुए गुरदासपुर जिले के बंगा वडाला गांव के पुलिस स्टेशन पर ग्रेनेड हमला किया है। जिले के कलानौर क्षेत्र में पिछले 48 घंटों में यह दूसरा ग्रेनेड हमला है। 28 दिनों में पंजाब में आठ बार ग्रेनेड फेंके जा चुके हैं। बंगा वडाला गांव में आधी रात हुए धमाके की आवाज सुनकर ग्रामीणों में हड़कंप मच गया। लोग घरों से बाहर निकले तो पता चला कि पुलिस थाने पर ग्रेनेड फेंका गया है। सूचना मिलते ही वरिष्ठ पुलिस अधिकारी पहुंचे । रात भर पुलिस जांच करती रही। फिलहाल फॉरेंसिक जांच चल रही है। दो दिन पहले ही खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स ने कलानौर पुलिस पोस्ट पर हमला किया था। बंगा वडाला में शुक्रवार रात किए गए ग्रेनेड हमले की जिम्मेदारी आज सुबह खालिस्तान समर्थक संगठन बब्बर खालसा इंटरनेशनल ने ली है। इस पर अभी तक पुलिस ने कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी है।

# अखाड़ा परिषद की गरिमा पर सवाल, बाबा हठयोगी ने संपत्तियों पर गड़बड़ी और राजनीति का लगाया आरोप

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के पूर्व प्रवक्ता बाबा बलराम दास हठयोगी ने अखाड़ा परिषद की संपत्तियों में गड़बड़ी और निजी स्वार्थ में संत समाज की सर्वोच्च संस्था को राजनीति का शिकार बनाने का गंभीर आरोप लगाया है। उन्होंने दोनों अखाड़ा परिषद अध्यक्षों को कानूनी नोटिस भेजते हुए 15 दिनों के भीतर जवाब मांगा है, अन्यथा उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाने की चेतावनी दी है। संत समाज की छवि धूमिलबाबा हठयोगी ने हरिद्वार में पत्रकार वार्ता के दौरान कहा कि अखाड़ा परिषद की संपत्तियों को सस्ते स्टांप पर बेचा जा रहा है, और उन पर फ्लैट, होटल, एवं अन्य व्यावसायिक गतिविधियां चलाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि इन संपत्तियों से प्राप्त धनराशि का कोई पारदर्शी हिसाब नहीं है, और इसका दुरुपयोग हो रहा है। हरिद्वार कुंभ में अनियमितताओं का आरोपउन्होंने आरोप लगाया कि हरिद्वार कुंभ में अखाड़ों को सरकार से मिली धनराशि का जनहित में कोई उपयोग नहीं हुआ। सरकारी धन के खर्च का ब्यौरा भी नहीं दिया गया। बाबा हठयोगी ने कहा कि पूर्व में स्टांप चोरी और फ्लैट बेचने के मामले में नोटिस भी जारी हुए थे, लेकिन प्रभावशाली लोगों के कारण इन्हें ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। भूमाफिया और राजनीति का हस्तक्षेपबाबा हठयोगी ने कहा कि अखाड़ों में भूमाफिया, राजनेताओं और ठेकेदारों का अनुचित हस्तक्षेप बढ़ रहा है, जिससे संत समाज की गरिमा और अखाड़ा परिषद की मर्यादा को नुकसान हो रहा है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सराहना करते हुए कहा कि प्रयागराज कुंभ में धनराशि देने के दबाव के बावजूद उन्होंने यह धनराशि नहीं दी, जो अखाड़ों की पारदर्शिता पर सवाल उठाने के लिए पर्याप्त है। पुनर्गठन की मांगउन्होंने अखाड़ा परिषद के पुनर्गठन की मांग करते हुए कहा कि परिषद को अपने मूल उद्देश्यों की ओर लौटना होगा। बाबा हठयोगी ने समाज और संतों से आह्वान किया कि वे एकजुट होकर संत परंपरा और अखाड़ा परिषद की गरिमा की रक्षा करें। अध्यक्षों को नोटिसबाबा हठयोगी ने दोनों गुटों के अध्यक्षों को नोटिस जारी करते हुए स्पष्ट किया कि यदि 15 दिनों के भीतर संतोषजनक जवाब नहीं मिला तो वह इस मामले को उच्च न्यायालय तक ले जाएंगे। उन्होंने कहा कि अखाड़ा परिषद को साझा मंच के रूप में पुनः स्थापित करना समय की मांग है। विवाद का बढ़ता दायरागौरतलब है कि वर्तमान में अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के दो गुट और दो अध्यक्ष हैं, जो संत समाज में एकता की कमी को दर्शाता है।

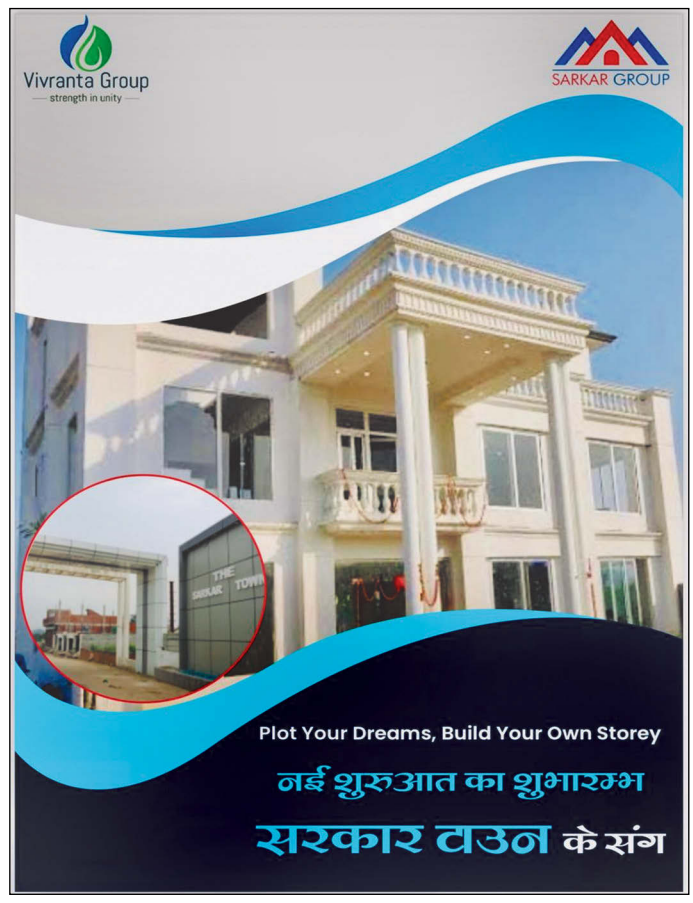


चेयरमैन एवं प्रधान सम्पादक - राकेश कुमार पाण्डेय कार्यकारी सम्पादक* - अरशद सईद खान स्टेट हेड - संदीप मिश्रा

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार पाण्डेय द्वारा सरस्वती प्रिंटर्स वाटर वर्क्स रोड ऐशबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं सी-46, कृष टॉवर, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ, पिन-226010 से प्रकाशित। * इस अंक में प्रकाशित सभी समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के तहत उत्तरदायी।

समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय क्षेत्र के ही अधीन होंगे। फोन नं। 0522-4249333 फैक्स नं.- 4249333 e-mail : info@kanwhizztimes.com RNI NO - UPHIN/2012/42063